आलोचना

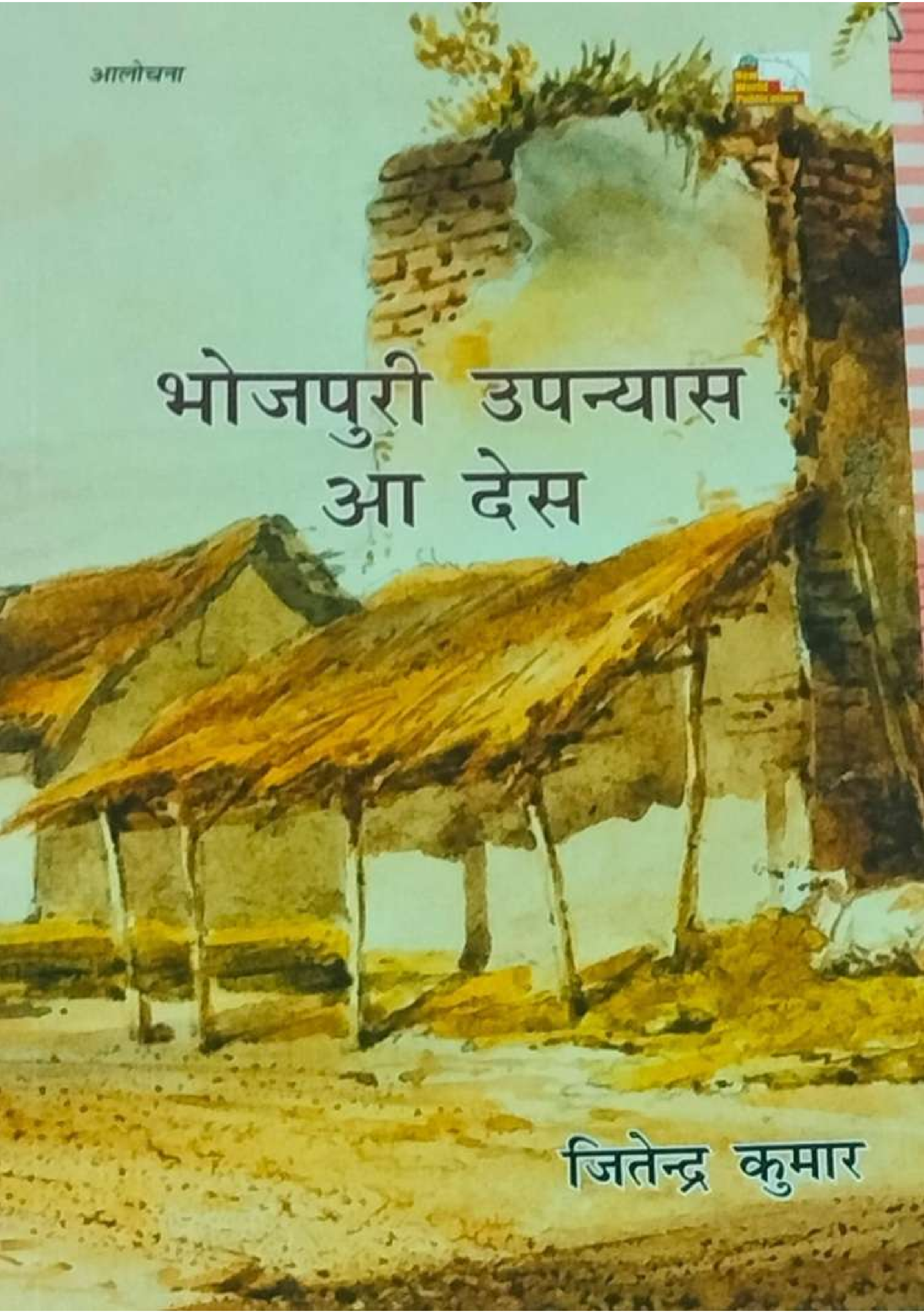

भोजपुरी उपन्यास आ देस

जितेन्द्र कुमार

भोजपुरी उपन्यास आ देस

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी उपन्यास आ देस

जितेन्द्र कुमार

New World Publication

www.bhojpurisahityangan.com

© लेखकाधीन
प्रकाशक : न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन
C-515, बुद्ध नगर, इंद्रपुरी, नई दिल्ली-110012
मो. : 8750688053
ईमेल : newworldpublication14@gmail.com
प्रथम संस्करण : 2025
मूल्य : 225 रुपये
मुद्रक : सूरज प्रिंटर्स, दिल्ली (110032)

BHOJPURI UPANYASAA DES
by JITENDRA KUMAR

www.bhojpurisahityangan.com

समर्पण

साहित्यानुरागियों के लिए

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

उपन्यास के वैश्विक परिदृश्य आ भोजपुरी उपन्यास

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 27वाँ अधिवेशन 16-17 दिसम्बर, 2023 के तुलसी भवन, विष्टुपुर जमशेदपुर में शानदार ढंग से सम्पन्न हो गइल। एह अधिवेशन के एगो विशेषता रहल कि भोजपुरी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में दू गो उल्लेखनीय संगोष्ठी सफलतापूर्वक आयोजित भइल। संगोष्ठी के विषय रहे- 'विश्व पटल पर भोजपुरी'। एह संगोष्ठी के अध्यक्षता कइनीं मॉरीशस के भोजपुरी साहित्य मनीषी डॉ. सरिता बुधु। विमर्शक नेपाल के दू गो भोजपुरी साहित्यकार डॉ. गोपाल ठाकुर आ गोपाल 'अश्क'। एह संगोष्ठी के शानदार मंच संचालन कइलन ओजस्वी युवा गीतकार श्री मनोज भावुक। संगोष्ठी- 2 के विषय रहे- 'उपन्यास' के वैश्विक परिदृश्य आ भोजपुरी उपन्यास जे एह आलेख के विषय बा। एह संगोष्ठी के अध्यक्षता कइलीं श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना)। एह संगोष्ठी के विमर्शक रहीं भोजपुरी के वरिष्ठ आ प्रसिद्ध साहित्यकार श्री कन्हैया सिंह 'सदय' जी आ विद्वान कथाकार सह-आलोचक डॉ. विष्णुदेव तिवारी। विषय प्रवर्तन के जिम्मा एह आलेख के लेखक जितेन्द्र कुमार के रहे।

हम मंचासीन रहलीं। संगोष्ठी के विषय के फलक बहुत विस्तृत रहे। साथी विमर्शक आ अध्यक्षीय भाषण के रेकॉर्ड करे के ध्यान न रहल। भाषण

www.bhojpurisahityangan.com

के नोट करे के हमरा लगे समय ना रहे। मंच संचालन करत रहीं जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय (नई दिल्ली) के युवा हिंदी अनुवादक सह प्रशासनिक अनुभाग प्रभारी डॉ. राजेश कुमार मांझी। डॉ. मांझी भी शायद संक्षिप्त नोट ना ले सकलीं। एह से स्मरण के आधार पर हम लिख रहल बानीं।

एह आलेख के शीर्षक में दू गो भाग स्पष्ट बा- 1. उपन्यास के वैश्विक परिदृश्य, आ 2. भोजपुरी उपन्यास। खुद भारते में 22 गो भाषा के संवैधानिक मान्यता प्राप्त बा, जवनन में उपन्यास विधा के प्रचुर सृजन लगातार हो रहल बा। भोजपुरी भाषा संविधान के आठवीं अनुसूची में दर्ज नइखे, बाकी भोजपुरी में गुणवत्तापूर्ण उपन्यास के सृजन हो रहल बा। भोजपुरी उपन्यासन के अन्य भारतीय तथा विदेशी उपन्यासन के दशा-दिशा के साथ बराबर तुलनात्मक अध्ययन होखे के चाहीं। एह तरह के तुलनात्मक विमर्श बहुत प्रेरणादायक होई।

हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक देवी शंकर अवस्थी (15.04.1930- 13. 01.1966) के कथन बा कि ''साहित्यिक रूपों में उपन्यास को सामान्यत: यथार्थ का सबसे सशक्त वाहक माना जाता है।'' (देवी शंकर अवस्थी: संकलित निबंध)। गोपाल राय के अनुसार, ''उपन्यास को सामान्य कथा से अलग करने वाला प्रमुख तत्व 'यथार्थ' के प्रति आग्रह है, जो कथा के कल्पित संसार कथ्य और भाषा में दिखाई देता है।'' उपन्यास प्रर्याप्त आकार के ऊ मौलिक गद्यकथा ह जे पाठक के एगो काल्पनिक झांकी अइसन यथार्थ संसार में ले जाला जे लेखक द्वारा व्यक्तिगत रूप से अनुभूत आ सर्जित होखे के कारण नवीन होला। जवना बिंदु पर वैयक्तिक रागबोध आ सामाजिक इतिहास मिलेला, ओहिजे से उपन्यास के जनम होला। अगर सामाजिक सचाई के विराटता ना अपनावल जाई त ऊ आत्मपरक आख्यान बनि के रहि जाई।

भोजपुरी उपन्यास लेखन के प्रारंभ बहुत शानदार बा। रामनाथ पाण्डेय जी के भोजपुरी के पहिला उपन्यासकार होखे के गौरव प्राप्त बा। ऊहाँ के 'बिंदिया' सन् 1956 ई. में प्रकाशित भइल। 'बिंदिया' के कथानक, रचना वस्तु आ कथ अपना समय के अतिक्रमण करत बा। उपन्यास के मुख्य पात्र बिंदिया अपना बियाह के मामला में पितृसत्ता के सफल प्रतिरोध करत

www.bhojpurisahityangan.com

बिया। इहाँ ई उधृत कइल समीचीन होई कि सन् 1955 में भारतीय संसद हिन्दू कोडबिल पास कइलक जवना में हिन्दू विवाह अधिनियम समाहित बा। भोजपुरी के दूसरका उपन्यास ''थरुहट के बउआ आ बहुरिया'' आवे में छव बरिस (1962) लाग गइल (राम प्रसाद राय कृत ई उपन्यास थारू जाति के सामाजिक जीवन पर आधारित बा)। भोजपुरी उपन्यास लिखे के गति बहुत धीमा रहे। सन् 1975 तक मात्र तेरह गो भोजपुरी उपन्यास प्रकाशित भइल। आजादी के बाद हिंदी के राष्ट्रीय फलक पर महत्व मिल गइल। भोजपुरिया क्षेत्र में जनमल मनीषी जेकर माई भाषा भोजपुरी रहे ऊहो हिंदी का ओर प्रवृत हो गइल। वोह में जे माई भाषा में सृजन करे के संकल्प लिहलक, ऊ निश्चित रूप से उल्लेखनीय आ आदरणीय बा।

सन् 1947 से सन् 1975 तक भारतीय राष्ट्रीय फलक पर पाँच गो ऐतिहासिक घटना घटल- 1. भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आ उपमहाद्वीप के त्रासद विभाजन, 2. सन् 1962 में भारत-चीन युद्ध, 3. सन् 1965 के भारत पाकिस्तान युद्ध, 4. सन् 1971 में भारत-पाक युद्ध आ बांग्लादेश के निर्माण, 5. सन् 1975 में आपातकाल की घोषणा। एह में भूदान आंदोलन आ नक्सलवादी आंदोलन के उत्थान पतन के भी इयाद कइल जा सकत बा। ई सामाजिक शोध के विषय बा कि एह विषयन के इर्द-गिर्द भोजपुरी उपन्यास ना लिखाइल काहे? सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध पर आधारित डॉ. विवेकी राय के एक मात्र भोजपुरी उपन्यास 'अमंगलहारी' सन् 1998 में आइल। एह उपन्यास के मुख्य किरदार अवकाश प्राप्त सैन्य अधिकारी मेजर जगदीश बाड़न। 1956 से 1975 ई. के बीच प्रकाशित भोजपुरी उपन्यासन में यथार्थवादी दृष्टि से उल्लेखनीय उपन्यास 'बिंदिया' के बाद नरेन्द्र शास्त्री कृत 'ऊसर के फूल' (1973) बा। एह उपन्यास के बारे में डॉ. विवेकी राय के मंतव्य बा- ''तमाम आदर्शवादी आ आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कृतियन का बीच इहे एगो ठोस यथार्थवादी कृति लउकत बा।'' ध्यान देवे लायक बा कि डॉ. विवेकी राय भी उपन्यास में यथार्थवाद के आग्रही बानीं। ''फुलसूँधी'' सन् 1977 में प्रकाशित भइल। एकर चरचा आगे आई। ''बिंदिया'' के 26 बरिस बाद रामनाथ पाण्डेय के उल्लेखनीय यथार्थवादी उपन्यास ''जिनगी के राह'' (1982) आइल। एह उपन्यास के कथानक में मिल मालिक आ मजदूर के द्वंद्व के कथानक प्रस्तुत बा। एह पुस्तक के भूमिका में हवलदार

www.bhojpurisahityangan.com

त्रिपाठी 'सहृदय' लिखले बानीं – ''भोजपुरी चूँकि जनजीवन से जुड़ल लोकभाषा हऽ, एह से एकरा में नया विचारन आ नया कारीगरी के रूप परगट भइल आपना आप में सराहे वाला हुनर बा।'' उपन्यासकार रामनाथ पाण्डेय के भोजपुरी उपन्यास विधा के समृद्ध करें में उल्लेखनीय अवदान बा। उहाँ के यथार्थवादी उपन्यासकार के विशेषण से अलंकृत करे में कवनो संकोच नइखे। ''बिंदिया'' (1956), 'जिनगी के राह' (1982) के अतिरिक्त ऊहाँ के ''महेन्दर मिसिर'' (1996), ''इमरीतिया काकी'' (1997), ''आधे आध'' (1998), उल्लेखनीय सामाजिक ऐतिहासिक यथार्थवादी परंपरा के उपन्यास बाड़न स।

रामनाथ पाण्डेय के यथार्थवादी परंपरा से अलगे भोजपुरी के वरिष्ठ साहित्यकार गणेशदत्त 'किरण' के पौराणिक उपन्यास ''रावन उवाच'' (1982), ''धूमिल चुनरी'' (1980), ''सती के सराप'' (1988), ''तोहरे खातिर'' (1989) उल्लेखनीय बा। ''धूमिल चुनरी'' ऐतिहासिक उपन्यास ह। एकर कथानक सूरी वंश के संस्थापक बादशाह शेरशाह सूरी (सन् 1540–1545) काल के मुसलमान सरदारन के जिनगी पर आधारित बा। ''सती के सराप'' मुगल बादशाह शाहजहाँ (सन् 1628–1658) काल पर आधारित बा। भोजपुरी में ऐतिहासिक-पौराणिक उपन्यास लेखन के परंपरा कमजोर नइखे। एह धारा में डॉ. अरुण मोहन भारवि के पौराणिक उपन्यास ''परशुराम'' (1977), ''बेचारा सम्राट'' (2009, अनिल ओझा 'नीरद'), ''आचार्य जीवक'' (2012, अनिल ओझा 'नीरद'), रामाज्ञा प्रसाद सिंह 'विकल' के ''विश्वामित्र के आत्मकथा'' (2015 ई.), रामचन्द्र 'निठुर' के राधा-कृष्ण के प्रेम-प्रसंग पर आधारित 'ढूढ़तारी साँवरिया'' (सन् 2015) उल्लेखनीय बा। वरिष्ठ साहित्यकार अशोक द्विवेदी के उपन्यास ''वनचरी'' भी महाभारत कथा पर आधारित पौराणिक उपन्यास हऽ। सन् 2023 में भोजपुरी में 56 गो किताब प्रकाशित भइल बाकी ओह में एको उपन्यास के नाँव नइखे। भोजपुरी भासा के मूल प्रवृत्ति अबहियों गीत-गजल, कविताई के बा।

भोजपुरी उपन्यास के तुलनात्मक अध्ययन हिंदी उपन्यासन के साथे जरूरी बा। हिंदी-भोजपुरी के जमीन लगभग एके बा। ओकर सामाजिक संरचना, राजनीतिक द्वंद्व, सांस्कृतिक अवधारणा के धरातल समान बा। प्रश्न

www.bhojpurisahityangan.com

बा कि सृजनात्मक धरातल पर अतना अंतर काहे बा? सामाजिक-सांस्कृतिक राजनीतिक अनुभूति में अतना खाई काहे बा? एगो धारा वर्तमान के सुलभ यथार्थ आ बदलत सामाजिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक मूल्यन के कथात्मक प्रस्तुति से घबरात बा। हिंदी में अइसन बात नइखे। एही से उपन्यासन के पाठकीयता बढ़ता आ भोजपुरी उपन्यासन के पाठकीयता घटता। नागार्जुन के उपन्यास 'बलचनमा' (1952) आ फणीश्वरनाथ 'रेणु' के पहिला उपन्यास 'मैला आँचल' (1954) के चरचा अपेक्षित बा। इ दूनों उपन्यास आजादी के बाद प्रकाशित बा आ भोजपुरी के पहिलका उपन्यास ''बिंदिया'' के समकालीन बा। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन आ स्वतंत्रता पर आधारित भोजपुरी में कवनो उपन्यास नइखे। डॉ. कमला मिश्र 'विप्र' के उपन्यास ''मुण डदान'' (1989) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित एक मात्र ऐतिहासिक उपन्यास बा। ऐतिहासिक उपन्यासन में ऐतिहासिक पात्रन के नाँव ना बदलल जाये, बाकी 'विप्र' जी 'मुण्डदान' में महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू तक के नाम बदल देने बानीं। ई ऐतिहासिक से जादे सामाजिक उपन्यास बा। ''बलचनमा'' के कथावस्तु आजादी के बारह साल पहिले के ह। वरिष्ठ आलोचक डॉ. वीरेन्द्र यादव लिखने बाड़न- ''बलचनमा'' के फूल बाबू के चरित्रांकन के माध्यम से नागार्जुन स्वाधीनता आन्दोलन में शामिल उस अभिजात और प्रभुत्वशाली वर्ग का क्रिटिक रचते हैं जिसकी कांग्रेस में प्रभावी भूमिका थी। ई जानल दिलचस्प बा कि मुख्य किरदार बलचनमा के मोहभंग कांग्रेसी सुराजी लोग के जीवन-शैली से होत बा। महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व के विरोधाभास भी उपन्यास में स्पष्ट बा। ''मैला आँचल'' स्वतंत्रता के बाद भारतीय ग्रामीण समाज के बदलत यथार्थ के महावृत्तांत बा। एकर कथानक भारत छोड़ो आंदोलन (1942) से पहिला आमचुनाव (1952) तक के बा। बावन भगवान महात्मा गाँधी के प्रतीक बा। आजादी के बाद बावन भगवान (महात्मा गाँधी) अप्रासंगिक हो जाता। ऊ तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान सीमा पर तस्करन के शिकार हो जाता। ''मैला आँचल'' के सामाजिक राजनीतिक व्यंजना अपना रचनाकाल के अतिक्रमण करता। एह से ओकर पाठकीयता जबरदस्त बा।

भोजपुरी उपन्यास के समस्या बा पाठकीयता के आ जबरदस्त चुनौती बा कि ओकर नागार्जुन आ 'रेणु' के होई। पहिला प्रधानमंत्री जवाहरलाल

www.bhojpurisahityangan.com

नेहरू के आर्थिक नीतियन से युवा वर्ग के मोहभंग होखे लागल त श्री लाल शुक्ल के उपन्यास ''राग दरबारी'' (1966) आइल, शिक्षा माफिया वैद्य जी के बहाने। कवि विजेन्द्र अनिल, उपन्यास ''एगो सुबहः एगो साँझि'' (1977) लिखत रहन जवन एगो कॉलेज के लइकी के प्रेम-प्रसंग पर आधारित बा। दूनों रचनाकारन के समय-चेतना आ कथा-दृष्टि में अंतर समझल जा सकत बा। क्रांतिकारी घोषित कऽ देला से केहू क्रांतिकारी ना हो जाला।

अब भोजपुरी-हिंदी से बाहर निकलल जाव। अँग्रेजी फ्रांसीसी, रूसी आदि भाषाअन में जइसन उपन्यास लिखा रहल बा। इहो देखे के चाहीं कि एशियाआई-अफ्रीकी देशन के उपन्यासकरण के कथानक आ कथा दृष्टि का बा? यूरोप के सब देश उपनिवेशवादी रहल बाड़न स। बीसवीं सदी तक पूरा अफ्रीका यूरोपीय उपनिवेशवाद के गुलाम रहे। भारतीय उपमहाद्वीप सहित एशिया के श्रीलंका, म्यांमार आदि अनेक देश ब्रिटेन, जर्मनी, पोर्तुगाल, फ्रांस, हॉलैंड आदि यूरोपीय देशन के गुलाम रह चुकल बा। एशियाआई-अफ्रीकी देश यूरोप-अमेरिका उपनिवेशवादी देशन के मर्मांतक लूट-मार-अत्याचार झेल चुकल बा। राष्ट्रीय स्वतंत्रता मिलला के बाद अफ्रीकी देशन के कथाकार कवना थीम पर उपन्यास लिख रहल बाड़न। एकर तुलनात्मक अध्ययन जरूरी बा। अब यूरोप अमेरिका फेर से नया तरीका से एशिया-अफ्रीका के नव-उपनिवेश में ढालल चाहत बा। अइसना में भोजपुरी उपन्यासकारन के कइसन रचनात्मक भूमिका होखे के चाहीं। गोरी जाति के साम्राज्यवादी मानसिकता समझे के पड़ी। ऊ खाली धन आ इज्जत ना लूटे, बलुक पूरा कौम के भासा, धर्म, संस्कृति के नाश कऽ देला आ अपना भासा, धर्म, संस्कृति थोप देला। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंउ सरीखा विशाल देशन पर गोरी जाति कब्जा जमा लिहलक। अफ्रीकी देशन के सरकारी भाषा फ्रेंच, इंगलिश, जर्मन, स्पैनिश हो गइल। जनता यूरोपीय धर्म स्वीकार क लेलक। एही से हम कुछ अफ्रीकी उपन्यासन के चरचा प्रासंगिक समझत बानीं। नाइजीरियाई लेखिका चिमांदा गोची अदिनी के बियाफ्रा युद्ध पर आधारित उपन्यास बा ''हाफ ऑफ ए यल्लो सन'' (पीयर सूरज के आधा)। ई उपन्यास ग्रेट ब्रिटेन के प्रकाशन फोर्थ इस्टेट सन् 2006 में प्रकाशित कइले बा। चिमांदा के जनम 15 सितंबर, 1977 के भइल रहे। नाइजीरिया में अलगाववादी बियाफ्रा गृह युद्ध 6 जुलाई, 1967 से 15 जनवरी, 1970 तक जारी रहल। उपन्यास खातिर

www.bhojpurisahityangan.com

रचना-सामग्री जुटावे में उपन्यासकार के चार साल लागल। ऊ नाइजीरिया समाज आ राष्ट्र के वस्तुगत यथार्थ तलाशत रही। भारत या नाइजीरिया दूनों के सभ्यता-संस्कृति बहुत पुरान ह। आउर कुछ राजनीतिक समानता बा। दूनों देश लम्मा समय तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद के गुलाम रहे। एक अक्टूबर, 1960 के नाइजीरिया के राष्ट्रीय स्वतंत्रता मिलल। उपन्यासकार के इ पृष्ठभूमि जानल जरूरी बा। नाइजीरियाआई सामाजिक संरचना में तीन सै जनजातीय समूह बा। जवना में तीन गो प्रमुख बा- 1. इगबो, 2. हौसा फुलानी, 3. योरूबा। एह उपन्यास के कथावाचक तेरह वर्षीय घरेलू नोकर उगबू बा। ऊ क्रांतिकारी पैन अफ्रीकनवादी युवा प्रोफेसर ओडेनिम्बो के रसोइया ह जवन गाँव से आइल बा। ओलना आ केनिने जुड़वां बहिन हई स जे एगो अमीर ठीकेदार के बेटी हई स। दूनों बहिन के सुभाव में आकाश-जमीन के फर्क बा। उच्च शिक्षा प्राप्त ओलना प्रोफेसर ओडेनिग्बो साथे सह जीवन में बिया। प्रोफेसर के अशिक्षित माई एगो देहाती स्त्री ह जे ओलना के जादूगरनी समझत बिया। ओलना के जुड़वाँ बहिन ब्रिटिश लेखक रिचार्ड चर्चिल के प्रेम में बिया। बाकी ई उपन्यास के क्षेपक है। मूल कथा नाइजीरिया के स्वतंत्रता (1960) के पश्चात ओकर सामाजिक-राजनीतिक द्वंद्व के चित्रण बा। चिमांदा नाइजीरियाई जीवनशैली, सोच-विचार, धर्म-संस्कृति, साम्राज्यवाद, यूरोपवाद आ रंगभेद के यथार्थवादी कथात्मक प्रस्तुति कइले बाड़ी। ई जानल दिलचस्प बा कि उपन्यास के मुख्य किरदार युवा प्रोफेसर ओडेनिग्बो अलजीरिया में फ्रांसीसी परमाणु विस्फोट के काहे आलोचना करत बा। बियाफ्रा एह युद्ध में यूरोपीय साम्राज्यवादी देशन के भूमिका मानव विरोधी बा। एह में कहीं-कहीं शालीन ऐंद्रिक वर्णनों बा।

एह कड़ी में केन्याई मूल के उपन्यासकार नोबेल पुरस्कार प्राप्त (2021) अब्दुलरज्जाक गुर्नाह के उपन्यास ''आफ्टरलाइफ'' के चरचा उपयुक्त होई। ''आफ्टरलाइफ'' में जर्मन साम्राज्यवाद के क्रूरता के दंश तीखा बा। एह उपन्यास के कथानक भारत के गुजराती व्यापारियनों से जुड़ल बा। एकर मुख्य किरदार सीनियर इलियास, जुनियर इलियास, सीनियर इलियास के बहिन आफिया, आफिया के शौहर हमजा, खलिफा, कासिम के पूर्व गुजराती मूल के सौदागर हाशिम-गुलाब बाड़े। सन् 1895 में ब्रिटिश सरकार केन्या के उपजाऊ भूमि पर कब्जा कइलक आ बढ़िया जमीन के गोरन खातिर आरक्षित

www.bhojpurisahityangan.com

कऽ देलक। प्रथम विश्वयुद्ध (1914-18) के दौरान जर्मन साम्राज्यवाद ब्रिटिश उपनिवेश केन्या पर अधिकार खातिर केन्या में युद्ध छेड़ देलक। जर्मन फउज स्थानीय केन्याई युवकन के लोभ लालच दे के भाड़ा पर भरती कइलक। सीनियर इलियास जर्मन फउज में भाड़ा के सिपाही बनि जाता। ऊ नावालिग बहिन आफिया के आश्वासन देता कि लड़ाई खतम हो जाई त ऊ जल्दी घरे लउट आई। सीनियर इलियास युद्ध में घायल हो जाता आ कबो वापस नइखे होत। भाई के अनुपस्थिति में आफिया के बियाह होता। भाई के स्मृति में आफिया अपना बेटा के नाँव जुनियर इलियास राखत बिया। सीनियर इलियास के बहुत मार्मिक कथा बा। ऊ जर्मन सरकार से पेंशन माँगत बा। जर्मन सरकार के दलील बा कि ऊ नियमित जर्मन सिपाही ना रहे। ऊ विदेसी मूल के भाड़ा के सैनिक रहे। एह से ऊ पेंशन के हकदार नइखे। सीनियर इलियास के जर्मन महिला से शादी के प्रसंग दिलचस्प बा। सीनियर इलियास के खोज में जुनियर इलियास एगो शोधार्थी के रूप में जर्मनी जाता। ऊ पावता कि 1938 में जर्मन महिला से शादी करे के जुर्म में जर्मन सरकार सीनियर इलियास के जेल भेज देतिया। 1942 में सीनियर इलियास जेल में मर जाता। ओकर नावालिक बेटा पॉल अब्वा साथे स्वेच्छा से जेल में रहे। एक दिन जर्मन रक्षक पॉल के हत्या क देत बाड़न सँ। ई जर्मन साम्राज्यवाद के अमानवीयता के क्रूर चेहरा बा।

''आफ्टरलाइफ'' उपन्यास के मूल उद्देश्य यूरोप-अमेरिका को वोह साम्राज्यवादी मानसिकता के तथ्यात्मक अन्वेषण बा कि पश्चिमी देश भले ऊपर से न्याय, शांति, जनतंत्र के ढिंढोरा पीटे, बाकी दुनिया के देसन के उपनिवेशीकरण के ओकर गुप्त एजेंडा ज्यों-के-त्यों बा। शोधार्थी जुनियर इलियास एगो जर्मन संग्रहालय के वोह सुरक्षित दस्तावेज में ''ग्लिक्सचालटुंग आंदोलन'' के असली अर्थ आ उद्देश्य पता लगावे में सफल रहता। संग्रहालय के एगो अधिकारी भेद खोलता बा कि हिटलर एगो अभियान चलवले रहे कि युद्ध में हारल उपनिवेशन के जर्मन कौम फेर से प्राप्त करी।

अब एगो एशियाई मुल्क के उपन्यास ''दी सेवन मुंस ऑफ माली अलमीडा'' के चरचा जरूरी बुझाता। भोजपुरी उपन्यासन के संदर्भ आ परिप्रेक्ष्य वोइसहीं राष्ट्रीय आ विस्तृत होखे के चाहीं। ''दी सेवेन मुंस ऑफ माली अलमीडा'' के कथानक श्रीलंका के सन् 1983 से 2008 तक

www.bhojpurisahityangan.com

चलेवाला भयानक गृह युद्ध के विभीषिका पर केन्द्रित बा। 25 वर्षीय गृहयुद्ध में 40 हजार श्रीलंकाई नागरिक मारल गइलन। गृह-युद्ध काल में अमेरिकी हथियार उत्पादकन के अभिकर्ता सहित इजराइल से ले के यूरोपीय देशन के खुफिया अधिकारी आ हथियार सौदागर श्रीलंका में डेरा जमवले रहलन। श्रीलंका सन् 1948 में राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त कइले रहे। भारते लेखा ऊ बहुभासी, बहुजातीय, बहुधर्मी देश ह। एह उपन्यास के रचनाकार युवा लेखक शहाना करूणा तिलक बाड़े। सन् 2022 के बुकर पुरस्कार से सम्मानित ई उपन्यास बा। उपन्यास के मुख्य किरदार फोटोग्राफर माली अलमीडा बा। श्रीलंकाई गृह-युद्ध में घटित कुछ विरल घटनन के तस्वीर माली अलमीडा अपना कैमरा से खींचले बा। ओकरा प्रिंट आउट करवले बा। वोह फोटन में अइसनों तस्वीर बा जवना में सरकारी अधिकारी, खुफिया अधिकारी आ मंत्री गाँवन में आग लगावे के निर्देश देले बा। मंत्री आ अधिकारी अइसन फोटन के फोटोग्राफर से छीन लेल चाहत बाड़न। अंततः सब स्टेक होल्डर फोटोग्राफर माली अलमीडा के हत्या करा देत बाड़न। फोटोग्राफर के प्रेतात्मा हत्यारन के पहचानल चाहत बा। श्रीलंकाई गृह-युद्ध के रोंगटा खड़ा करेवाला चित्रण उपन्यास में बा। उपन्यास के भासा में हर तरह के सत्ता के खिलाफ मारक तंज बा। उपन्यास बेहद पठनीय बा। एकरा कथानक में प्रेतात्मन के संवाद बा। एह संवादन से राज्य प्रायोजित श्रीलंकाई गृहयुद्ध के भयानक, अमानवीय, अनैतिक चेहरा उभरत बा। लंका भयानक गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी आ भ्रष्टाचार से जूझ रहल बा। एह राष्ट्रीय बुनियादी चुनौतियन पर परदा डाले खातिर सत्तापक्ष आध्यात्मिक कथा जनता के सुनावत बा। राजसत्ता मृत्यु के बाद पराजीवन के एगो काल्पनिक कथा जनता में प्रचारित करत बा। एगो मृत किशोर के प्रेतात्मा मृत फोटोग्राफर से कहऽता, ''पराजीवन के प्रारूप जनता के मूर्ख बनावे खातिर गढ़ल बा। राजसत्ता चाहत बा कि जनता आपन वर्तमान जीवन के दुःख-कष्ट भुल जाव।'' सन् 1960 के दसक में जब विकास के नेहरूवादी मॉडल से जनता के मोह भंग होखे लागल तब हिंदी में श्रीलाल शुक्ल के व्यंगपरक मशहूर उपन्यास ''राग दरबारी'' राजसत्ता के खोखलापन, आ भ्रष्टाचार आ दोगलापन के सटीक कथात्मक प्रस्तुति कइलक। अजगूत बा कि सन् 1964 में भोजपुरी में रामनगीना सिंह 'विकल' के उपन्यास 'जीअन साह' छपल जवन मरणोपरांत जीवन पर आध

www.bhojpurisahityangan.com

ारित बा। स्पष्ट बा कि एह उपन्यास के जनता के दुख-दरद से कवनो मतलब नइखे। रचनाकार के धरम झूठ फयलावल ना ह। सन् 1966 में जगदीश ओझा 'सुंदर' के उपन्यास 'रहनिहार बेटी' प्रकाशित भइल जवना में 'छल से भगावल एगो लइकी के शहर के गुंडन से अपना के बचावे के संघर्ष कथा बा। एकर कैनवस आ कथ कहानी के बा।

रामनाथ पाण्डेय जी गणेशदत्त 'किरण' जी के सृजन-दृष्टि से अलगे यथार्थवादी रचना-दृष्टि अपनवलीं। रामदेव शुक्ल जी के कथा-दृष्टि यथार्थवादी बा। भोजपुरी में शुक्ल जी के दू गो उपन्यास बा- 1. ग्राम देवता (2000 ई.) आ 2. कविता और कुदाल। दूनों उपन्यास रामनाथ पाण्डेय के यथार्थवादी धारा के परंपरा के आगे बढ़ावत बाड़न स। एह परंपरा में 'ऊसर के फूल' (1975, नरेन्द्र शास्त्री), 'फुलसूँघी' (1977, पांडेय कपिल), 'भोर मुसकाइल' (1978, विक्रमा प्रसाद), 'अछूत' (1986, सूर्यदेव पाठक 'पराग'), 'जगरम' (1990, राजगुप्त), 'अमंगलहारी' (1998, डॉ. विवेकी राय), 'दाल-भात-तरकारी' (2009, डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव), 'विजय पर्व' (2018, नीतू सुदीप्ति 'नित्या'), 'दरकच' (2016, नर्वदेश्वर राय), 'गाँव' (2022, सुभाष कुमार बैठा), 'दरद के डहर' आ 'साँच के आँच' (1980, 2000, भगवती प्रसाद द्विवेदी), 'फूलवा' (2018, गोपाल 'अश्क'), 'के हवन लछुमन मास्टर' (2018, कृष्ण कुमार), 'सेमर के फूल' (डॉ. बच्चन पाठक सलिल) आदि उल्लेखनीय भोजपुरी उपन्यास बाड़न स।

ऐतिहासिक पौराणिक उपन्यासन के परंपरा भोजपुरी में कमजोर नइखे। भोजपुरी पौराणिक-ऐतिहासिक उपन्यासन में एक विशेष कथा-दृष्टि बा। वोह में अतीत जादे चमकदार आ महिमा मंडित बा। एह धारा में डॉ. अरुण मोहन 'भारवि' के उपन्यास 'परशुराम' (1977) के पहिला पौराणिक उपन्यास होखे के गौरव प्राप्त बा। गणेशदत्त 'किरण' जी के 'धूमिल चुनरी' 1980 में छपल। 'किरण' जी 'रावन उवाच' (1982), 'सती के सराप' (1988), बाद में छपल। एह धारा के समृद्ध करे में अनिल ओझा 'नीरद' के 'बेचारा सम्राट' (2009), आ 'आचार्य जीवक' (2012), डॉ. आशारानी लाल के 'जै कन्हैया लाल की', रामाज्ञा प्रसाद सिंह 'विकल' के 'विश्वामित्र के आत्मकथा', रामचंद्र 'निठुर' के ढूँढ़तारी साँवरिया' (सन् 2015) के उल्लेखनीय जोगदान बा। एह धारा में आउर उपन्यास होई।

www.bhojpurisahityangan.com

बाकी एगो त एह आलेख के सीमा बा आ दोसर एह लेखक के ज्ञान के सीमा बा। वरिष्ठ साहित्यकार आ 'पाती' के यशस्वी संपादक डॉ. अशोक द्विवेदी के महाभारत कथा पर आधारित 'वनचरी' के उल्लेख बिना ई आलेख अधूरा रही। तबो ई आश्चर्य बा कि सन् 2023 के दौरान भोजपुरी भासा में 56 गो किताबन के प्रकाशन के सूचना बा, लेकिन वोह सूची में कवनों भोजपुरी उपन्यास नइखे। ई चिंता के बात बा। भोजपुरी भासा के मूल प्रवृत्ति अबहियों गीत-गजल कविताई का ओर बा।

हिंदी उपन्यास के परिदृश्य सराहनीय बा। वरिष्ठ उपन्यासकार संजीव के उपन्यास ''मुझे पहचानो'' के वर्ष 2023 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिलल बा। ई उपन्यास भारत में प्रचलित सती प्रथा पर आधारित बा। युवा कथाकार प्रवीण कुमार के उपन्यास ''अमर देशवा'' कोरोना काल पर आधारित बा। अवधेश प्रीत के उपन्यास ''रूई लपेटी आग'' परमाणु विस्फोट के त्रासदी पर केन्द्रित बा। हृषीकेश सुलभ के उपन्यास ''दातापीर'' आ ''अग्निलीक'' काफी चर्चित बा। झारखंड पर केन्द्रित मनोज भक्त के ''शालडुंगरी का घायल सपना'', ''जानकीदास तेजपाल मैनशन (2015, अलका सरावगी, ''कलिकथा वाया बाइपास'' (1998, अलका सरावगी), ''खेत'' (2023, सुरेश काँटक), ''अगम बहै दरियाव'' (2023, शिवमूर्ति), के काफी चरचा बा। थीम आ विषय के कवनो कमी नइखे। खुद सोचे के बा कि कमी बा। आत्मालोचन जरूरी बा।

एगो विदेशी उपन्यासकार न्युगी बा थ्योंगो के जीवन-दृष्टि प्रेरणादायक बा। उनुकर उपन्यास ''खून की पंखुड़ियाँ (1977) के पठनीयता आजो बा। ऊ पहिले अँग्रेजी में लिखत रहन। बाद में ऊ अपना लोकभासा गिकुयू आ स्वाहिली में लिखे के संकल्प कइलन। उनुकर परिवार ईसाई धरम स्वीकार कइले रहे। न्युगी वा थ्योंगी अँग्रेजी आ ईसाई धरम दूनों के अलविदा क देलन। वैश्विक परिदृश्य में ताल्सताय, गोर्की, लुशून, पर्ल एस बक (दी गुड अर्थ), वालजाक (किसान), तुर्गनेव, दास्तावोवस्की, वी.एस. नायपाल, ग्रैबियल गार्सिया मार्केज, यू. एन. अनंतमूर्ति (कन्नड़), महाश्वेता देवी (बांग्ला), मारियामा बा, गुरदयाल सिंह (पंजाबी) के नाँव आदर के साथ गिनावल जा सकेला। ओकरा से भोजपुरी पाठक के आतंकित कइल जा सकेला। असली चीज बा आत्ममुग्धता के व्यामोह से अपना के मुक्त कइल,

www.bhojpurisahityangan.com

सामाजिक सरोकार से अपना के जोड़ल आ वैश्विक साहित्य से परिचित भइल। व्यापक समाज के दु:ख-दर्द से संवेदनात्मक लगाव ना होई त रचनात्मकता मरि जाई। आ ओइसन साहित्य के कवनो पाठकीयता ना होई।

भोजपुरी उपन्यास के मुख्य धारा अबहीं जियतार बा। सामाजिक यथार्थ से जुड़ के आ वैश्विक रचनाशीलता से प्रेरणा ले के भोजपुरी उपन्यास विधा के सृजन के शिखर तक पहुँचावे के मजिगर संभावना बा।

❐❐

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

उपन्यास के वैश्विक परिदृश्य आ भोजपुरी उपन्यास	7
बिंदिया : पितृसत्ता बनाम नारी अस्मिता	21
ग्रामदेवता: भोजपुरी ग्राम्यांचल के महावृत्तांत	27
फुलसुंघी: रंगीला जमींदार के विरक्ति-कथा	37
के हवन लछुमन मास्टर: वस्तु, शिल्प आ संवेदना	47
अछूत: अस्पृश्यता के सामाजिक समाधान	59
'शिखरन के आगे': अंतर्वस्तु आ संवेदना	66
गंगा रतन बिदेसी: स्वतंत्रता आंदोलन के सामाजिक इतिहास	74
बनचरी: हिडिम्बा कऽ आर्यीकरण	87
ऊसर के फूल: पितृसत्ता में स्त्री-अस्मिता	99
विजय पर्व: नारी उत्पीड़न के वृत्तांत	107
''दाल भात तरकारी'' में किसान संचेतना के विमर्श	115

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

बिंदिया : पितृसत्ता बनाम नारी अस्मिता

'बिंदिया' भोजपुरी भाषा के पहिला उपन्यास ह जवन आजादी के नौ बरिस बाद 1956 ई. में प्रकाशित भइल। एकर रचनाकार रामनाथ पाण्डेय हिंदी आ भोजपुरी दूनों भासा में प्रचुर लिखने बानीं। भोजपुरी साहित्य में 'बिंदिया' उपन्यास के ऐतिहासिक महत्व बा काहे कि ई भोजपुरी भासा के पहिला मौलिक उपन्यास ह। एकर दोसर महत्व उपन्यास के आधुनिकतावादी कथावस्तु के कारण बा जेकर कथा-नायिका ग्राम्य-परिवेश के होखलो पर पितृसत्ता के इच्छा के विपरीत मनपसंद युवक विआह खातिर स्वीकार करत बिया। तीसर महत्व बा कि धर्म-सत्ता के प्रतिनिधि उपरोहित के धार्मिक ठगी के भरपूर उपहास आ परदाफाश बा। एह सबसे उपन्यासकार रामनाथ पाण्डेय के कथा-दृष्टि उल्लेखनीय बा काहे कि आजादी के बाद भारतीय ग्राम्य-समाज के माइंड-सेट भारतीय संविधान के अधिगृहित भइलो पर वर्णाश्रयी मोड़ में संचरित रहे। उपन्यास के कथा-नायिका किसान पुत्री बिंदिया नारी-अस्मिता आ विवेकशील बुद्धि के प्रतीक बिया। बिंदिया के पिता कोदई कवनों जमाना में गाँव-जवार के मातबर किसान रहन। एगो बड़का दहार में उनकर घर-मकान दह-बह गइल, घरनीयो मरि गइली। अब परिवार में बेमार कोदई आ उनकर सेयान कुंआर बेटी बिंदिया बाँचल बिया। बेमार कोदई वर्णाश्रयी बेवस्था के पोषक आ पितृसत्ता के प्रतीक बाड़न।

www.bhojpurisahityangan.com

कथा-नायिका बिंदिया के सिरजना उपन्यासकार रामनाथ पाण्डेय आधुनिक कथा-दृष्टि से कइले बानीं। उपन्यास बिंदिया के पढ़ाई-लिखाई के बारे में मउन बा। गाँव-जवार में कवनो विद्यालय-महाविद्यालय के उल्लेख नइखे उपन्यास में जहाँ कथा-नायिका बिंदिया शिक्षा ग्रहण करत होखे। ऊ स्त्री-स्वत्वाधिकार खाती संघर्षरत कवनों नारीवादी आंदोलन से नइखे जुड़ल। विआह के प्रसंग में बिंदिया द्वारा पितृसत्ता के इच्छा-आदेश के अवमानना नकार परिस्थितिजन्य बा। जवना परिस्थिति में ऊ बेमार पिता कोदई के आदेश के पालन करे से मना करतिया, ओकरा अवहेलना के समर्थन में पाठक के संवेदना बा। कवनों अक्षम-अशक्त बाप समझदार-गुनवान सुन्नर बेटी के विआह जदी कवनों आवारा-लुहेंड़ा से तय क देला त समाजो ओकरा के गरिआवला। आवारा झमना के वर रूप में स्वीकारे खातिर कथा-नायिका सुभेख-सुन्नरी तइयार नइखे। पितृसत्ता के प्रतीक कोदई के बौखलाहट दृष्टव्य बा: ''जमाना केतना बदल गइल बा। हमनी के जवना घरी विआह भइल ओ घरी केकरो से ई मामला में मुँह खोले के हियाव ना करत रहे। ....जबान से केकरो ई कहे के हिआब ना रहे कि हम फलाना से विआह ना करब, चिलाना से करब। बाकिर आज त बेटा के के कहो, बेटियो कहतिया। राते बिंदिया साफे कह देलस, हम झमना से विआह ना करब..... सुनत रहनी ह सहरे के लइकी सभ आपन बिआह अपना मन से करतारीस, बाकिर रात त ऊ बात हमरे घरे सुनाई पर गइल (पृष्ठ 105)।'' कोदई के मुँह से इ सुनके, 'सुनत रहनी ह सहरे के लइकी सभ आपन विआह अपना मन से करतारीस', उत्तरप्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी के विआह के पहिले सुचेता मजूमदार रहली आ बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में संवैधानिक इतिहास के प्रवक्ता रहली। ऊ अट्ठाइस बरिस के उमिर में अड़तालीस वर्षीय प्रोफेसर जे.बी. कृपलानी से 1936 में प्रेम विआह क लेली। महात्मा गाँधी एह बिआह के खिलाफ रहले। ई सुखद संजोग बा जे उपन्यासकार रामनाथ पाण्डेय जी बनारस में भारतीय रेल विभाग में पदस्थापित रहलीं। एह प्रसंग में विजयलक्ष्मी पंडित आ भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के प्रेम बिआह के इयाद कइल जा सकता। पितृसत्ता के प्रतीक कोदई के सहर के घटनन के बारे में जानकारी बा। ऊ ओह आधुनिक हवा के गांव में ना बहे दिहें। कथाकार के संवेदना पितृसत्ता के खिलाफ बा। ऊहाँ के 'आपन बात' में

www.bhojpurisahityangan.com

कथा-नायिका बिंदिया के प्रति अपना संवेदना के इजहार कइले बानीं: ''का समाज का हाल ईहे रही? बिंदिया जुग-जुग से असहीं घर से भागल करी? ओकरी पर अकलंक लागते रही? अपना सभ्यता पर गुमान करे वाला समाज जब से होस सम्हरले बा तब से आज ले 'बिंदिया' जस के तस छपिटा रहल बिया।''

रामनाथ पाण्डेय जी बहुत कम कथा-पात्रन के सहारे 'बिंदिया' उपन्यास के कथानक गढ़ले बानीं। मुख्य कथा पात्र बाड़न किसान कोदई, बिंदिया, बुधराम, पदारथ भगत, झमना, पं. बुझावन तिवारी, मँगरा, रघूआ, रमेस। मात्र नौ गो पात्र के सहारे उपन्यास के सिरिजना खड़ा बा। एगो स्त्री पात्र बिंदिया। परिवार सब न्यूक्लीयर। कोदई के परिवार में बाप-बेटी, पदारथ भगत के परिवार में बाप-बेटा। उपोरोहित पंडित बुझावन तिवारी के पंडिताइन अलोत बाड़ी। मँगरा बुधराम परिवार में अकेले। कोदई, बिंदिया, मँगरा के अंतरंग चित्रण से ओकनी के एगो चरित्र पाठक के सामने उभरता।

पहिला अध्याय में अतीत दीप्ति में कोदई के संक्षिप्त जीवन-वृत्तांत लउकता। उनकर जवानी के वर्णन बा। ऊ अपना सुन्नर तिरिया के बहुते पेयार करत रहस। सावन भादो में अलकतरा अइसन कुचकुच अन्हरिया में, जब अकास में बदरी के लमहर लमहर झुण्ड जूझत रहे, हाथी खानी चिघड़त रहे, बिजली तड़क तड़क के करेजा डोलावत रहे तबो ऊ अपना खेत में डटले रहस। उनकर मेहर खेत के ओह पार से माथा पर उनकर खाये के गठरी ले जात रही। कोदई के अपना पत्नी से खूब पेयार बा। कोदई इहो इयाद करत बाड़न कि जब उनकर बिआह ना भइल रहे तब गाँव के मुनिया से उनकर रोमांस चलत रहे। मुनिया खातिर कोदई गाँव के राजा बाबू से लड़ गइल रहन। ऊ मुनिया भरले जवानी में मरि गइल। ऊहे कोदई बुढ़ारी में सड़क के किनारे फूस के एगो झोंपड़ी के सोझा बँसखट पर ओठंगल बाड़न। रामनाथ पाण्डेय जी कोदई के जीवन-वृत्तांत से किसानी जीवन के जियतार चित्रण नीमन गद्य में गइले बानीं।

बिंदिया के मूल-कथा बा कि कोदई जवानी में गाँव-जवार के एगो मेहनती मतबर किसान रहलन। भयंकर बाढ़-दहार में उनकर घर-दुआर, पेयारी तिरिया खतम हो गइली। बेटी बिंदिया आ ऊ बाँच गइलन। किसान के निष्ठुर प्रकृति के कतना झेले के पड़ेला। कोदई दोसर बिआह ना कइलन।

www.bhojpurisahityangan.com

बलुक दमा के रोगी हो गइलन। आँख के रोशनी कमजोर हो गइल। बिंदिया सेयान हो गइल। खेती बारी बिंदिया के कान्हा पर आ गइल। जवानी के दिन के मजूर बुधराम के सहयोग-साथ बा, बाकी ऊहो बुढ़ा गइल बाड़न। गाँव के लोगन के धेयान कोदई के खेत-खरिहान पर बा। पदारथ भगत के आवारा बेटा झमना साजिश से बिंदिया से बिआह क के कोदई के धन हड़पल चाहता। ऊ राह-रास्ता में बिंदिया से छेड़खानी करता। ऊ गाँव में बिंदिया के चाल-चलन के शिकाइत करत बा। ऊ बाप कोदईयों से बिंदिया के चरित्र हनन करता। पूरा उपन्यास संवादपूर्ण आ नाटकीय शिल्प में बा। लेखकीय हस्तक्षेप बहुत कम बा। छोट-छोट संवाद से कथानक के विकास होता।

अस्मिताबोधी बिंदिया बेवहार कुशल युवती बिया। रामनाथ पाण्डेय जी बिंदिया के रूप में पुरुष सत्ता से स्वतंत्र समर्थ नारी-चरित्र के सिरिजन कइले बाड़े। स्त्री के मानसिक क्षमता पुरुष से तनिको कम ना होला। उपन्यास के कथ आ कथानक अपना समय के अतिक्रमण करता, एही से एकर जादे महत्व बा। कोदई बिंदिया से पूछत बाड़न कि ''फसल बचाव के कवन उपाय कइले बाड़े?'' 'बुधराम काका खेत में सुतीहन। घर के देखरेख मंगरा करी। ओकरा में दायित्वबोध बा, सामाजिक-चेतना बा। ऊ बाबू के गाँव के यथार्थ से अवगत करावत बिया, ''गाँव भर के आँख अपने खेत पर लागल बा। कवन ठेकान कब केकरा मन में चोर बस जाये आ पाके के पहिलहीं काट ले।..... दुनिया के इहे दस्तूर बा, कमजोर पा के सब सतावला (पृष्ठ 51)।''

रामनाथ पाण्डेय बिंदिया के रूप में एगो अइसन नारी-चरित्र सिरिजले बाड़न जवना में समय-चेतना लबालब भरल बा। ऊ भारतीय गाँवन के द्वंद्व ात्मक यथार्थ से परिचित बिया- ''काका, सभे गाँव के पहिले सरग बूझत रहल ह। ओ में रहे वाला देवता समझत रहल ह, ऊहे गाँव अब नरको के कान कटले बा (पृष्ठ 99)।'' बिंदिया नारीवादी चेतना से आगे के नारी ह। ओकरा में सामाजिक- ऐतिहासिक चेतना बा।

आधुनिक समाज बिआह के व्यक्तिगत मामला माने खातिर तइयार हो रहल बा, बाकी पुरुषवर्चस्ववादी पितृसत्तावादी मानसिकता ग्रामीण सत्ता से ले के राष्ट्रीय सत्ता पर हावी बा। पितृसत्ता प्रेम विआह के एकदम खिलाफ बा। प्रेमी-युगल के ऑनर किलींग हो रहल बा। रामनाथ पाण्डेय जी के प्रश्न

www.bhojpurisahityangan.com

बा कि ''बिंदिया जुग-जुग ले असहीं भागल करी?'' 'बिंदिया' उपन्यास के धुरी एही सामाजिक- सांस्कृतिक प्रश्न पर टिकल बा। बिंदिया स्वतंत्र-चेता नारी के प्रतीक बिया। बिआह के मूल्य पर ऊ पिता से संबंध-विच्छेद नइखे कइल चाहत। बेमार पिता के सेवा-सुसुरसा के दायित्व से भी मुक्त भइल नइखे चाहत। ऊ बिआह के मामला में पिता के एकाधिकारवादी रवइया के समालोचक बिया। पिता तर्क देताड़न कि ''आँख के सोझा राखे खातिर तोहार बिआह झमना से करतानीं।'' बिंदिया पितृसत्ता के आदेश खारिज क देतिया, ''हम झमना से बिआह ना करब।'' ओकरा में अतना नैतिक बल बा कि ऊ ई बात गाँव के सोझा कह सकली: ''हम त ई गाँव भर के सोझा कहब (पृष्ठ 85)।'' मंगरा कोदई एके जात के बा। ऊ आन गाँव के ह। झमना गाँव में प्रवाद फयलवले बा कि बिंदिया मंगरा से फंसल बिया। कोदई बिंदिया के बिआह मंगरे से काहे नइखन कइल चाहत? उपन्यास एह प्रश्न के जवाब नइखे देत। शायद एह से कि आपन जात होइलो पर मंगरा कोदई के बनिहार ह।

बिंदिया में प्रत्युत्पन्नमतित्व बा। संकट में परल जिनिगी से अपना के उबार लेवे के क्षमता बा। रात बीतते कोदई ओकरा के आवारा झमना के सउंप दिहें। जिनिगी भारी लफड़ा में परी जाई। बिंदिया सटीक निरनय लेतिया कि अब मंगरा साथे गाँव-घर छोड़ि के भागहीं परी।

'बिंदिया' के कथानक में प्रेम-कथा से जादे ओह सामाजिक संरचना के वर्णन बा जवना में बिंदिया जइसन स्वतंत्र चेता अदमी के जीये मरे के बा। आजादी के बाद बनल संविधान में एग्गो जनतांत्रिक समाज बनावे के संकल्प रहे, बाकी गाँव-समाज के माइंड-सेट अतीतवादी बा। एह तथ्य के उपन्यासकार रामनाथ पाण्डेय जी 'बिंदिया' में रेखांकित कइले बानीं। जब बिंदिया खेत में से मटर के ढेंढ़ी बाबू (कोदई) के देतिया त ऊ कहत बाड़े, ''जो एमे थोड़का उपरोहित जी के दे आव। खेत के नया अन्न पहिले बाभन के मुँह में पड़े के चाहीं (पृष्ठ 49)।'' एक दिन उपरोहित बुझावन तिवारी पदारथ भगत के प्रेरणा से कोदई लगे आवताड़न। बेमार कोदई खटिया पर से उपरोहित के सम्मान में उठ नइखन पावत। कोदई पाप-बोध से ग्रस्त हो के कहत बाड़े: ''आज ले बाभन-बिसुन के सोझा खटिया पर ना बइठनी। आज ऊहाँ के घरो में अइला पर हम पड़ल बानीं (पृष्ठ 66)।''

www.bhojpurisahityangan.com

'बिंदिया' में रामनाथ पाण्डेय जी उपरोहित बुझावन तिवारी के धूरतई, षडयंत्रकारी लालची सोभाव के नीके तरी परदाफाश कइले बानीं। उपरोहित झमना के बिआह बिंदिया के करावे के साजिश में शामिल हो जाताड़न। बिना कुंडली मिलवले कोदई के मूर्ख बनावत बाड़न: ''....अठारहो पुरान से अठारे बेरी गननी हं, बाकिर वाह रे लगन, हर बेरी एकेगो न उचरता (पृष्ठ 69)।'' कथाकार पाण्डेय जी उपरोहित बुझावन तिवारी के अंतरंग के झलक देखले बानीं। कोदई से बिंदिया-झमना के बिआह के सहमति मिल गइल बा। बुझावन तिवारी के निजी सवारथ देखीं, ''ऊहां के चाहे लगनी जेतना जल्दी होखित धउड़ के भगत के आपन जीत के खबर सुना अइतीं। कहतीं- 'देख तू नू कहत रहल ह, चउधरी ना मनिहें। आरे जवना काम में पंउित बुझावन तिवारी के हाथ लाग जाई, ओकरा के होखे से भगवानों ना रोक सकतारन (पृष्ठ 70)।'' ऊ कोदईयो के मरदानगी क अइसन बखान कइलन कि आपन फीस पचीस से पचास करा लेलन आ पंडिताईन खातिर एक थान गहना गच्छवा लेलन।

उपन्यास में गरीब आ अमीर के गवाही पर सामाजिक न्याय के आलोचना रामनाथ पाण्डेय जी कइले बानीं। बिंदिया के पाक चरित्र के बारे में बुधराम काका के कवनों भ्रांति नइखे। ऊ रात-दिन ओकरा संगे रहले। उनकर आँख धोखा ना खा सके। बाकिर कोदई के कथन बा, ''साँच बोले वाला गरीब रोज लतिआवल जालन स। तोहार बात के केहू साँच ना मानी। गरीब के झोपड़ी से साँच बोलेवाला केतना मू गइलन बाकिरि साँच बोले में नावं भइल त जुधिष्ठिरे के। काहे से कि ऊ राजा रहस।'' कथाकार के जुधिष्ठिर के सत्यवादिता पर संदेह नइखे। बाकी जुधिष्ठिरे एगो सत्यवादी न रहन, उनुका अलावे कई गो गरीब लोग भी बुधराम लेखा सत्यवादी बाड़न। बाकी इतिहास-पुरान उनकर जिक्र ना करे। रचनाकार के संवेदना स्पष्टत: गरीब मेहनतकश आदमी के प्रति बा; समतावादी वेवस्था के प्रति बा। रामनाथ पाण्डेय के कथा-दृष्टि पितृसत्ता बनाम नारी-अस्मिता के द्वंद्व में नारी स्वातंत्र्य-चेतना के प्रति बा।

❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

ग्रामदेवताः भोजपुरी ग्राम्यांचल के महावृत्तांत

'ग्रामदेवता' कथाकार प्रोफेसर रामदेव शुक्ल के बहुचर्चित सामाजिक उपन्यास ह। ई उपन्यास पचास साल के आजाद भारत के युवा सपनन, आ बहुआयामी उपलब्धियन-अनुपलब्धियन के कलात्मक समीक्षा ह। एकर कथाभूमि पूरबी उत्तर प्रदेश आ बिहार के भोजपुरी इलाका बा। कथाकार रामदेव शुक्ल हिंदी आ भोजपुरी साहित्य में एगो सुख्यात नांव बा। ऊहां के नांवे हिन्दी में सोरह गो उपन्यास, छह गो कहानी संग्रह आ आठ गो आलोचना पुस्तक दर्ज बा। 'ग्रामदेवता' के अंग्रेजी में अनुवाद डॉ. धर्मपाल सिंह जी कइले बानीं। ई उपन्यास पढ़त खानि श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'राग दरबारी' के व्यंग बरबस इयाद आवेला। सामाजिक-राजनीतिक-धार्मिक-नैतिक विद्रूपता पर 'ग्रामदेवता' में चुटीला व्यंग बा जवन रचना के पठनीयता में सहायक बा। एह उपन्यास में धार्मिक पाखंड, राजनीतिक दोगलापन, सहर से प्रभावित गांवन में फैलत शराब आ देह बैपार के धंधा, गांवन में छुआछूत के प्रथा, आजादी के पचास बरिस बादो अवैध पंचाइत के माध्यम से गरीब आदमी के शोषण-दोहन, अशिक्षा-अंधविश्वास के बीच ओझा-सोखा के लूट-खसोट, दलित जातियन में परस्पर कटुता, गाँव के विकास खातिर आवंटित धनराशि के बंदरबाँट, ससुर-बहू के अनैतिक शारीरिक संबंध, कचहरी में रिश्वतखोरी, जनप्रतिनिधियन के जनधन के लूट, राजनीतिक दल के टिकट-बिक्री, संवेदनहीन डाक्टर द्वारा पइसा खातिर रोगी

www.bhojpurisahityangan.com

के हत्या, ढोंगी जनेऊधारियन के तथाकथित अछूत आ मुस्लिम स्त्रियन साथे यौनाचार आदि के कारूनिक आ घृणित दृश्य के साथ दलित युवक के पढ़े-लिखे के लालसा आ महात्मा गाँधी-अंबेडकर के आदर्श पर चल के देश-सेवा के आदर्श बा। आउर सोनमती जइसन स्त्री के चरित्र बा जे नामरद पति के मउअत पर ओकरा शव के बगल में लेट के प्रान-तेयाग दे तिया आ पांच सती अनुसूया, द्रौपदी, सुलक्षणा, सावित्री, मंदोदरी के कतार में खाड़ हो जातीया। कहीं संवेदनहीनता के पराकाष्ठा लउकत बा, कहीं समाजसेवा के उदात्त भावना, कहीं शोषण के छटपटाहट, बिलखत स्त्री के कारूणिक दृश्य, कहीं पति-सेवा के ऊच्च पारंपरिक भारतीय आदर्श। अद्भुत कोलाज बा।

उपन्यास सामान्यत: यथार्थ के सबसे सशक्त वाहक होला। निजी राग-विराग आ सामाजिक बेवहार जवना बिंदु पर मिलेला ओहिजे उपन्यास के जनम होला। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक सच्चाई के विशाल फलक पर मनई के निजी जीवन के सामाजिक जीवन से क्रिया-प्रतिक्रिया रचना में अंकित ना होई त ऊ आत्मपरक आख्यान भर रहि जाई। आ अगर वैयक्तिक जीवन के अंतरंग ना झलकी त उहो उपन्यास सामाजिक दस्तावेज से अधिका कुछ ना होई। 'ग्रामदेवता' में कथा-पात्रन के वैयक्तिक आ सामाजिक रागात्मक संबंधन के बीच पूरा सामंजस्य बा।

'ग्रामदेवता' के आरंभ एगो अवैध ग्रामीण पंचाइत के कारुणिक परिदृश्य से आरंभ होता। गाँव के ई पंचाइत अवैध सामाजिक आर्थिक सत्ता के केन्द्र के प्रतीक बा जवन नया विधान बनला के बादो अस्तित्व में बा। एह गैर कानूनी पंचाइत के संरचना पर उपन्यासकार के चुटीला व्यंग्य बा। एह पंचायत में गरीब आ कमजोर लोग मुजरिम होला। पंचायत में कवनो एगो दबंग तथाकथित मुजरिम पर आर्थिक दंड लगावेला आ दंड में प्राप्त धन के बंदरबाट क लेला। बाकी पंचन के कच्ची-पकी खिआ के मुजरिम दोष-मुक्त हो जाला। पंचायत में बइठल पंचन में केहू के चरित्र साफ-सुथरा नइखे। पंच लोग एक दोसरा पर खुलेआम आरोप लगावत बा। पंच लोग मुजरिम खोज रहल बा जवना से खाये-पीये-लूटे के जोगाड़ लागो। पंचाइत शुरू होता एह आरोप से कि 'अखरूआ के जनाना ऊंखि तुरले बिया। ओकरा पर चोरी के इलजाम बा। ई आरोप हंसी-दिललगी में उड़ि गइल। तब मोहन आरोप लगवलन बिकरम चउधरी पर कि ऊ आ उनकर बेटा चोकट घरे

www.bhojpurisahityangan.com

सुअर के गोस खइले बा। बिकरम चउधरी के बड़का बेटा मोहन बाबू पर आरोप लगावत बा कि ऊ सनीचरी के घरे पकड़ाइल रहले। सनीचरी गांव में अवैध रूप से शराब बेंचली आ देह-धंधा करेली। 'ग्रामदेवता' कुल्हि 62 इपीसोड में प्रस्तुत बा। हर एपीसोड में कई-कई कथा-उपकथा के तंज भरल गुंफन बा। कथा-पात्रन पर भरपूर हास्य-व्यंग बा। पहिला इपीसोड के शीर्षक बा 'छुट्टा सांड़'। पंचाइत में शामिल औतार बाबा के नांव छुट्टा सांड़ काहे परल एकरा वर्णन में भरपूर हास्य विनोद बा। 'छुट्टा सांड़' में बिरजू पण्डित, सतुआ काका के चरित्र के झांकी बा। ई लोग पंचाइत में दबंग पंच बा। पंडित गिरिधर चरन सतुआ काका कहे कहाये लगलन एकर रोचक वर्णन बा। ऊ जवानी में रात में धोबिया के गदहा के बच्चा खसी समझ के मार के खा गइलन। पता चलि गइल त गांव छोड़ि के भागि गइलन। कई सालि के बाद लवटले त सधुआ गइले। अब कहले कि ''ए बचवा, हम धरम कब्बो नाहीं छोड़लीं। देख बाबू! धरम बचल रही त चोरि-चाटि कइले से आ मासु-मछरी खइले से नरक नाहीं होई। सतुआ काका पंचाइत में शामिल बाड़े। पंचायत में गोजरो चौधरी बाड़न। ऊ गांव के बभनन के छोड़ि के सगरी जाति के मेहरारून के भउजाई कहे में लजालें ना। उनकर नैतिक पतन अइसन बा कि सात बरिस के बेटा के बियाह जवान लइकी से कइले आ पतोहि संगे रसलीला कइले। लइकवा लाज के मारे कोइलरी भागि गइल। बिकरम चउध री गांव के पहिले मुखिया रहले। ऊ निरवंस बाड़न। काफी धन संपत्ति बा। खइले-पीयले से ओराई ना। उनकर चरित्र के बारे में कई गो प्रवाद बा। ऊ दारू में आ लइकन के फेर में मस्त रहेलें। चउधराइन से कवनो जा के कहि दीहल कि पंचायती में केहू उनहू के नांव लेता। चउधराइन धन से मातल बाड़ी। उनका पर पंचाइत में विचार कइल संभव नइखे। पंचाइत में बइठल बिरजू बाबा से उनकर अवैध संबंधों बा। चरित्रहीन बिरजू बाबा चउधराइन के समझावत बाड़न कि ''देख चउधराइन कइसे धरम-करम का नास हो गया। अब ई पिरथिवी रसातले में जाइ। हम बाबा लोग जेह बिकरम चौधरी किहां जूठन गिराइलें सभे, ऊ भला सूअर के मास खइहें।'' ई बिरजू पंडित गांव-जवार के सोखा-ओझा, वैद-हकीम, पंच-भंडारी, पंडित-उपरोहित सब कुछ बा। मोहन बो के साथ बिरजू बाबा के नांव लेवे में सबके अंखिया चमके लागेला। तबो उनके मुंह पर उनके खिलाफ बोले के करेजा केहू के

www.bhojpurisahityangan.com

छाती में नइखे। सतुआ काका के चिंता बा कि वैश्य समाज से बाभन समाज के जवन आधुनिक रिश्ता पनपल बा ई नया गंठजोड़ बदनाम मत होखे। ई 'तेलीपट्टी बनाम बाभन पट्टी' मत बनो। सतुआ काका आधुनिक बाभन राजनीति के प्रतीक बा। ऊ सवाल उठावत बाड़ें पंचाइत में– ''सवाल एकर नइखे की मुंड़वा–कसिया तेलीपट्टी के बदनाम कइलसि। अब त बड़हन बाति बा कि हम सब बाभनन को ई सब अकलंक लगावत बाड़े सों। हम सब बैस बिरादरी में खाते हैं कि नहीं खाते हैं? अब ई स्सार कहत बा कि बैस बिरादरी के लोग सूअर खात बा। अरथ विचार करो पंचो मतलब की हम बाभन बिरारदी के बदनामी हुई कि नाहीं भई।'' बस बाबा लोग राजनीति समझ गइल आ एकजुट हो गइल कसिया के खिलाफ। कासी के डांड़ लागल। डांड़ कइसे भराई। बिरजू बाबा के भतीजा मोहन बाबू पूरा हरामी हवें। ऊ कसिया के बैल खोलि के पंचाइत में हाजिर हो गइले। गिरगिटवा चुटीला तंज कइलक, ''आउर जुटाव पंचाइति। अब बैलो से बेदखल हो जइहें सरऊ। अरे भकुआ गांव में रहि के बभनमंडली से बैर करिहे त इहे फल होई न? ई बभनमंडली जियतो खाई, मुअतो खाई। ओकर केहू का बिगाड़ी?'' उपन्यास में भोजपुरी ग्राम्यांचल के कठोर यथार्थ के सटीक चित्रण बा। बीसवीं सदी के अंतिम दसक में भोजपुरी ग्राम्यांचल कई तरह के रूढ़ियन में जकड़ल बा। एह अवैध सामंती सत्ता के प्रतिरोध के छीन स्वर भी प्रतिध्वनित होता। प्रतिरोध के स्वर कमजोर बा। गिरगिटवा अवैध पंचाइत के खिलाफ बा बाकी कमजोर बा। बभनमंडली पर टिप्पणी के बाद ऊ भाग जाता। काहे? उपन्यास में ओकर कारण दर्ज बा। गिरगिटवा के कथा बहुत कारुनिक बा। ओकर घर दखिन टोला में बा माने ऊ दलित समाज के ह। ओकर मेहरारू सुन्नर रहे। बगल के गाँव के चन्नर बाबा ओकरा से दैहिक संबंध बना लिहले। गिरगिटवा जानि गइल कि मेहरारू बेहथ हो गइल। ऊ चन्नर बाबा के मेहरारू के दान क दिहलस। कुछ दिन गाँव से भाग गइल। बाल–दाढ़ी बढ़ा के रहेला। गाँव के बहरी पीपर भीरी जाइके अकेला में रोवेला। ओकर जिनिगी चन्नर बाबा बरबाद क दिहले। ओकर पंचाइत के करी। ऊ पंचाइत के राजनीति समझत बा।

औतार बाबा के भाई धरमू बाबा मियाइन की लइकी के लेके कलकत्ता भागि गइले। धरमू के कई गो बाल बच्चा बा। उनका घर के पंचाइत के करी।

www.bhojpurisahityangan.com

कसिया पर जवन आरोप बा ओकरा बारे में अवतार बाबा काल्हु रात में कसिया से भावताव क लेले बाड़ें। पंचायइत में औतार बाबा कसिया के गऊ अदिमी बातावत बाड़न। ऊ कसिया के माफी देवे के फेर में बाड़न। माफी होई त बाकी पंचन के का लाभ होई। मोहन, बिरजू बाबा आ सतुआ काका कासी के माफी देवे के पछ में नइखन। उपन्यास एह अवैध पंचाइति के नीके तरे परदाफाश करत बा। एही बीच पंचायइत में एगो सिपाही के आ दलित टोला के वकालत के छात्र हरखनाराएन के नाटकीय प्रवेश होता। सिपाही कानून-वेवस्था के प्रतीक बा। पंचाइती से उहो कुछ माल बनावल चाहत बा। पंचाइत में कासी आ उनके मेहरारू के रोवे-कलपे से बहुत कारूनिक दृश्य बा। सिपहिया धमकावे लागल कि सबके बान्ह के थाना ले जाएंगे। वकालत के छात्र, मूस महरा के बेटा हरखू पंचाइत में अनजाने अइलन त जानल चहलन कि ''के पंच, कइसन पंचायत ह? के का कइले बा?......'' सिपाही के बात सुनि के हरखू ओकरा के झारि दिहलन- ''कौन हो जी तुम थाने ले जाने वाले? ......तुम कहां से आ गये? जाओ, भागो इहां से।'' सिपाही भागि गइल। शिक्षा से गाँव-समाज में आधुनिक चेतना आईल बा। दलित युवक हरखनारायणन में वकालत पढ़े से आत्मबल बढ़ल बा, अधिकार चेतना पनबल बा। हरखू में प्रतिरोध के स्वर ध्वनित होता। बाकी जवन हरखनारायन सिपाही के पंचाइत से डांटि के भगा देत बाड़न उहे हरखनारायण मुख्तार साहेब के अचानक पंचाइत में आवे से मुरझा जाताड़न। कथाकार रामदेव शुक्ल 'ग्रामदेवता' में मुख्तार साहब आ हरखू के डगमगात चरित्र के सटीक उद्घाटन कइले बाड़न। मुख्तार के चरित्र पर मारक तंज बा ' ''गांव के पंचइती के बाति सुनि मुख्तार साहब बहुत खुस होखेले। अबहिन कुछु गांवन में डांड़ लगवले के परथा चलि आवत बा। ओह सभ में मुख्तारो के हिस्सा होइबे करेला। ......धन के आ लाठी के जोर जेकरा बा, ओही के बाति चलेला ओही के नियाव अनियाव चलेला। ......मुख्तार साहेब एइसने गांव में जाले जहां उनकी बाति पर केहू टोकाटोकी नाहीं करे। जहां सौ रुपया डांड़ लागल रहेला उहां मुख्तार दू सौ करवा देलें आ आधा अपनहीं हड़पल चाहेले।' माने गाँवन में संविधान के शासन अबहीं पूरा तरे नइखे लागू हो पावल। निहित स्वार्थी तत्वन के विनाश नइखे भइल। मुख्तार साहेब के दोगलापन उपन्यास में उजागर बा। इहे यथार्थ के स्वर 'ग्रामदेवता' में मुखर

www.bhojpurisahityangan.com

बा। मुख्तार खुद ईमानदार नइखे। ऊ खुद अमानवीय आ संवेदनहीन बा। गरीब के प्रति ओकरा में कवनों करुणा नइखे आ उहे धरम के बात करता: ''अब गांव में धरम नहीं रह गया।'' ऊ जानत बा कि बाभन लोगिन के बे मिलवले गांव के गरीबन के लहू जोंक लेखा ना पी सके। एह से ऊ बाभन लोग के पोघलावत बा, ''धरम रहे कइसे? बाभन लोग संसकरीत तो पढ़ते नहीं तो धरम रहेगा तो कैसा रहेगा?'' मुख्तार भारतीय संविधान के लोकतांत्रिक भावना के खिलाफ बोलता: ''अब सियार-बिलार बाभन जोलहा सब बरब्बर हो गया।'' वो दलितों-आदिवासियों आ जोलहा-धुनिया के सियार बिलार के श्रेणी में राखत बा। बिकरम चउधरी पूर्व मुखिया बा। ओकरा लगे धन संपत्ति बा। बिकरम चउधरी कासी घरे सूअर के मांस खइले बा। मुख्तार कहता, ''और अधरम की बात है कि बिकरम चौधरी और बड़का पर सूअर खाने का झूठा अकलंक लगाया जाय।'' ऊ कासी पर डांड़ लगावता, ''कासी दू सौ रुपया डांड़ भरे। बिरादरी को एगो कच्ची एगो पक्की और बाभन मंडली को पक्की'' खिलाये। मुख्तार के एह अनियाव के हरखू समझत बाड़न बाकी विरोध नइखन कर पावत। दलित युवक हरखनारायन गाँधी-अंबेडकर के तरे कानून के डिग्री प्राप्त करत बाड़न। ऊ गांधी-अंबेडकर लेखा गरीब मनई के उत्थान खातिर समाज-सेवा कइल चाहत बाड़न। ऊ गाँव के हर हलचल से वाकिफ रहल चाहत बाड़े। ऊ नियाव के पक्ष में हस्तक्षेप आ अनियाव के ईमानदारी से विरोध करत बाड़न। बाकी जहां अनियाव करेवाला सबल बा, ओहिजा ऊ चुप रहि जाताड़न। 'ग्रामदेवता' उपन्यास के मुख्य किरदार हरखेनारायन बाड़न। कथाकार रामदेव शुक्ल गांधीवादी-अंबेदकरवादी दलित युवा सामाजिक-ऐक्टिविस्ट हरखनारायण वकील के मानवीय खूबियन आ कमजोरियन के बड़ी तटस्थता आ निर्ममता से 'ग्रामदेवता' में उकेरत बाड़न। हरखनारायण कवनों मनगढ़ंत किरदार नइखन। राजनीति आ नौकरशाही में उनुकर प्रतिरूप ढेर बाड़न। उपन्यास में बाल-विवाह के आलोचना बा। हरखनारायनों के बाल-वियाह भइल बा। ऊ सेयान भइलन त उनुकर बाबू गवना करावल चहलन। हरखू गवना क के घरे बहू ले आवे से इंकार कर देलन। ऊ दोसर बियाहो ना कर पवलन।

वकील हरखनारायन के दोस्त गोपाल हाई स्कूल के पढ़ाई छोड़ि के गांव से भागि गइल। दस बरिस के बाद ढेर धन कमा के गोपाल गांव

www.bhojpurisahityangan.com

लवटत बाड़न। कथाकार मुख्य किरदार हरखू के अंतरंग के चित्रित करत बाड़न। हरखू के ''मन में एक्के बाति भंवरी अइसन नाचति रहे कि ई गोपाल गांव के गोबर रहे, आजु एतना बड़हन साहेब कइसे हो गइल? ऊ गोपाल की धनदउलति से चैनहरिया गइले।'' गोपाल अपनी कमाई के भेद बतवलन। 'ग्रामदेवता' सरकारी महकमन में कर्मचारियन, ठीकदारन के लूट-झूठ के नीके तरी चित्रण करत बा। सुशिक्षित युवक, गोपाल जइसन अशिक्षित के भौतिक उन्नति से जरूर चौंधिया जइहन। गोपाल आ मोहन जइसन लोग एह सिस्टम में आगे बढ़ रहल बाड़े। ई संवैधानिक भावना के अनुकूल नइखे। 'गोपाल के कमाई' के कथा एह यथार्थ के उजागर करत बा। एही से गोपाल-कथा सुनिके हरखनारायण के धरम, नियाव, देस, गान्ही, अम्बेडकर, सत्य, अहिंसा, कुल झूठ लागे लागत बा।

बीडियो, लेखपाल अउर गोपाल जइसन दलाल गाँव के किसानन के लूट रहल बाड़े। बीडियो एह लूट में वकील हरखनारायण जइसन सामाजिक ऐक्टिविस्ट के सहमति चाहत बा। हरखनारायण के समाज के देखे समझे के द्वंद्वात्मक दृष्टि गाँव के यथार्थ के उजागर करत बा। ''जेतना उजरका कपड़ा वाला बाबू भइया लोग बा सभे बहुत खुश बा। जेतना मइलका फटहा लुंगी गंजी वाला किसान बाड़े, सबके रोंआ-रोंआ रोवत बा।''

हरखनारायण गिरगिट के हालि देखि के बदलि जात बाड़न। ऊ दिल्ली के जतरा करत बाड़न। दिल्ली में इलाका के एम पी आजादी जी बाड़न। उनकर सहपाठी रामफेर एम पी आजादी के पी आर ओ हो गइलन त गांव के गोपाल, मोहन, औतार बाबा के बाप निकरि गइलन। ईहे लोग सिस्टम के सिरमौर हो गइलन। हरखनारायण रामफेर के भागि देखि के अंदकि गइलन। बाकी उनुकर मानवीय संवेदना बाँचल बा। ऊ पढ़ि-लिख के वोकील हो गइल बाड़न। उनका लाल किला देखत खानि गांव के छंगुरा भेंटा जाता। ओकरी साथे ऊ झोंपड़ी देखे चलि जाताड़न। उहां उनुका दिल्ली के एगो आउर सत्य के दर्शन होता। 'ग्रामदेवता' में दिल्ली के स्लम एरिया के रोंगटा खड़ा करेवाला वर्णन बा।'' ओह जगह के चारू ओर बजबजात गंहात पानी सरत रहे। ओहि में सुअरि आ सुअरियन के छौना, मुरगी, ओकर चुज्जा, कउवा, गिद्ध, चिल्होरि आ कुक्कुरन के खउराहा खन्दान शहरे भरि से ले आके गिरावल कूड़ा-कचड़ा के छितिरा छितिरा के कुछु बीनत खात रहे।''

www.bhojpurisahityangan.com

पनरह दिन दिल्ली में रहि के हरखू नवका अदमी बनि के गांवे लौटत बाड़े। उनका में एगो नयका वर्गीय चेतना पनपल बा। पहिले उनकर अनुभव-संसार गांव तक सीमित रहे। पहिले ऊ अपना मन में कवनो बाति पूरा ना भइले के दोस गांव-जवार के बभनन-ठाकुर के देत रहले। अब ऊ समझे लगले कि सत्ता के असली केन्द्र दिल्ली बा आ ई कुलि गांव वाला चिरकुट बाड़न सन।'' ''असली अपरधिया कुल्हि त दिल्ली में राज करत बाड़े सं।'' एह तरह से उपन्यास सत्ता में अपराधी चरित्र के परदाफास करत बा।

सामाजिक ऐक्टिविस्ट हरखनारायण के जिनिगी में रोमांस भी बा। बे शृंगार रस के महाकाव्य पूरा ना होखे आ उपन्यास त आदमी के जिनिगी के महाकाव्य ह। आधा से अधिका उपन्यास खतम भइला पर 'ग्रामदेवता' के सशक्तनारी चरित्र सोनमती के नाटकीय प्रवेश ''गाँव भरि के भौजाई'' के रूप में होता। उल्लेख्य उपन्यास में नारी किरदार बहुत कम बा। जो बड़लो बा ऊ ऊंट के मुंह में जीरा के बराबर। सोनमती के अलावे पृष्ठ 17 पर मुड़वा के माई, पृष्ठ 16 में गिरगिट के अनाम मेहरारू, पृष्ठ 19 में बिकरम चउधरी के चउधराइन, गोजर चउधरी के पतोह, जुम्मन सेख के मुसमात (पृष्ठ 35), सहजनवा (पृष्ठ 35), सनीचरी (पृष्ठ 64), सनीचरी के पतोह (पृष्ठ 71), नेताजी के नवकी पतुरिया (पृष्ठ 74), नेता जी के सचिव के मलिकाइन (पृष्ठ 81) आदि के नांव भर उपन्यास में आईल बा। कवनों नारी-चरित्र उभरत नइखे। सोनहा के ठीकदार साहेब के बेटी के बियाह पंडित जी के पीसीएस बेटा से भईल, बाकी माई-बेटी के नांव तक नइखे। सामाजिक ऐक्टिविस्ट वकील हरखनारायन लगे कचहरी में एगो मुखर अउरत अपना मरद पर मोकदमा करे आवतिया। ओकरा गदराइल देह आ सुनरइ देखि के वकील साहेब की आंखि में जवन भूखि-पियासी ऊ मेहरारू पढ़लसि तवन सुनरता में जहर भरि देबेवाला रहे। दिल्ली प्रवास में हरखनारायन वकील के जीवनादर्श बदल गइल बा। ई मेहरारू वकील साहेब के पचास बरिस के उमिर में अउरत के भूख जगा देलक। अतना विवरण के बाद उपन्यास ओह अउरत के बारे में मौन साध लेलक। सोनमती उहे अउरत के प्रतिरूप बिया। ओह अउरत आ सोनमती में दू गो समानता बा। दूनों सुनरता के प्रतिमूर्ति बाड़ी सं। दूनों के पति नामर्द बाड़न सं। उपन्यासकार रामदेव शुक्ल मुख्य किरदार हरखनारायन वकील के यौनाकर्षण के अंतरंग चित्रण कइले बाड़ें। उनकी

www.bhojpurisahityangan.com

सगरी देहिंया यौन उत्तेजना से अइंठे लागल। अपना इ स्थिति पर ऊ खुदे लज्जित हो ताड़े: ''हरखनारायन के एगो मन ठठा के हंसल। पुछलसि का हो गान्ही महात्मा? एगो चलबिद्धर मेहरारू देखि के तोहार ई हालि हो गइल?'' सोनमती 'ग्रामदेवता' उपन्यास के महत्वपूर्ण नारी-चरित्र बाड़ी। उपन्यास में इनकर जीवन-चरित्र के पूरा वर्णन बा। ओकर जीवन वृत्तांत जिमदारी परथा में स्त्री के अधिकारहीन जीवन दुर्दशा के वृत्तांत बा। वकील हरखनारायन के आग्रह पर सोनमती आपन जीवन-वृत्तांत बतावत बिया (आगि से भरल ज्वालामुखी, सोनमती के प्रेम कहानी)। गांव में एगो जिमदार ओकरा माई के एगारह बरिस के उमिर में अपना घरे बइठा लेलक। ओकरा माई के कोंखि से जामल सब लइका-लइकीन के सउरीये घर में हांड़ी में गड़वा देति रहे। सोनमती के जनम के समय जिमदार गांव से बाहर गइल रहे। ओकरा के ओकर माई अपना बहिनी किहां भेजि के ओकर जान बचवलक। मौसी के मुअला पर सोनमती माई लगे लवटल। ओही जिमदारवा के सेयान लइका एक दिन सोनमती के अंकबारी में भरि लेलस। सोनमती मानली कि उहे ओकर असली पेयार रहे। बाकी सोनमती आ जिमदार के बेटउवा दूनों त जिमदरवे के बेटा-बेटी रहे। माने भाई-बहिन। वियाह ना भइल। सोनमती के वियाह बुद्धन से हो गइल जवन नामर्द रहलन। एहिजा टाल्सटाय के उपन्यास 'पुनरुत्थान' के मुख्य किरदार जिमदार पुत्र नेख्लूदोव आ नौकरानी पुत्री मास्लोवा के प्रेम कहानी बरबस इयाद आवता। भारत से रूस तक जिमदारन के मिलता-जुलता कहानी बा। वकील हरखनारायण के देहि उत्तेजित बा। बुनी-बरखा में काका के पलानी में सोनमती आ हरखनारायन के भेंट हो गइल। दूनों में यौन अतृप्त बा। बाकी वकील हरखनारायण आक्रमक नइखन। मुखर सोनमती उनका के आंमत्रित करत बाड़ी: ''आजु के राति एही भुसउला में काट।'' सोनमती भउजी भूसा भहरा के विछौना तइयार कऽ दिहली।

सोनमती के बाकी कहानी बहुत कारुनिक बा। उनकर कचलोहिया पति बुद्धन के दूनों गुर्दा खराब हो जाता। सोनमती के जीवन में जबर्दस्त मोड़ आवता। नेख्लूदेव लेखा उनुका अपना जिनिगी पर पश्चाताप नइखे होत बाकी आत्मा के पुनरुत्थान लउकत बा। ऊ परंपरागत भारतीय नारी अइसन सब भूख-पियास भूला के पति बुद्धन के सेवा में समर्पित हो जात बाड़ी। बाकी बुद्धन बांच नइखन पावत। खुइलन काकी खटिया पर परल बुद्धन

www.bhojpurisahityangan.com

के सर्वांग जाँच करके सोनमती से कहली: ''तहार सवांग अब नइखन।'' सोनमती पत्थल हो गइली। ऊ ना रोवली ना चिघरली। ओहिजा जुटल मेहरारू अनेक तरह के मारक व्यंग बोलत रही सं। ऊ चुपचाप पति के लास के बगल में सूति गइली। अगिलहीं छन उनके आँखि मुना गइल। ऊ पांच सती देवी लोगन के कतार में खाड़ हो गइली। 'आहि ए राम! एइसन मेहरारू के अइसन (शानदार) मउवति'' -कहि के एक जनी लजा गइली। सोनमती के प्रान-तेयाग भारतीय ग्राम्यांचल के जादुई यथार्थ बा। एह में भारतीय दाम्पत्य परंपरा के अनोखा महिमा मंडन बा।

'ग्रामदेवता' के महावृत्तांत में राजसत्ता के समानांतर अपराधीयन के सत्ता कायम हो गइल बा। अमीर-गरीब के खाई बहुते बढ़ गइल बा। लोकतंत्र खतरनाक मोड़ पर बा। एह परिदृश्य में हरखनारायन जइसन प्रतिवादी स्वर उम्मीद के किरीन लेखा लउकतबा। 'ग्रामदेवता' के केन्द्रीय थीम इहे बा।

❏❏

www.bhojpurisahityangan.com

फुलसुंघी: रंगीला जमींदार के विरक्ति-कथा

''लाल कोठी में अक्सरे महफिल जमे लागल। रात के देर से शुरू होखेवाला महफिल भोर में उड़से। एक से एक कलावन्त आवस, एक से एक बाई जी लोग आवे। ....। तबला ठनके, सारंगी रिरियाय। गला के कलाबाजी चले, आ घुंघुर के छम्-छनन् ईरानी कालीन पर ना, बाबू हलिवन्त सहाय के संगी-साथी आ आदर के साथ नेवतल बड़का-बड़का रईस जमींदार आ हाकिम हुक्काम लोग के दिल पर सनसना के चल जाय। शीशा का पियाली खनखना के खामोश हो जाय। भोर में जब महफिल उड़से त नाच-घर के ललका कालीन पर बाकी रह जाय मुरझाइल गजरा, बेतरतीब से फइलल मसनद आ जेने-तेने लोंढ़ियाइल खाली बोतल आ पियाली।''

– पृष्ठ 33; फुलसुंघी: पाण्डेय कपिल

'फुलसुंघी के बहुरेखीय कथावस्तु में एगो जमींदार के उत्कर्ष, राग-भोग आ पाप-बोध से ग्रस्त विरक्त जिनगी के वृत्तांत बा; एगो पुंश्चली में पनपल नारी अस्मिता-बोध के छवि बा त एगो आउर देह धंधा करेवाली के गिरहस्ती बसावे के अक्स बा; धन खातिर अतृप्त लालसा, छीना-झपटी, मैत्री भाव के क्षरण के कथा-बिंब बा; एगो दलित के उच्च जाति में स्वघोषित उन्नयन के कथा-प्रसंग बा; आउर एगो कलाकार के बोहेमियन जीवन जीये खातिर बेबस जिनगी के त्रासद अंत कथा बा। सब मिला के रोचक प्रेरणादायक कथा-संसार बा।

www.bhojpurisahityangan.com

आजादी के तीस साल बाद प्रकाशित 'फुलसुंघी' उपन्यास के कृतिकार मशहूर शायर-संपादक पाण्डेय कपिल के एह उपन्यास के कथानक के बारे में कहल बा कि- "एह में सन्देह ना कि ढेला, महेन्दर मिसिर, हलिवन्त सहाय आ रिवेल साहेब साँचो के हो चुकल बाड़े। बाकिर एह चरित्र के कवनो प्रामाणिक ब्योरा सामने नइखे रहल, आ एह लोगन के किस्सा किंवदन्तियन से भरल बा। ....। बाकिर, एह उपन्यास में एगो काल-विशेष के क्षेत्र-विशेष के, आ समाज विशेष के जवन तस्वीर उरेहल गइल बा, ऊ जरूर सही बा।" एह उपन्यास के लिखे खातिर लेखक के संकल्पना, प्रतिज्ञा आ रचना प्रक्रिया के विवेचना स्वाभाविक बा।

1764 ई. में बक्सर युद्ध में ईस्ट इंडिया कंपनी के सेना से बंगाल के मीर कासिम, बनारस के महाराज बलवन्त सिंह आ अवध के नवाब शुजा-उद-दौला आ मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय के संयुक्त सेना हार गइल। बंगाल आ बिहार पर ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रण हो गइल। मुगल बादशाह के सत्ता सिकुड़ गइल। सन् 1793 में लॉर्ड कॉर्नवालिस बिहार, बंगाल, उड़िसा आ वाराणसी प्रांत में जमींदारी प्रथा लागू कइलस। ईस्ट इंडिया कंपनी ब्रिटिस सत्ता के समर्थक दलाल जमींदारन के खड़ा कइलक। जमींदारी खरीदाये-बिकाये लागल। एही प्रथा के तहत शीतलपुर (छपरा) निवासी, ईस्ट इंडिया कंपनी के दिल्ली रेजिडेन्ट ऑफिस के एगो साधारण मुलाजिम बाबू बजरंग सहाय के बेटा, अफीम एजेंट के मुंशी बाबू हलिवन्त सहाय के छपरा में एगो जमींदारी खरीदाइल, बीसवीं सदी के आरंभ में। ओह घरी छपरा में अफीम एजेंट रहले रिवेल साहेब। उनकर पत्नी प्लेग से मर गइली। रिवले साहेब अकेले हो गइले। 1896 के प्लेग में हलिवन्त सहाय के माइयों मुअल रही। 15 बरिस के मुंशी हलिवन्त सहाय आ 50 बरिस के अधेड़ विधुर अफीम एजेंट रिवेल साहेब के दोस्ती अतना परवान चढ़ल कि सहाय जी के जब वियाह भइल त रिवेल साहेब कनेया के मुँह देखाई में छपरा शहर में एगो कोठी बक्शीस कऽ देलन। बाबू हलिवन्त सहाय अंग्रेजी सीखे लगले आ अंग्रेजी शैली के ठाट-बाट में रहे लगले। अफीम एजेंट के आउर किरपा भइल आ ऊ अंग्रेजी कलक्टर से सिफारिस क के हलिवन्त सहाय के छपरा कचहरी में मोख्तारी दियवा दिहले। अंग्रेजी स्टाइल में शराब पीये के आदत धराइल; जवानी में इफरात धन के स्रोत प्राप्त हो गइल। बाकिर

www.bhojpurisahityangan.com

बाल–बच्चा ना भइल आ पैंतीस बरिस के उमिर में विधुर हो गइले। रास–रंग का ओर तेजी से आगे बढ़ले। छपरा कोठी में महफिल जमे लागल। कबो बनारस से विद्याधरी बाई आवस, कबो केसरबाई आवस, त कबो मुजफ्फरपुर से मीनाबाई आ गुलजारी बाई। उनकर समउमिरिया पकड़ी के गवैया पंडित राम नारायण मिसिर दोस्त बन गइले; जिला के सब–रजिस्ट्रार राय लछुमन प्रसाद से खूब छने लागल। अतना कथा–प्रसंग जरूरी रहे, ई बतावे खातिर कि बाबू हलिवन्त सहाय कवनो जन्मजात जमींदार ना रहलन। कथा वस्तु में ऐतिहासिक संदर्भ रहलो पर 'फुलसुंघी' के सामाजिक इतिहास के कोटि में राखल मोसकिल बा, काहे कि एकरा में जन–समाज के कवनो कथा नइखे। उपन्यासकार पाण्डेय कपिल के मंतव्य बा कि "एह उपन्यास में एगो काल–विशेष के, क्षेत्र–विशेष के आ समाज–विशेष के ..... तस्वीर उरेहल गइल बा, ऊ जरूर सही बा।"

'फुलसुंघी' भोजपुरी के सुख्यात उपन्यास ह। एकर नाम में कोमल भाव समाहित बा। तितली फुलसुंघी हो ली स; फूलन पर बइठ के ओहनी के रस अपना महीन नाजुक टूंड़ से खींचत रहऽली स। सराय (छपरा) के बरियात में नाचत–गावत कोमल गुलजारीबाई में बाबू हलिवन्त सहाय के कोमल फुलसुंघी के रूप लउकल रहे। ऊ फुलसंघी गुलजारीबाई के अपना सोना के पिंजड़ा में बंद कइल चाहत रहन। ई फुलसुंघी अब नगरवधू ना रही; ओकरा पर अब उनकर एकाधिकार होई, ऊ जब चहीहें एह तितली से मनोरंजन करीहें।

बाबू हलिवन्त सहाय के जिनगी में गुलजारीबाई के नाटकीय प्रवेश उपन्यास के कथानक में एगो गतिशीलता ला देता। ऊ गुलजारीबाई से सोना के पिंजड़ा में बंद होखे के प्रस्ताव कइलन, बाकिर नकार पाके बहुत अपमानित महसूस कइलन। ऊ एगो रंडी किहाँ से अपमान के घूँट पी के छपरा लवट अइलन। ऊ बीस बरिस पहिले पैंतीस बरिस के उमिर में विधुर हो गइल रहन। पचपन बरिस के उमिर में मन में दबल–दमकल वासना उभार पर आ गइल रहे। ऊ घरे लवटले त लउकल– "घर त पूरा भरल बा, बाकिर तेहू पर हमरा मने जइसन खाली बा (पेज 19)।" ऊ ततले खवास पलटुआ से लंगोटिया इयार छपरा के डिस्ट्रिक्ट सब–रजिस्ट्रार राय लछुमन प्रसाद के बोलववलन। ऊ उनका से कहलन– "रजिस्ट्रार साहेब! हऊ सामने के मोड़

www.bhojpurisahityangan.com

के दखिनवारा जमीन सरजू का किनार ले, आज सांझ तक हमरा नांवे हो जाए के चाहीं (पेज 19)।'' हमरा अइसन बँगला बनवावे के बा, जवना में सरजू लहर मार सके। बँगला माने सोना के पिंजड़ा, जवना में फुलसुंघी पोसा सके।

जमींदार बाबू हलिवन्त सहाय के जमींदारी के कवनो विवरण नइखे; कवनो अमला-फयला के जिक्र नइखे; मोख्तार के रूप में कवनो कार्य-व्यापार के विवरण नइखे; एह से उनकर व्यक्तित्व आ कृतित्व के आउर कवनो आयाम के गवाक्ष नइखे खुलत। बस अइयासी में डूबल एगो जमींदार के उदास साँझ लउकता। अधीनस्थ परजा के परछाईयों नइखे लउकत। एगो बूढ़भँस जमींदार के आत्मकेन्द्रित जीवन शैली लउकता, जवन वासना के आग में जरऽता आ ओकर पूर्ति खातिर कवनो साजिश करे में ओकरा तनीको झिझक नइखे।

रानी विक्टोरिया के सत्ता के मजबूत पाया बाड़न जमींदार-मोख्तार बाबू हलिवन्त सहाय। रानी के खजाना में जमींदारी से मिले वाला अनुबंधित राशि पहुँचत होई, एही से सहाय जी के जमींदारी के प्रताप अक्षुण्ण बा। बाकिर 'फुलसुंघी' में ई कथा-प्रसंग अनुपस्थित बा। कथावस्तु में गागर में सागर भरल बा। कथावस्तु के गतिशीलता पाठक के कल्पनाशीलता के त्वरा बढ़ा देला; पाठक के मन अनुपस्थित कथा-प्रसंगन के खुद सृजित कर लेला। कथानक में रियाया के आवाजाही नइखे। बाकिर गुलजारीबाई के आधा रात के गझिन अन्हार में बरात के शमियाना से हजारो दर्शकन के बीच से उठवावे खातिर बहादुर जाबांज रियाया के सहयोग जरूरी बा। जमींदार बाबू हलिवन्त सहाय के जमींदारी के शान बचवलन स बगोईयाँ गाँव में बसल मगहिया डोम।

उपन्यास में बगोईया में बसल मगहिया डोमन के बहादुरी के दिलचस्प कथा विन्यस्त बा। मगहिया डोमन के कथा-प्रसंग के बिना 'फुलसुंघी' के बहुआयामी कथानक अधूरा रहीत। बुलकना के नेतृत्व में मगहिया डोमन के पचास गो वीर सराय के आंगन का बीचोबीच एक सै बारह चोप वाला शमियाना के बीच में बनल नाचघर में से मुजफ्फरपुर के ढेलाबाई के अन्हार रात में उठा लिहलन स आ हाथी पर लाद के ले भगलन स आ बाबू हलिवन्त सहाय के लाल कोठी में चहुँपा देहन स।

www.bhojpurisahityangan.com

सन अठारह सौ सत्तावन के सिपाही विद्रोह भारतीय इतिहास में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में रेखांकित बा। सन 2007 में विद्रोह के डेढ़सवीं जयंती में दिग्गज क्रांतिकारी लोगन के इयाद कइल गइल बा, बाकिर बाबू कुँअर सिंह के फौज में शामिल ई हरकारा आ खोजिआ मगहिया डोमन के योगदान के केहू इयाद ना कइलक। 'फुलसंघी' के कथानक में मगहिया डोमन के शौर्य कथा अनुस्यूत बा। ''सिपाही विद्रोह बेर, दानापुर छावनी के सिपाही जब विद्रोह कइले आ सोन पार क के आरे का ओर चलले त एह मगहिया डोमन खातिर दानापुर छावनी के पास रहे में कुशल ना बुझाइल आ ऊहो सिपाहियन का साथे सोन पार क गइले स। ....। सिपाहियन का साथ आरा पहुँच के जब एकनियों के बाबू कुँवर सिंह के फौज में शामिल हो गइले स त एकनी के हरकारा आ खोजिआ के काम पर लगावल गइल।'' माने मगहिया डोमन के जरायमपेशा वाला पुश्तैनी धंधा छूट गइल। जातिवादी पुश्तैनी धंधा जबतक ना छूटी तबतक जातिवादी सामाजिक संरचना ना टूटी। 'फुलसंघी' उपन्यास में जातिवादी पुश्तैनी धंधा टूटे-छूटे के सृजनात्मक संभावना के कथा-प्रसंग बा। ई एगो आधुनिक सामाजिक मूल्य गढ़ऽता जवना के स्रोत ऐतिहासिक प्रक्रिया में बा। कथावाचक मगहिया डोमन के शारीरिक बल, सहिष्णुता आ कर्मठता के बखान एह तरह से कइले बाड़न- ''एकनी खातिर दिन-रात बराबर रहे, राह बेराह बराबर रहे। खूँटी-खाँटी लागल खेतों में एकनी के दउड़ सकत रहले स, छिलहर घाटो-बेघाट में सरक सकत रहले स। एकनी के ना नदी-नाला रोक सकत रहे, ना काँट-कुस रोक सकत रहे (पेज 31)।'' बुलकना डोम बाबू हलिवन्त सहाय के कोठी के पहरेदार रहे। जब सहाय जी दुनियादारी से विरक्त होखे लगलन त शराब आ मांसाहार के परित्याग क देलन; युसुफ मियाँ खानसामा के हटा दिहले आ नोट के मोट गड्डी दे के पहरेदार बुलकना डोम के बिदाई क देलन। बुलकना बिहार छोड़ के महानगर कलकत्ता में जिनगी के नया राह तलाशे लागल। कलकत्ता में मुंशी शिवधारी लाल के बेटा शिवरतन प्रसाद से मिलल जे बैरकपुर छावनी ऑफिस में किरानी रहे। बुलकना छावनी के फूटल ड्रम के छावे-मरम्मत करे लागल। ऊ हुनरमंद आ कल्पनाशील बा। ऊ 'बुलाकी लाल एंड कंपनी' के बोर्ड लगा के म्यूजिकल इन्स्ट्रूमेंट मरचेंट बन गइल। बाबू हलिवन्त सहाय के देल नोट के गड्डी काम आइल। बढ़िया पइसा कमाये लागल। एगो विधवा

www.bhojpurisahityangan.com

बंगालीन से वियाह क लेलक। शिव रतन प्रसाद ओकरा कपंनी के मनेजर हो गइलन। महेन्दर मिसिर केसरबाई के बेवहार से क्षुब्ध होके बनारस से भाग के कलकत्ता चल गइलन; ओहिजा अचानक एक दिन बुलकना भेंटा गइल त ऊ चिल्ला पड़लन- ''आरे बुलकना? तें कहाँ रे?'' बुलकना हँसल- ''बाबा! तनी धीरे से बोलीं। जहँवा रउआ बानीं उहँई हमहूँ बानीं।'' ऊ मिसिर जी के अपना घरे ले गइल आ रास्ता में बोलल- ''बाबा! इहवाँ हम बुलकना डोम नइखीं। इहवाँ हम बानी बुलाकी लाल कायथ। हमरा बंगाली मेहरारू के आगा तनी एकर खियाल राखब (पेज 70)।'' जातिवादी जंजीर तूरे के जबर्दस्त कथा बा।

'फुलसुंघी' के कथानक में पूरबी के बादशाह लोक-कलाकार महेन्दर मिसिर के बोहेमियन जीवन-शैली के अभिशप्त प्रेम-कथा विन्यस्त बा। उनकर असफल प्रेम-कथा का त्रासद जीवनान्त उपन्यास के बहुत मार्मिकता प्रदान करऽता। वोइसे उपन्यास में गुलजारीबाई, केसरबाई, गवैया रामनारायण मिसिर, शंकर प्रसाद उर्फ शिवधारी लाल के जिनगी में कम त्रासदी आ मार्मिकता नइखे। एह सूची में रिवेल साहेब के नांव जोड़ल जा सकत बा। पूरबिया गायक महेन्दर मिसिर ऐतिहासिक पात्र बाड़न। वरिष्ठ लेखक भगवती प्रसाद द्विवेदी के लिखल साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से प्रकाशित (सन् 2017) मोनोग्राफ 'महेंद्र मिसिर' बा; रामनाथ पाण्डेय के उपन्यास 'महेन्दर मिसर' बा। 'फुलसंघी के कयगो किरदार ऐतिहासिक बाड़न, बाकिर उपन्यास ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण ना ह; एह से ई किरदारन के काल-खंड कुछ संकेतन से इशारा करला। महेन्दर मिसिर के ढेलाबाई उर्फ गुलजारीबाई (छपरा), केसरबाई (बनारस) के साथे असफल प्रेम-कथा का साथे कलकत्ता के मनोरमा के संग-साथ के वृत्तांत 'फुलसुंघी' में बा। एह वृत्तांत से करुणा के उद्रेक होता। करुणा महेन्दर मिसिर के प्रति आदर में तब्दील हो जाता। नोट छापे वाला प्रसंग भी बा, बाकिर अवैध नोट छपाई के अकारण स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़े के प्रति उपन्यासकार पाण्डेय कपिल सावधन बाड़न। महेन्दर मिसिर के अवसान तिथि में केहू के कवनो एतराज नइखे; ऊ 26 अक्टूबर 1946 ई. निश्चित बा। ओइसहीं उनकर गिरफ्तारी 16 अप्रैल, 1924 में कवनो शंका नइखे, ना दस बरिस जेल के सजाय में; ऊ बक्सर जेल में बंद रहले। उनकर जनम तिथि विवाद जारी बा। भगवती

www.bhojpurisahityangan.com

प्रसाद द्विवेदी उनकर जनम तिथि 16 मार्च, 1886 मनले बानीं। 'फुलसुंघी' में एगो औपन्यासिक संकेत बा: 'छपरा में जब रेलवे लाईन बिछत रहे त महेन्दर मिसिर लइकाह रहन'' (पेज 25)। ई ऐतिहासिक तथ्य बा कि छपरा जंक्शन से रिविलगंज (रवेजलंग) हाल्ट के बीच 15 अप्रैल, 1891 के लाईन खोलल गइल रहे; रिविलगंज हाल्ट से मांझी के बीच। अप्रैल, 1899 के रेल लाईन खुलल रहे। एह से सही लागत बा कि महेन्दर मिसिर के जनम 1886 में भइल रहे जब ऊ 1891 आ 1899 में लइकाहे रहन। एह विमर्श से 'फुलसुंघी के कथानक के कालखंड समझे में सुविधा होता।

गायक महेन्दर मिसिर के जिनगी पर लेखकीय टिप्पणी 'फुलसुंघी' में ना के बराबर बा। गुलजारी बाई के प्रति उनकर प्रेम एकतरफा बा। उनका गायन-कला के प्रति गुलजारीबाई मुरीद बिया। ऊ बाबू हलिवन्त सहाय के लाल कोठी में बंद उनकर रखेलिन बिया; ऊ महेन्दर मिसिर के एक तरफा प्रेम के प्रतिदान देवे में असमर्थ बिया। बाकिर ऊ उनकर मन के संताप समझत बिया। लाल कोठी में सजल महफिल के गीत-गायन ऊ खुद चिलमन के ओट से सुनत बिया। बनारस के विद्याधरी बाई लाल कोठी में मोजरा गावत रही; रामनारायण मिसिर के आग्रह पर महेन्दर मिसिर के गीत गवलन- ''जाहूँ हम जनिती अइहें रामजी पहुनवाँ त विहने सबेरे घरवा अइतीं हो लाल....।'' एह गीत से गुलजारीबाई अभिभूत हो गइल। ऊ चिलमन के ओट से बाहर निकल के महेन्दर मिसिर के सामने खड़ा हो गइल आ उनका हाथ में एगो पुड़िया देत बोललक- ''मिसिर जी! हम अपने के गीत पर स्वर्ग के सुख पा लिहनीं। हम अब एह लायक कहाँ बानीं कि अपने के कुछ दे सकीं। ई एगो छोट तोहफा बा। .....एकरा के सम्हार के राखब (पेज 39)।'' ऊहो तोहफा मिसिर जी के लवटावे पड़ल जब ऊ राय लछुमन प्रसाद से गुलजारी बाई के सतर्क रहे के कहलन। गुलजारीबाई में नारी-अस्मिता बोध जाग गइल। ऊ अपना मन के मलकिनी बाड़ी; ऊ साफ कहली- ''मिसिर जी! के अच्छा बा आ के खराब, एतना सोचे-बूझे खातिर हम लइका नइखीं। हमरा जवन ठीक बुझाई तवन हम करब (पेज 57-58)'' एह नारी-चेतना के सामने महेन्दर मिसिर के बोहेमियन मन अवाक् हो गइल। ओही रात ऊ लाल कोठी के फाटक से बाहर हो गइलन। ऊ अइसन गइलन कि गुलजारीबाई से फेर मृत्यु-सेजे पर मुलाकात भइल।

www.bhojpurisahityangan.com

महेन्दर मिसिर के मुलाकात केसरबाई से बनारस में भइल। ऊ मिसिर जी के गुरुवई में पूरबी सीखलक, बाकी असली फुलसुंघी साबित भइल। जवन बनारस के राजा से मिलत रहे ऊ कलाकार महेन्दर मिसिर से कहाँ से मिलीत। मिसिर जी मने-मने केसरबाई का ओर एक तरफा लिप्त हो गइलन। एक दिन ऊ बे बोलवले राजा के महफिल में चल गइले; केसरबाई के दुत्कार से बनारस से भाग खड़ा भइलन। कलकत्ता में देह धंधा करेवाली मनोरमा उनका के ले गइल अपना कमरा में। 'फेर ऊहे सबकुछ, आ उहे गम बिसारत जिनगी के आऊ रात बीत गइल (पेज)।'' बाकिर मनोरमा का अद्भुत चरित्र गढ़ले बाड़न उपन्यासकार। उपन्यास में मनोरमा नारी-चेतना के प्रतीक बिया। ऊ देह-धंधा के बजाय गृहस्थ-जीवन के प्राथमिकता देत बिया। ऊ जब कुछ पइसा कमा लेलक त देह-धंधा परित्याग कऽ देलक आ वियाह क के कलकत्ता से बहरी गृहस्थ जीवन जीये चल देलस। ऊ मिसिर जी के सीख देलक: ''मिसिर जी! अब केकरा खातिर उदास बानीं? पिछला जिनगी के छान्हवान्ह काट के जे आगे बढ़त जाला ऊहे जीतेला! अब रउआ आगे के देखीं आ हमहूं आगे के देखीं। सुनी, हमरा पास एतना धन हो गइल बा कि हम अब नोट छापे-चलावे के जोखिम वाला धंधा में नइखीं रहे के चाहत। अब हमरा ना छावनी में जाए के जरूरत बा, ना शराब पी के गम गलत करे के जरूरत बा। हम अपना धन का जोर से एगो मरद कीन ले ले बानी, आ अपना नया जिनगी शुरू करे जा रहन बानी (पेज 73) ।'' मनोरमा नारी-चेतना के आधुनिक चरित्र के प्रतीक बिया। महेन्दर मिसिर केसरबाई साथे मानवीय धरम के निर्वहन कइला के बाद नोट छापे वाली मशीन के साथे काहीं-मिश्रउलिया लवट गइलन। उपन्यास महेन्दर मिसिर के दस बरसीय जेल जीवन के बारे में चुप बा। बेसवा जीवन कथानक के मर्म बिंदु बा, ओहू में गुलजारीबाई के जिनगी जादे जगह घेरले बा। उपन्यास के कथाभूमि महेन्दर मिसिर, बुलकना, शिवरतन प्रसाद आ केसरबाई के चलते छपरा से बनारस, बनारस से कलकत्ता तक घड़ी के पेंडुलम लेखा डोलऽता, बाकी ओकर केन्द्रक छपरा रहऽता, जहाँ बाबू हलिवन्त सहाय, राम लछुमन प्रसाद, रिबेल साहेब, गुलजारीबाई, रामनारायण मिसिर, महेन्दर मिसिर, युसुफ मियाँ, पलटुआ, लउँड़ी जिरिया, मुंशी शिवधारी लाल, आ पहरूआ बुलकना के आवाजाही बा। उपन्यासकार के संकल्पना के मोताबिक क्षेत्र-विशेष के

www.bhojpurisahityangan.com

पहचान छपरा–रिवेलगंज–पकड़ी–शीतलपुर–काटीं–मिश्रउलिया तक बा।

नारी–विमर्श का दृष्टि से नारी बेसवा बने ना बनावल जाली। मुख्य किरदार गुलजारीबाई बेसवागीरी के धंधा में कइसे अइली – एह प्रश्न पर उपन्यास में एगो संकेत बा। शंकर प्रसाद शिवधारी लाल बन के रिवेलगंज के अफीम कोठी में मुंशीगीरी करे लगलन। मुंशी शिवधारी लाल के गुलजारीबाई में आपन दोसरी मेहरारू के सकल–सूरत लउकता। बलुक कहीं कि ऊहे रूप एकदम उजागर होत रहे। बाकी ऊ डर से कुछ बोलत नइखन। ऊ त भय से शिवधारी लाल बनल बाड़न; ऊ त शंकर प्रसाद हवन। गुलजारीबाई के माई मीनाबाई जब लाल कोठी छपरा अइली त मुंशी शिवधारी लाल के गौर से देखली आ चुपके से मुजफ्फरपुर लवट गइली।

रंगीला जमींदार बाबू हलिवन्त सहाय के बुढ़ारी के स्वाभाविक चित्रण बा। ऊ बुढ़ापा में पूजा–पाठ का ओर मुड़ गइलन। दारूबाजी छोड़ देहन। शाकाहारी बन गइलन। लाल कोठी से धीरे–धीरे महफिली बहार खतम हो गइल। निरवंसिया हलिवन्त सहाय बुढ़ारी में उदारता पूर्वक नोकर–खवास–लऊँड़ी के मोटा धन देके दुनिया से निर्लिप्त हो गइलन।

रिवेलो साहेब विधुर आ निरवंसिया रहले। आपन सब धन बाबू हलिवन्त सहाय के सऊंप के दवाई के बक्सा उठा के जनता के सेवा में लाग गइलन। आखिर समय गेरूआ धारण क लिहले। ऊ रिवेलगंज कोठी में ना मरले। उनकर समाधि रिवलेगंज में बनल। ऊ जनसेवा के एगो आदर्श स्थापित कइले।

बाबू हलिवन्त सहाय के अकूत धन अंत में गोतिया देयाद आ गुलजारीबाई के बीच मोकदमाबाजी के जनम देलक। सहाय जी जिनगी भर गोतिया देयाद से दूरी बनवले रखलन। गुलजारीबाई मोकदमा जीत गइली, बाकिर धन के केहू वारिस ना रहे।

'फुलसुघी' के अंत सुखद आ सिनेमाई बा। गुलजारीबाई रिवेलगंज से निराश होके लाल कोठी लवटल रही। कोठी के सीढ़ी प चउदह–पनरह बरिस के एगो लइका उनकर इंतजार करत रहे। ऊ आपन परिचय देलक– ''ऊ बाबू हलिवन्त सहाय के चचेरा भाई बाबू गुरुवचन सहाय के पोता ह। ओकर दादा गुजराँवाला में बस गइल रहन। प्लेग में पूरा परिवार साफ हो गइल।''

www.bhojpurisahityangan.com

गुलजारीबाई करुणा से आप्लावित हो गइली आ कहली कि हम तोहार छोटकी दादी हईं। बाबू हलिवन्त सहाय निरवंसिया के अकूत धन के वारिस मिल गइल। लइका के नाम रहे राम प्रकाश सहाय। राय लछुमन प्रसाद के बेटी से राम प्रकाश सहाय के वियाह हो गइल।

विद्याधरी बाई के शब्द में कहीं त साहेब अपना जिनगी में बरोबरे शेर लेखा लड़त रहलन आ ओही लड़ाई में सबकुछ त्याग के साधू हो गइलन। साहेब अपना जिनगी के एको लड़ाई ना हरलन। सब जीत गइलन।

बाकिर महेन्दर मिसिर? ऊ त अपना जिनकी से हमेशा भागते रहले। कतहीं छाती तान के खड़ा न हो सकले। हमेशा पलायन, पलायन, पलायन!

साहेब बोलले रहलन – ''गुलजारी! जिनगी जीये के पड़ेला। एह जीये खातिर आदमी के डेगे-डेगे लड़े के परेला। जे ना लड़ सके, ऊ एके जिनगी में हजार बेर मरेला। रिवेल साहब से इहे गुरुमंत्र हम पवले बानीं (पेज 85)।''

❐❐

पुस्तक के नाम – फुलसंघी (उपन्यास)
लेखक – पाण्डेय कपिल
प्रकाशक – भोजपुरी संस्थान, पथ संख्या- 3, इन्द्रपुरी
पटना – 24

www.bhojpurisahityangan.com

के हवन लछुमन मास्टरः वस्तु, शिल्प आ संवेदना

भोजपुरी में वर्तमान सामाजिक, प्रशासनिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक चुनौतियन के आधार बना के उपन्यास के सिरिजन कम होता। जेकरा हाथ में शासन-प्रशासन के बागडोर रहेला ऊ सामाजिक-राजनीतिक प्रश्नन के ना माने, काहे कि जदी ऊ कवनो सामाजिक-राजनीतिक समस्यन के सकार लिही त ऊ आपन समर्थित सत्ता के गुण-दोष देखे लागी आ ओकर नीर-क्षीर विवेक सक्रिय हो जाई। अइसन सत्ता समर्थक रचनाकार रचना में तटस्थ बनल रहेला, चुपी सधले रहेला। उपन्यास सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, वैधानिक जथारथ के कथा रस में लपेटल समय के सत्य के वैचारिक आत्मिक स्फोट ह। वर्तमान से भागत-भागत ऊ सुदूर अतीत में शरण लेला जवना के बारे में ओकरा लगे कवनो प्रत्यक्ष अनुभव ना होला, कथा गढ़े खातिर ऊ पौराणिक ग्रंथन के सहारा लेला। वर्तमान में नया-नया कथा-प्रसंग के अंबार लागल बा बाकी उपन्यासकार ओह कथा-प्रसंगन से निरपेक्ष बनल रहेला काहे कि ऊ वर्चस्वशाली समूह के साथे आपन अस्तित्व सुरक्षित महसूस करेला।

''के हवन लछुमन मास्टर'' कथाकार कृष्ण कुमार (आरा) के एकलौता भोजपुरी उपन्यास ह जवन अरुणोदय प्रकाशन (बक्सर) से सन्

www.bhojpurisahityangan.com

2018 में प्रकाशित बा। एह उपन्यास के कथाभूमि मध्य बिहार के भोजपुरी इलाका बा। एह कथाभूमि में शिक्षा के दुरदशा, धार्मिक पाखंड, जादू-टोना, अशिक्षा, गुंडई, दुराचार, व्यभिचार, बलात्कार, अपहरण, लूट-पाट, हत्या आ एह सब के एकल प्रतिरोध के जबर्दस्त कथा-संसार बा। एकइसवीं सदी के बिहार के देखल-चिन्हल कराहत एगो चेहरा लउकी जवन राउर मन के बेचैन क दीही।

''के हवन लछुमन मास्टर'' उपन्यास के कथाभूमि में प्रत्यक्षतः बिहार लउकत बा, बाकी ई सामाजिक, वैचारिक, शैक्षिक, अपराधिक, ध ार्मिक पाखंड, व्यभिचार, नारी उत्पीड़न आदि के अखिल भारतीय रूपक बा।

जेकर राज ओकर दोहाई। दरबारी राजे के दोहाई गाई। राज दोहाई गावत-गावत दरबारी के रचनाशीलता मरि जाला। ओकर नजर वर्तमान के सचाई देख ना पावे। ऊ नया कुछ रचि ना पावे। उपन्यास आधुनिक महाकाव्य ह। आधुनिक महाकाव्य अपना समय-समाज के दरपन ह। राज दरबारी सोरहो घड़ी विकास-विकास के मुनादी करऽता, बाकि उपन्यास 'के हवन लछुमन मास्टर' के कथा-नायक लछुमन मास्टर के बिहार के गाँव-देहात में विकास के कवनों परछाहीं नइखे लउकत। लछुमन मास्टर के लउकता कि- ''पुरा गाँव गौतम मुनि के मेहरारू अहिल्या लेखा पथरिया गइल रहे। ....। गाँव में शांति नाम के चीज इचिको ना रहे। सामाजिक ढाँचा तहस-नहस हो के लेवाड़ मार देले रहे। गाँव में ही शराब बनत रहे। जर-जवान आ बुढ़ऊ बाबा के का कहल जाउ, रेखउठान नवही रक्तबीज के खून के बूँद लेखा रोज-रोज नया पियक्कड़ पनपल जात रहन। गांजा-भांग के कालाबाजारी तीसरा आसमान प चढ़ल जात रहे। सूदखोरी आसमान छुवे के ठेकान लगवले रहे।''

गाँवन में जीये-खाये के कवनों बुनियादी आधार नइखे। ''कतना नवही असाम, गुजरात, पंजाब आ दिल्ली में नोकरी खातिर बउवाये निकल गइल रहन। फेफड़ा के ताकत लगा के रेक्सा-ठेला खींचे खातिर, चटकल में बोरा सीये खातिर, बाजार-मंडियन में पीठ प बोरा उठावे खातिर, कोठा-अटारी के चोटी प गारा-सीमेंट पहुँचावे खातिर आ ईंटा पाथे खातिर, पेट के दोजख भरे खातिर एड्स के बेमारी ले आवे खातिर लोग बम्बे से लेले तिनसिकुया तक के चक्कर लगावे निकल गइल रहन (पृष्ठ 31)।''

www.bhojpurisahityangan.com

गाँव-देहात में स्त्रीयन के इज्जत बांचल मुश्किल बा- "बेटी, बहिन आ मेहरारू के इज्जत-हुरमत में दियका लागे के शुरू हो गइल रहे। बहशियन के सोझा मानवता तार-तार हो गइल रहे। अकेले खेत-खरिहान में ओहनिन के निकलल मोसकिल हो गइल रहे।" चौतरफा गाँव अजगरन से घेरा गइल रहे।

कथानायक लछुमन मास्टर के जनम शहर में भइल रहे। ऊ शहरे में पोसाइल-पलाइल रहन। शहर के आत्मकेन्द्रित जीवन-शैली से उनकर आदर्शवादी मन घवाहिल रहे। गाँव के बारे में उनकर ज्ञान किताबी रहे। ऊ शहरे के स्कूल में शिक्षक रहन; प्रोन्नति पा के रघूआ प्राथमिक बालिका विद्यालय में हेड मास्टर के पद पर स्थानान्तरित हो गइलन। उनकर माई-बाबू के चिंता भइल कि शहर में पलाइल-पोसाइल लछुमन रघूआ अइसन सुदूर गाँव में कइसे रहि पइहें? गाँव के बारे में लछुमन मास्टर के किताब पर आधारित अवधारणा बा कि "शहर से गाँव लाख दरजे निम्मन होला। शहर लेखा भीड़-भड़ाका आ शोरगुल ओइजा ना होला। ओइजा के हवा-पानी शुद्ध होला। ओइजा घीव-दूध मिलेला। अनाज, फल आ तरकारी ताजा मिलेला। ओइजा के लोग भोलाभाला, सीधा आ निश्छल होलें (पृष्ठ 18)।"

रघूआ बालिका विद्यालय में हेड मास्टर का पद पर जोगदान कइला के बाद पहिले दिन से गाँव के बारे में लछुमन मास्टर के धारणा खंडित होखे लागत बा। पहिला सामना उनकर रघूआ बालिका विद्यालय के चउपट शिक्षा बेवस्था से होता। तीन गो मास्टर में दू गो मास्टर बिना लिखित सूचना आ अनुमति के विद्यालय से गायब मिलल। बालिका विद्यालय में मात्र तीन गो लइकी नामांकित रहली सँ। मध्याह्न भोजन खातिर चाउर के बोरिया गांजल रहे, बाकी मध्याह्न भोजन ना बनत रहे।

लछुमन मास्टर अनुभव कइलन कि सउँसे गाँव (रघूआ) महक गइल बा। ओह गाँव के पथरियाइल जिनिगी से उबारे खातिर एगो राम के दरकार ऊ महसूस करऽ ताड़े। ऊ खुद गाँव के सुधारे-सँवारे खातिर राम बने के उतजोग करत बाड़े। गाँव के सामाजिक, वैचारिक, नैतिक, सांस्कृतिक पतन से संघर्ष करे खातिर उपन्यास के नायक लछुमन मास्टर पर एगो जुनून सवार हो जाता। ऊ कवनो संगठन नइखन बनावत। विद्यालय के सुचारू संचालन खातिर ऊ खुद हेडमास्टर का रूप में सक्षम बाड़े। रघूआ गाँव के

www.bhojpurisahityangan.com

पुरुषवर्चस्वादी पितृसत्तात्मक परंपरा स्त्री–शिक्षा के विरोधी बा। लछुमन मास्टर विद्यालय में लइकिन के पढ़ावे–भेजे खातिर गाँव के अभिभावकन से खुद संपर्क करत बाड़न, बाकी अभिभावकन के स्त्री–शिक्षा विरोधी मानसिकता पा के अचरज में बाड़न। स्त्री–शिक्षा विरोधी ग्रामीण मानसिकता के उजागर करे में उपन्यास सफल बा। उपन्यास गाँव के एह जथारथ के चिह्नित करत बा। ई कृति स्त्री–शिक्षा के पक्ष में आधुनिक–सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्य रचत बा।

बालिका–शिक्षा के प्रचार–प्रसार के क्रम में कुछ अभिभावक उनका के धमकिआवत बाड़न, ''हमनिन के लइकिन के बहकावे के कोशिश मति करऽ मास्टर। ढेर ओहनिन के एडवांस बनावे के चक्कर छोड़ि द, ना त ई सउदा तोहरा खातिर महँगा परि जाई। एको दिन एह गाँव में ना टिकबऽ। ....। मास्टर बन के आइल बाड़ऽ त मास्टर लेखा रहऽ। गाँव के लइकिन के हमदर्द मत बनऽ....। (पृष्ठ 33)''। बाकी लछुमन मास्टर सामाजिक बुराईयन से लड़े के संकल्प ले चुकल बाड़न। उनका भीरी दू गो राह बा- कानून के मदद लिहल जाउ भा गाँव में कवनो राह खोजल जाउ। ऊ कानूनी लड़ाई में नइखन फँसत। ऊ स्कूल आवे वाली तीन गो लइकिन- शान्ति, प्रभा आ उषा के सफल इस्तेमाल बालिका–शिक्षा खातिर करत बाड़न। लइकिन के समझावे में लइकी कामयाब हो गइली सँ।

कथा–नायक लछुमन मास्टर स्त्रीयन के घरेलू हिंसा से प्रताड़ना के समस्या से परिचित बाड़े। रघूआ के सिजतन के घर स्कूल के करीबे बा। सिजतन रोजे सुतली रात खा गाँव में से पी–पा के घरे आवेले। एक दिन केवाड़ी खोले में उनकर घरनी लखपतिया के तनी देरी हो गइल। सिजतन अपना घरनी के अँगना में पटकि के छाती पर सवार होके मारे–पीटे लगले। लखपतिया के मर्मांतक चीत्कार सुनि के लछुमन मास्टर बीच–बचाव करे खातिर ओही रात के सिजतन के अँगना में पहुँच जात बाड़न। गाँव के जथारथ के दृश्यांकन उपन्यास में बड़ा सटीक बा। पुरुषवर्चस्ववादी गाँव में लखपतिया के बचावे खातिर केहू सामने नइखे आवत। कुछ लोग अपना खिड़की आ छत प से आवे वाला आवाज सुने खातिर जुम गइलन। टोला–पड़ोसिया आपन दरवाजा खोलि के बतकही सुनत रहे। बाकी ओह पियक्कड़ के के समझाओ! ओकर रोज–रोज के लुफुत बा। कुछ लोग लछुमन मास्टर के रोके–समझावे

www.bhojpurisahityangan.com

के कोशिश करऽता। लछुमन मास्टर अपना धुन के पक्का बाड़न। लखपतिया घरेलू हिंसा के शिकार बिया। मास्टर देह हाथ–गोड़ से मजबूत बाड़न। उनका लगे विचार शक्ति आ संवेदना के बल बा। ऊ लखपतिया के तत्काल पति के प्रताड़ना से बचा लेत बाड़न। बाकी दोसरा दिन सांझि के पियक्कड़ सिजतना अपना तीन गो संघतियन से उनका के घेरवावता। ऊ नैतिक बल से वैचारिक विमर्श के बाद सिजतन के समझावे आ आपन जान बचावे में सफल होत बाड़न। एह ममिला के ऊ वैचारिक संवाद आ आत्मबल से सुझावत बाड़न। लछुमन मास्टर के ई गाँधीवादी प्रयोग रहता। कथा–वस्तु में आदर्शवादी हृदय–परिवर्तन के अतिरेक बा, तबहूँ कवनो आउर विकल्प नइखे लउकत। कथा–वस्तु में एगो जबरदस्त रचनात्मक आग्रह बा।

उपन्यास 'के हवन लछुमन मास्टर' के कथानक के फयलाव 165 पृष्ठ में बा; ई पाँच इपीसोड्स (अध्याय) में प्रस्तुत बा; पहिला अध्याय 23 पृष्ठ; दोसरका 15 पृष्ठ; तीसरका 51 पृष्ठ; चउथा 44 पृष्ठ आ पाँचवाँ 3 पृष्ठ। हर अध्याय के स्वतंत्र कथा–वस्तु आ कथानक बा जवना के मुख्य किरदार लछुमन मास्टर बाड़े। अगिला कथानक के पछिला कथानक से पूर्वापर कवनो संबंध नइखे, येह से प्रत्येक इपीसोड अपने–आप में पूर्ण आ स्वतंत्र बा जवना के स्वतंत्रतापूर्वक पढ़ल जा सकत बा। इहे येह उपन्यास के खूबी बा।

तीसरका अध्याय में मेघू आ रघू दू सहोदर भाईयन के बीच बँटवारा के दिलचस्प कथा बा। गाँव के कवनो छोट–बड़ घटना पर गाँव–घर में हलचल मच जाला आ सभ मरद–मेहरारू खेत–खलिहान से घुनसार तक अपना मंतव्य प्रकट करे ले। कथावाचक के दृष्टि लोकदृष्टि से अलग नइखे। गाँव में सुख–दुख, घटना–दुघर्टना, अमीरी–गरीबी सभ कुछ विधना किहाँ लिखल बा। एही से जब मेघू घर के मलिकावं छोट भाई रघू के बेहिचक सउँप देलन त कथावाचक लोकधारणा के मोताबिक आपन मंतव्य प्रकट कइलक– ''बिधना के आँखि बड़ा बड़ हऽ, ऊ सभ देखत रहेलें आ ऊ जवन चाहेले, ऊहे होला। आदमी त एगो बहाना बन जाला (पृष्ठ 57)।'' ना त अकलुवा के अचार देला खातिर बड़ भाई मेघू के मलिकावँ छिनाइत? मेघू आ रघू के घर के बँटवारा से रघुआ गाँव के लोगों प्रभावित भइल। मेघू लेन देने में जतने उदार आ मानवीय रहन, उनकर सहोदर भाई रघू ओतने

www.bhojpurisahityangan.com

कड़ेर आ सवारथी। सरीखन साहु के बेटा के गवना के दिन धराइल। रघू लगे घोड़ा रहे। सरीखन रघू से गवना के नेवरतक घोड़ा मँगलन। रघू सरीखन के खूब खेल खेलवलन। आ घोड़वो ना देलन। बेचारा के मर्यादा बिगार दिहलन। रघू के मलिकांव से सभे आजिज आ के उनका दुआर प आइल-गइल छोड़ देल। मेघू बड़ा द्वंद्व में फँसी गइले। उनका अभ्यांतर के चित्रण उपन्यास के ट्रीटमेंट के सशक्त बनावता। उपन्यासकार किरदारन के परकाया प्रवेश में सफल बा आ ओकर मनोजगत के उजागर करे में सिद्धहस्त। मुखिया के चुनाव सामने बा। अब मेघू के अफसोस होता कि 'मुखिया के चुनाव के रिजल्ट भइला के बादे एह भउँजार में अझुराइल रहितीं।' मेघू आ रघू के संयुक्त परिवार के बिखराव के पीछे कवनो जबदरस्त आर्थिक-पारिवारिक कारण नइखे लउकत। संयुक्त परिवार बहुत छोट बा; दूनों भाई के एकगो संतान; मेघू के एगो बेटा उमेश; रघू के एगो बेटी कुलवंती ऊहो वियाहल। धन-जायदाद इफरात। अकलुआ के अचार देला के भावनात्मक कारण पर संयुक्त परिवार टूट गइल। एह जथारथ से इन्कार कइल मोसकिल बा। संयुक्त परिवार एगो पारंपरिक मूल्य ह जवन टूट गइल थोथा कारण से। अचार वाला ममिला ब्रेकिंग पोवाइंट हो गइल बाकी मेघू के दिलफेंक उदारता के बारे में परिवार में अंतर्कलह के एगो सुप्त धारा बहत रहे। एह अंतर्धारा के पहचाने में लेखक के एगो सफलता मिलल बा। एकर चित्रण रससिक्त बा। सवाल बा कि रघूआ गाँव के एह ममिला में बाहरी किरदार स्कूल मास्टर लछुमन कइसे जुड़त बाड़े। एगो बीज वाक्य बा- ''कइसे स्कूल प घंटन बइठा के लछुमन मास्टर ओकरा (रघू) से बतियावेलें (पृष्ठ 64)।''

रघू के बियाहल बेटी कुलवन्तिया वियाह के पांच बरिस बाद तक बे बाल-बच्चा के बिया। ओकर सास आ ननद के कुलवन्तिया- विरोधी मानसिकता के सटीक चित्रण बा। एह कथा-वस्तु के मूल-कथा में अनुष्यूत करे में लेखक सफल बा। निःसंतान नारी के प्रति रूढ़िवादी नारी में आध ुनिक संवेदना के अभाव बा। कुलवन्तिया के निःसंतानता के कारण ओकर पति रमेसर में भी हो सकेला। बिना डॉक्टरी जाँच-पड़ताल के ओकरा के लांछित कइल रूढ़िवादिता बा।

रमेसर-कुलवन्ती के कथा-भूमि सरक के रघूआ गाँव में पहुँचत बा जहाँ रघूवा के रंगमंच पर लछुमन मास्टर, रघू, महाराज, मेघू, उमेश, शिवनाथ

www.bhojpurisahityangan.com

लाल, रघू के घरनी, मेघू के घरनी, महाराज के गवनेहरि पतोहि लकलकिया, सुनैना, सरसती आपन-आपन हिस्सा के नाट्य प्रस्तुति खातिर तइयार बाड़न। एह नाटक के सूत्रधार बाड़न लछुमन मास्टर। सात पट्टी के गाँव रघूआ रमेसर के ससुरार ह। उनका रघूवा के आवते ठहरल गाँव गतिशील हो उठता। ऊ अपना ससुर रघू से अपना नवजात शिशु के हृदय के बेमारी के विस्तार से बतावत-बतावत रोवे लागत बाड़न। रघू दमाद के रोआई बरदास्त नइखन करि पावत। ऊ लछुमन मास्टर के मशवरा से गाँव के नवका सेठ महाराज के नाँवे अपना हिस्सा के चार बिगहा नाभ टोपरा रेहन राखि के दू लाख रोपया करजा ले के दमाद रमेसर के देत बाड़न। रघू एह बात के अपना बड़ भाई मेघू आ भतीजा उमेश के बतावत बाड़न। कथा में जबरदस्त तूफान आवता। रघू के घर में कोहराम मच जाता। उमेश लछुमन मास्टर आ महाराज के धमकी देता। महाराज के घरनी आ पतोहि जंग लड़े खातिर कमर कसि लेत बाड़ी। एह जंग में सुनैना आ सरसती के नाटकीय प्रवेश होता। सुनैना के आत्मवृत्त पर हलुका प्रकाश बा। ऊ पढुआ मेहरारू बाड़ी। भीतर-बाहर आवे जाये वाली। ऊ एह लड़ाई के कुलवन्ती के हक के लड़ाई समझ के रघू आ महाराज का ओर से खाड़ होत बाड़ी। ऊ रघूआ गाँव में नारी-शक्ति के एकजुट करत बाड़ी।'' एगो बेटी के हक के लड़ाई बा। एह मोका प हमनिन के एक हो जाये के बा। अन्याय के खिलाफ आवाज उठावे के बा। कुलवन्ती के समर्थन में तनिको नइखे लजाये के। ....। समय के मांग बा कि हमनिन के अपना स्थिति आ शक्ति के पहचानीं जा।'' ऊ गाँव भ के मेहरारून से दुआरे-दुआरे घुमि के समझावे शुरू कइली- ''कंधा से कंधा मिला के चलीं जा आ महाराज के खेत दखल करवा के कुलवन्ती के मदद में जुट जाईं जा (पृष्ठ 95)।''

गाँव में बहुत लोग तरह-तरह से आगि सुलगावता। रघू के विरोधी लछुमन मास्टर पर भी आक्षेप लगावता- ''बतावऽ, आन गाँव के ई आदमी आ अपना गाँव में राजनीति के दू गो जाति के लोहा गहवावे के फेरा में डाल देलें। इनका बदली के उपाई ना होई त ई सउँसे गाँव के पानी पिया के दम लिहें (पृष्ठ 99)।'' लछुमन मास्टर से बेसी काम सामाजिक ऐक्टिबिस्ट नारी अधिकारवादी सुनैना लकलकिया के जोड़ी कर रहल बा। ऊ दूनों बभनौटी से लेले चमरौटी तक कुलवन्ती के पक्ष में गाँव के मेहरारू-लइकी के एकजुट

www.bhojpurisahityangan.com

करे में लागल बाड़ी सँ। बाकी ऊ कानून के सहारा नइखी स लेत। पैतृक धन में कुलवन्ती के कानूनी हक बा। तबो सामाजिक समर्थन बिना उमेश के गिरोहबंदी के खिलाफ, टिकल मोसकिल। लछुमन मास्टर के वैचारिक समर्थन बा। लेखक के रचना कौशल पोढ़ बा, काहे कि कानूनी हक होइलो पर पुश्तैनी जमीन–जायदाद में लइकिन के हक मिलल मोसकिल होला। एह से सुनैना–लकलकिया वाला आख्यान कल्पनाशील होइलो पर रचनात्मक बा। गाँव से मेहरारू–लइकिन के दल सुनैना के उकसावला से रघू के बूंट–मटर लागल चार विगहवा खेत में पहुँच गइल। जोजना का मोताबिक महाराजो हर–बैल लेले जुम गइलें। लछुमन मास्टर स्कूल बन कइलें आ लइकन के लाइन लगवले पीछा लाग गइलें। केहू सोझा ना आइल। रघूवा के लोग तमासबीन बनि के रह गइल। लछुमन मास्टर स्त्री–हक खातिर लड़त लउकत बाड़न।

चउआलीस पृष्ठ में फयलल चउथा अध्याय रघूनी ब्रह्म मेला में फयलल अंध–विश्वास, जादू–टोना, भूत–प्रेत, ओझा–डाइन, तंत्र–मंत्र, यौन–शोषण, दुराचार, व्यभिचार के परदाफाश पर केन्द्रित बा। उपन्यास के कथानायक लछुमन मास्टर रघूनी ब्रह्म के मेला घूमे के प्लान मनहीं–मन बनावत बाड़े। स्कूल के व्यस्तता से समय ना निकाल पावत रहन। ऊ गुरु पूर्णिमा धूम–धाम से स्कूल में मनावत बाड़न। ऊ अपना स्कूल के लइकन के गुरु पूर्णिमा आ गुरु के महत्व समझावत बाड़न। स्कूलन में गुरु पूर्णिमा मनावे के परिपाटी नइखे, ई एगो खास दल के लोग मनावेला। एह लेख के सीमा में एकर विशेष विवेचना प्रासंगिक ना होई।

गुरु पूर्णिमा के दिन कथानायक लछुमन मास्टर रघूनी ब्रह्म मेला के दृश्य देखि के अचंभित बाड़न। उनकर खोजी मन सांझ भइला का बादो जादू–टोना, ओझा–डाइन, भूत–प्रेत के जथारथ जाने खातिर बिलम जाता। एह क्रम में ऊ रघूनी ब्रह्म आ होरिल सिंह के बगइचा के उत्पत्ति आ विकास के रोचक वर्णन करत बाड़न। भीखमंगा रघूनी बाबा पीपर के एगो गांछ तर कइसे रघूनी ब्रह्म के रूप में स्थापित भइलन एकर दिलचस्प कथात्मक प्रस्तुति बा। जीयत रघूनी बाबा भीख मांग के खात रहन आ चोर–चाई से डेरात रहन। ऊ बुढ़ारी में नन्दकिशोर लाल के दालान में शरण ले लन। एक रात बरसात में दालान के पलानी भँस गइल; रघूनी बाबा पलानी के मलबा में जँता के मू

www.bhojpurisahityangan.com

गइलन। मूअला पर ब्रह्मम बन के ताकतवर हो गइले। रघूनी बाबा के ब्रह्म बनला के आख्यान गढ़ल गइल।

लछुमन मास्टर नियतिवादी बाड़न। अपना आख्यान में ऊ बार-बार नियति के सामने नतमस्तक होत बाड़न। एह विज्ञान आ तकनीक के विकास के जुग में पढ़ल-बेपढ़ल मरद-मेहरारू के जादू-टोना, भूत-प्रेत-डाइन, ओझा-गुनी पर विश्वास करत देखि के ऊ हतप्रभ बाड़न। उनकर मन बचैन बा। ऊ रघूआ गाँव के मरद-मेहरारू के अंध-विश्वास के मकड़जाल से मुक्त करावे के संकल्प लेत बाड़न। एह अभियान में के उनका के साथ दिही। उनका राजा राम मोहन राय, मदन मोहन मालवीय आ महात्मा गाँधी इयाद आवत बाड़न।- 'राजा राम मोहन राय त अकेलहीं सती प्रथा के बन्द करवा देलें। मदन मोहन मालवीय अकेलहीं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय खड़ा क देलें। गाँधी जी भारत से अँग्रेजन के तड़िया के देश आजाद करवा दिहलन।

ऊ रघूआ गाँव के सुधारे के अभियान में लागि जात बाड़न। ऊ विद्यालय शिक्षा समिति के मीटिंग में अतिरिक्त एजेंडा पर ऊ सदस्य लोगन के सहमति प्राप्त क लेताड़न। लछुमन मास्टर रघूनी ब्रह्म मेला के वृत्तांत विद्यालय शिक्षा समिति के मीटिंग में पेश कइलन- ''मेहरारून के अस्मत खुलेआम होरिला के बगइचा में बिका रहल बा। ....। रघूवा के भी मेहरारू-लइकी जरूर ओइजा जात होइहें। ....। रवा सभे कइसे एह बात के बरदास क लेत बानीं, ई सोचि के हमरा अचरज होता। देश-दुनिया जहवाँ हतना आगा बढ़ि गइल ओइजे हम-रवा काहे अतना पिछुआ गइनीं जा। विज्ञान आ टेक्नोलोजी घर बइठल सभ चीज मुहैया करा रहल बा। ओइजे हमनी के कइसे भूत-प्रेत, जादू-टोना, ओझा-डाइन प विश्वास क लेत बानी जा।'' ऊ आगे समझावत बाड़न- ''हमनिन के भेजा में सोचे-विचारे के शक्ति बा। लोगन के जीवन में बेआपल एक तरह के ढोंग, पाखंड-आडंबर आ अंध विश्वास के पर्दाफास होखे के चाहीं। ....। भूत-प्रेतन के बारे में आज तक कवनो वैज्ञानिक चाहे तार्किक आधार केहू के नइखे मिलल। ई सभ मानल अंधविश्वास ह। ......। एह से आईं जा हमनिन के एके साथे हाथ उठा के संकल्प करीं जा कि रघूवा के मरद-मेहरारू के भूत-प्रेत के अंधविश्वास से बिना मुक्ति दिअवले आपन हाथ एह निम्मन काम से ना पीछा खींचबि जा।'' एह तरह से कथावाचक आदमी में वैज्ञानिक टेम्परामेंट के विकास

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर प्रयत्नशील बा। ई आधुनिक जीवन मूल्य बा।

लछुमन मास्टर के व्यक्तित्व में अस्तित्ववादी अंतर्विरोधो बा। जे आदमी आधुनिकता, विज्ञान, टेक्नोलॉजी, कर्मशीलता के बात करत बा, ऊहे आदमी रघूनी ब्रह्म मेला में निम्मन-निम्मन घरन के सुघर-सुघर मेहरारून के झूमत आ अन्हार होते होरिला के बगइचा में ओझन के साथे हमबिस्तर होत देखि के सोचता कि ''कइसे नियति अबले अपना नियत प रोक लगवले बा (पृष्ठ 130)।'' संतान के बारे में ओकर सोच बा- ''किस्मत में लिखल होई तबे सन्तान के मुँह देखबे। ....। देले होइवे तब पइबे।'' विधवा स्त्री के प्रति सामाजिक-पारिवारिक दुर्व्याहार से लछुमन मास्टर आहत बाड़ें। ऊ स्त्री के वैधव्य के नियति के नियम बतावत बाड़न- ''नियति के नियम रोके के शक्ति त ओकरा में नइखे। (पृष्ठ 131)'' एह तरह के आउर कथा दृष्टि के उदाहरण बा। एह अध्याय के कथा शैली पर निबंधात्मकता हावी बा।

उपन्यास के अंतिम पाँचवाँ अध्याय के फयलाव 33 पृष्ठ में बा। रघूनी ब्रह्म मेला के ढोंग-पाखंड कथा से रघूवा गाँव के लोगन के लछुमन मास्टर सचेत कऽ दिहलन चउथा अध्याय में। बाकी रघूवा गाँव के सांस्कृतिक-नैतिक पतन अबहीं खतम नइखे भइल। अबहीं पुंश्चली लटगेनिया, आवारा बिगना, हिरोइनची टिमिला आ ओकर संघतिया ले रहन स। अब लछुमन मास्टर के सामाजिक कार्यभार बा रघूआ गाँव के हिरोइनचियन, आ पुंश्चलीयन से मुक्त करावे के। बइसाख के भरल दुपहरिया में लछुमन स्कूल में आराम फरमावत रहन। ऊ रघूवा के लुक्कड़न के आँख के किरकिरी भइल रहन। रघूवा के लुक्कड़ पतित लटगेनिया के दुपहरिया में लछुमन मास्टर लगे भेजत बाड़न स। मास्टर सचेत बाड़न। ऊ लटगेनिया के डांट-फटकार के भगा देत बाड़न। अध्याय के आरंभ में बइशाख के दुपहरिया के अनुपम वर्णन बा। प्रकृति के सटीक चित्रण में लेखक के समरथाई प्रशंसनीय बा। एकरा बाद लेखक लटगेनिया के जनम-कुंडली खंघारत बा। वियाहल जवान लटगेनिया नपुंसक पति के छोड़ि के नइहर रघूवा में आन्हर भेभर बूढ़ बाप के घरे रहतिया। अफीमची बिगना ओकर देयाद ह। ऊ बाप साथे बहरा रहत रहे, बाकी कुसंघत में आवारा हो गइल त बाप ओकरा के पुश्तैनी गाँव रघूवा पहुँचा देलन। लटगेनिया आ बिगना में अनैतिक संबंध स्थापित हो गइल। दरअसल, लटगेनिया आ बिगना के चारित्रिक पतन के

www.bhojpurisahityangan.com

कथा सात पट्टी के रघूवा गाँव के चारित्रिक पतन के प्रतिबिम्ब बा। गाँवे के आवारा हिरोइनची लइकन लटगेनिया साथे सामूहिक बलात्कार करत बाड़न स। लेखक बलात्कार प्रसंग के एकक घटना के रस ले ले के सात पृष्ठ में मसालेदार वर्णन कइले बाड़न। ओइसहीं लटगेनिया आ बिगना के अनैतिक शारीरिक संबंधन के वर्णन अश्लीलता के कीमत पर बा। बलात्कार आ व्यभिचार के बहुत बोल्ड चित्रण बा।

लटगेनिया के परिवार निम्न वर्गीय बा। घर में कमाये जोग मरद–मानुस ना। घर के समूचा बोझा मतारी–बेटी के कपारे। खेत में के वाकयात के बाद लटगेनिया रघूवा गाँव के 'गजटेड' लइकिन के कटेगरी में आ गइल। लटगेनिया के घर लफुअन के अड्डा बन गइल। रघूवा गाँव के समाज दबंगन के हिंसा के मौन स्वीकृति दे देलक। लटगेनिया खाटसायी हो गइल। एह हिंसा के चुनौती लछुमन मास्टर स्वीकार करत बाड़न। एक दिन 'होत पराते ऊ चटकवाहे ओकरा दुआर पर पहुँच गइलें (पृष्ठ 160)।' रघूवा गाँव के इतिवृत्त में एगो जबरदस्त नाटकीय मोड़ आवता। कथा साहित्य के पवित्र दायित्व बा कि ऊ अपना समकालीन समय आ समाज के तटस्थ बेबाक विवेचनात्मक समीक्षा के सर्जन करे। एह सर्जनात्मक सामाजिक कार्यभार से कवनो साहित्यकार पलायन ना कर सके। 'के हवन लछुमन मास्टर' उपन्यास के कथा–भूमि बिहार के बक्सर जिलान्तर्गत स्थित सात पट्टी के गाँव रघूवा बिहार के गाँव–देहात के सच्चा रूपक बा। बटोरना जइसन अपहरण, हत्या, लूट आदि के अंजाम देवे वाला अपराधीयन के गिरोह तंत्र के संरक्षण में उग आइल बा। उपन्यास में एही जथारथ के विवेचनात्मक समीक्षा रचले बाड़न कथाकार कृष्ण कुमार।

उपन्यास के अंतिम अध्याय में कथानायक लछुमन मास्टर यौन रोग पीड़िता लटगेनिया के इलाज खातिर रॉबिन हुड के भूमिका में आ जाताड़न। लटगेनिया के प्रति रघूवा गाँव के केहू के कवनों सहानुभूति नइखे। गाँव में केहू संवेदनशील नइखे लउकत। गाँव सामाजिक–सांस्कृतिक क्षरण के आगोश में बा। लछुमन मास्टर के मानवीयता उफान पर बा। ऊ लटगेनिया के इलाज पटना में निजी खरच कर के करावत बाड़न। ऊ मानवीय संवेदना के पुंज बाड़न। जब लटगेनिया यौन रोग से मुक्त हो के स्वस्थ हो जातीया त ओकरा आचरण व्यवहार में रचनात्मक सुधार होता। गाँव के लफुअन के उकसावे पर

www.bhojpurisahityangan.com

बटोरना गिरोह ओकरा के अपहृत कऽ लेता। मेघू के बेटा उमेशवा लछुमन मास्टर से खार खइले बा। उमेशवा से सुपारी पा के बटोरना गिरोह मास्टर के आधा रात में हत्या के उदेस से अपहरण करऽता। भय से लटगेनियों गिरोह में शामिल बिया। ओकरा हाथ में बटोरना के देल दाब बा। कथा अपना रोमांचक चरमोत्कर्ष पर बा। मोका पा के लटगेनिया बटोरना के मुड़ी दाब के जबरदस्त प्रहार से धड़ से अलग कऽ देतिया। लछुमन मास्टर बांच गइलन। लटगेनिया उनका रिन से उरिन हो गइल। बाकी लटगेनिया लछुमन मास्टर से नायकत्व छीन लेलक।

उपन्यास के नायक लछुमन मास्टर स्त्री-शिक्षा, स्त्री-अधिकार के पक्ष में संघर्षशील बा। ऊ स्त्री के उत्पीड़न, यौन शोषण आ भ्रष्टाचार के खिलाफ अकेले लड़े खातिर सोरहो छन तत्पर बा।

ठेठ भोजपुरी शब्दन पर लेखक के जबरदस्त पकड़ बा। ऊ भोजपुरी भाषा भोजपुरी भाषा जइसन लिखेलन। भोजपुरी शब्दन के बरते में ऊ माहिर बाड़न; जइसे: अकियावत, कचाइन, धमस, दवरे पर, लूक (लू), अन्हार, दुलकी चाल, गोएड़ा, फर-फराकित, बतकही, सजाव दही, सेकराह, महटिआइल, भभकत, रेंड़ा, गोभ, पतौखिआइल, भोरहरिया आदि-आदि। अंग्रेजी, उर्दू-फारसी के शब्द जवन लोकभाषा में पच गइल बाड़न स, ओहनी के प्रयोग में निठाह निडर बाड़न। ऊ लोकजीवन में पेहम मुहाबरन-लोकोतियन के प्रयोग में सिद्धहस्त बाड़नः भूख त छूंछ का, आ नीन त खरहर का; बिलाई के भागे सिकहर टूटल; रोवे के मन रहे, तले अँखिये खोदा गइल; केहू के बैंगन बैरी आ केहू के उहे पथ्य। उपन्यास के गद्य में प्रवाह बा।

▫▫

संदर्भ - के हवन लछुमन मास्टर (उपन्यास)

लेखक - कृष्ण कुमार

प्रकाश - अरुणोदय प्रकाशन, बक्सर- 802201 (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

अछूतः अस्पृश्यता के सामाजिक समाधान

वरिष्ठ भोजपुरी साहित्यकार सूर्यदेव पाठक 'पराग' के उपन्यास 'अछूत' भारतीय समाज में अस्पृश्यता, अशिक्षा, गरीबी-अमीरी के खाई, शोषण-उत्पीड़न, जात-पाँत, अंतर्जातीय वियाह के चुनौतियन से उत्पन्न सामाजिक तनावन से जूझत बा। एह उपन्यास के कथानक संविधान सम्मत प्रगतिशील चेतना के वाहक बा। छुआछूत के बीमारी से भारतीय समाज अतीत काल से ग्रस्त बा। महात्मा-ज्योतिबा फुले, महात्मा गाँधी, डॉ. भीमराव आंबेदकर सहित अनेक संत मनीषी जूझत आ रहल बा। आजादी के बाद भारतीय संविधान बनल जवना में धर्म, जाति, लिंग, वर्ण, भाषा के आधार पर नागरिक-नागरिक के बीच भेद-भाव के मनाही बा। सन् 1955 में अस्पृश्यता निवारण कानून बनल। बाकी कानून बनावे से पितृसत्तात्मक वर्ण-व्यवस्था पर आधारित सामाजिक अवधारणा में परिवर्तन ना आइल। समाज के संवेदना के निर्माण में साहित्य के महत्वपूर्ण भूमिका बा। 'अछूत' के कथा-वस्तु उपन्यास के उल्लेखनीय आ सार्थक बनावता।

'अछूत' के कथानक में चार गो स्वायत्त कथा-बिंबन के संयोजन बा- (1) पूर्व जमींदार बाबू उजागर सिंह के परिवार से दलित-भूमिहीन रधिया-किसुनवा के परिवार के मालिक-मजूर के अंतःसंबंध, (2) बटेसर काका के खेत में रधिया के बकरी चरे के प्रसंग आ बटेसर काका के सामंती धौंस आ रधिया के प्रतिरोध, (3) हरिजन टोला में शिक्षा के प्रति प्रतिबद्ध

www.bhojpurisahityangan.com

इस्कूल मास्टर के पदस्थापना, (4) रतन पाँडे-भगिया (दलित रधिया के बेटी) के प्रेम-प्रसंग आ अंतर्जातीय वियाह प्रसंग। एह चारों कथा-बिंबन में पाया पर 'अछूत' उपन्यास के स्थापत्य कला संतुलित बा। एह चारों कथा-बिंबन के संयोजित कइल एगो साहित्यिक साधना के प्रतिफल बा।

1980 के दशक में प्रकाशित 'अछूत' के कथा-वस्तु से बिहारी समाज के सामाजिक-आर्थिक यथार्थ के दरपन में भारतीय समाज के सामंती सिस्टम के अछुण्ण रहला के प्रमाण मिलत बा। पूर्व जमींदार बाबू उजागर सिंह के भौतिक-शैक्षिक उन्नति पहिले लेखा जारी बा। उनुका शान-शौकत में कवनों कमी नइखे। बाकी बाबू साहेब के परिवार के उन्नति के बरक्स दलित रधिया-किसुनवा के जिनिगी में कारूनिक ठहराव बा। गाँव के हरिजन टोला में गरीब-शोषण आ अशिक्षा के अँधकार ओइसहीं बा जइसन स्वतंत्रता के पहिले रहे। बाबू साहेब के बड़ लइका गोपाल पढ़-लिख के एम.बी.बी.एस. डॉक्टर हो गइल बाड़न। छोट बेटा श्रीपाल बी.ए. के विद्यार्थी बाड़न। उनुका साहित्य आ नेतागिरी के चस्का बा। एकरा बरक्स दलित भूमिहीन किसनुवा आ रधिया अशिक्षित बाड़े सँ। ओकनियो के दू गो बेटा रघूआ-जगुआ बाड़े सँ। इस्कूल जाये की उमिर में ऊ बकरी चराव लेस। किसुनवा के एगो बेटी भगिया बिया, 15 बरिस के; ऊ पढ़े ना बलुक सामंत किसानन के घरे कूटान-पिसान क के परिवार के आजीविका खातिर सहयोग करली। रधिया के गोदी में एगो बच्चा बा। बाबू साहेब के दू गो बेटी बा लोग - विजया आ सुधा। विजया इंटर में पढ़ली आ सुधा मैट्रिक में।

बाबू उजागर सिंह के परिवार आ राधिया-किसुनवा के परिवार के बीच सामाजिक-आर्थिक-शैक्षिक खाई के कारुणिक कथा-सत्य बा 'अछूत' में। आजादी के तीन दशक बाद भी रधिया- किसुनवा-भगिया के ना काम के घंटा निर्धारित बा, ना मजदूरी के कवनो रेट बा। मजदूरी के रेट के बारे में उपन्यास चुप्प बा। किसुनवा बाबू साहेब के हरवाही-चरवाही दूनों करत बा। बाबू साहेब के दुआर पर चार गो बैल आ एगो भईंस सालो भर रहतिया। ट्रैक्टर भी बा। बिहार के बहुत इलाका में हरवाहा आ चरवाहा के अलग-अलग काम बा। किसुनवा के पत्नी रधिया बाबू साहेब किहाँ अनाज-पानी, फटकल-बनावल, कूटल-छाँटल, लइकन के गँड़तर धोअल, पतोह के लूगा-कपड़ा फींचल, अबटन लगावल; डॉक्टर गोपाल के छोट

www.bhojpurisahityangan.com

लइकन के दूध पियावल आदि कुल्हि काम करत बिया। तवनो पर ओकरा पेट भरे भर मजूरी नइखे मिलत। बाबू साहेब के पतोह नकचढ़ी बाड़ी। उनुका में कवनो मानवीय संवेदना आ विवेक नइखे। उनुका खाली काम चाहीं। ऊ रधिया के काम से संतुष्ट नइखी।

कहानी भा उपन्यास साहित्य के कथा-रूप ह। कथा-साहित्य में कथाकार कवनो ना कवनो रूप में उपस्थित रहेला। कभी कवनो पात्र के रूप में ना त कथावाचक के रूप में। कथावाचक के तटस्थता कथा के विश्वसनीयता खातिर आवश्यक शर्त होला। 'अछूत' के कथा में कथावाचक बाबू साहेब के परिवार के महिमामंडित करत बा। उजागर सिंह के परिवार रधिया-किसुनवा के भयानक शोषण करत बा। एकरा बाद भी कथावाचक किसुनवा के 'जाँगर चोर' कहे में संकोच नइखे करत। आ जसुमती के उदारता के बखान!

हरिजन-आदिवासी के शिक्षा के बारे में सरकारी नीति खबर में प्रकाशित बा। उपन्यासकार बाबू उजागर सिंह आ उनुकर पत्नी जसुमती के मनोदशा के यथार्थवादी चित्रण करे में सफल बानीं। सामंती मनोविज्ञान के परखे में उनुका पूरा सफलता मिलल बा। जसुमती के टिप्पणी उनुका वर्णवादी माइंड सेट के उजागर करता- ''सरकारो के कुक्कुरे नु कटले बा। एकनी के भला पढ़ला बिना कवन अकाज बा।'' बाबू साहेब किसुनवा के सै रोपया कर्ज देवे के मजबूरी समझत बाड़न। देश-दुनिया के हवा से ऊ परिचित बाड़न। उनुकर मनोविज्ञान के उपन्यासकार 'पराग' जी ठीक-ठीक एक्सपोज करत बानीं, ''एकरा (किसुनवा) के छोड़ला पर कवनो दोसर नोकर मिली कि ना, इहे सोच के छोड़ले बानीं।'' कथावाचक आगे आउर जसुमती के दलित विरोधी मनोदशा के पर्दाफाश करत बा। बाबू साहेब अखबार के जवन खबर जसुमती के पढ़ के सुनवले रहन ऊ बात ऊ किसुनवा से कहे में भटभटात बाड़ी। उनुका डर लागत बा कि किसुनवा, ''कहीं खबर सुन के ई अँखफोर मत हो जाऊ। कहीं लड़िकन के पढ़ावे के सुविधा के बारे में जान के ई रघूआ आ जगुआ के पढ़ावे-लिखावे के ठान लिहलस त एकरा बाद हमरा घर के नोकरी कवन करी।'' जसुमति के चरित्र में दोहरापन बा। उनुकर ऊपरे जवन चरित्र के उल्लेख बा, ठीक ओकरा विपरीत ऊहे जसुमती किसुनवा के अखबार के खबर के आलोक में मशविरा देवे लागत बाड़ी कि

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ बकरी बेंच देओ आ लइकन के नावँ इस्कूल में लिखवा देओ। ऊ अपना अंतर के सामंती क्रूर मनोभाव के छिपा के किसुनवा के सामने उदार सामंती चेहरा के निदर्शन करावत बाड़ी।

गाँव में क्रूर सामंती अवशेष के प्रतीक बाड़न बटेसर काका। सात बरिस के रघूआ आ पाँच बरिस के जगुआ गरीबी के कारण बकरी चरावे खातिर अभिशप्त बाड़न स। ओकनी के माई-बाप के जाँगर ठेठवला के उचित दाम नइखे मिलत। अबोध रघूआ आ जगुआ के बकरी एक दिन बटेसर काका के खेत में पड़ गइली सँ। काका दूनों अबोध लड़िकन के खूब गरियइलन आ मरबो कइलन। गलती के त दंड देइये देलन। ओकरा बादो रधिया के घरे जाके ओरहन देलन। बटेसर काका के सामंती वर्णवादी वाणी के उपन्यास में बानगी बा, ''तहरा लोगन पर बात के असर ना पड़े, लात के असर पड़ेला। लात के देवता बात से ना मानस।'' रधिया के दलित-चेतना जाग्रत होत बा। ऊ बटेसर काका के वर्णवादी गाली के मर्म समझत बिया। ऊ उनुकर सटीक प्रतिवाद करत बिया, ''हमनी के लात के देवता हईं; इ बात अपना दिमाग से निकाल दीं। ....जइसन आपन इज्जत ह तइसन दोसरो के बूझे के चाहीं काका।'' रधिया के शालीन आ संयमित प्रतिवाद पर बटेसर काका के संविधान विरोधी सामंती माइंड सेट आऊर भड़क जाता। उपन्यासकार प्रतिगामी सामंती माइंड सेट के सटीक उजागर करत बानीं। बटेसर के माइंड सेट के धौंस देखीं, ''तोरे कहला से सभ लोग बराबर हो जाई रे? हमरो बेटा भगई पहिर के खेते-खेते बकरी चरावत फिरे ले स का? हमनीयों के मेहरारू, दोसरा के खेत में रोपनी सोहनी करत फिरत बाड़ी स का? तोहनी के दिमाग आसमान पर चढ़ गइल बा।''

बटेसर काका के सामंती आचरण के कवनो जवाब नइखे। उनुका खातिर देश ना आजाद भइल बा, ना कवनो जनतांत्रिक शासन के स्थापना भइल बा। अछूत के समस्या बहुआयामी बा। मेहनत के त शोषण बड़ले बा, गरीबी के चलते सामाजिक उत्पीड़न भी बा।

उपन्यास के कथा में एगो नाटकीय मोड़ तब आवत बा जब गाँव में हरिजन टोला में एगो नया स्कूल मास्टर के पदस्थापना होत बा। नया इस्कुल मास्टर जाति के ब्राह्मण हउवन, बाकी ऊ आधुनिक चेतना से लैश, दलित शिक्षा के प्रति समर्पित आ सामाजिक बराबरी के प्रतीक बाड़न। हरिजन टोला

www.bhojpurisahityangan.com

के घर-घर में जाके, अभिभावकन से मिल के, आदर सहित बतिया के, लइकन के इस्कूल में नाँव लिखावे के आग्रह करत बाड़न। गाँव में खलबली मच जाता। हरिजन टोला में अजीब गतिशीलता आवता। गाँव के उच्च जाति के लोग दलित शिक्षा के विरोधी बा। बटेसर काका के एगो प्रतिरूप बाड़न खेलावन बाबा। उनुका विचार से हरिजन के लड़िकन के बढ़ावा दिहल अपना गोड़ में टाँगी मारल बा। गजाधर मिसिर भी एही सोच आ चिंतन के बाड़े। बाबू उजागर सिंह के दलित शिक्षा के बारे में का विचार बा, स्पष्ट नइखे। दलित शिक्षा के विरोधी लोग इस्कूल मास्टर के विरोध में डिपुटी साहेब के पास दरखास्त देत बा। इ लोग दरखास्त पर कुछ अपढ़ दलित लोग के अँगूठा के निशान प्राप्त कर लेत बा। स्कूल मास्टर में चरित्रबल आ नैतिक बल बा। डिपुटी साहेब से मिलके ऊ स्थितियन के साफ करत बाड़न। सामंती समाज के दाल नइखे गल पावत। बाकी सामंती समाज के असली चेहरा उजागर करे में रचनाकार सफल रहत बा।

उपन्यास के कथा के अंतिम परिदृश्य में बसावन पाँड़े के पुत्र रतन के प्रवेश कथा रस में गतिशीलता ला देता। 'अछूत' के मूल प्रतिज्ञा बा कि समाज में छुआछूत के सामाजिक समाधान होखो। बाबा साहेब आंबेडकर जाति सिस्टम के खतम कइल चाहत रहन। बिना जाति-सिस्टम के खतम कइले अस्पृश्यता के निवारण संभव नइखे। इ उपन्यास अंतर्जातीय वियाह के पक्ष में संवेदना के निर्माण कइल चाहत बा। एह खातिर कथानक में एगो आदर्शवादी प्रेम-कथा ब्राह्मण-युवक आ दलित युवती के प्रेम कथा पहिला ना ह। ब्राह्मण विश्वकर्मा के दलित स्त्री से प्रेम-वियाह रहे। दलित पत्नी से विश्वकर्मा के नौ गो हुनरमंद पुत्र भइले, जवना से नौ गो शिल्पकार जाति बनल। आधुनिक विश्वकर्मा रतन पांडे में ओइसन साहस आ नैतिक बल नइखे। रतन 'अछूत' उपन्यास के एगो महत्त्वपूर्ण नायक बाड़न। ऊ आधुनिक सामाजिक दृष्टि से प्रभावित बाड़न। पढ़े-लिखे में ऊ सामान्य विद्यार्थी बाड़न। दलित निपढ़ भगिया से प्रेम-वियाह के अतिरिक्त रतन में कवनो उल्लेखनीय काम नइखे लउकत। जबले स्कूल में रहले, मास्टर लोग के निगाह पर चढ़ल रहले। साइते कवनों घंटी होखे, जवना में रतन के कवनो हरकत ना होत रहे। देह से बनल रतन के कॉलेज में चलती चले लागल। अपना क्लास के कमजोर लड़िकन के डेरा-धमका के अपना तरफ मिला के ऊ प्रोफसरो लोग

www.bhojpurisahityangan.com

पर आपन प्रभाव जमा लेले रहले।

आखिर रतन भगिया का ओर कब आकर्षित हो गइलन? दलित समुदाय के प्रति उनुकर सचमुच मानवीय संवेदना रहे कि सिर्फ भगिया के देह के प्रति यौन आकर्षण? कॉलेज के मित्र प्रदीप, आ रहमान से ऊ भगिया से आपन प्रेम के बात शेयर करत बाड़न। गाँवे आके ऊ अपना माई उमा से भगिया के बारे में पूछ-ताछ करत बाड़न। उनुकर साथी प्रदीप के मशविरा बा कि - ''बिना स्थायित्व के प्रेम महत्वहीन हो जाला आ प्रेम के स्थायी करे खातिर वियाह के बन्धन अनिवार्य होला।'' रहमान आ प्रदीप के बीच सामाजिक असमानता आ छुआछूत के बारे में विमर्श से रतन के दिमाग में तूफान चलता। रतन कहले कि हमनी के पूर्वज लोग अपना जुग-जमाना के लायक सोच-समझ के नियम बनावल। ओही लोग के वंशज हम एह जुग के अनुरूप नया सामाजिक क्रांति के श्रीगणेश कर रहल बानीं। एमें कवनो सन्देह नइखे कि डेग-डेग हमरा तकलीफ सहे के पड़ी आ माई-बाप, गाँव-जवार - पता न केतना लोग से लोहा लेवे के पड़ी।'' रतन के चरित्र में शानदार आदर्शोन्मुख सुधारवादी सामाजिक दृष्टि पनपत बा। उनुकर साथी प्रदीप उनुकर क्रांतिकारी भावना के स्वागत करत बा।

गाँवे आ के रतन भगिया से क्रांतिकारी बात कहत बाड़न, ''हमरा विचार से आदमी के जात पर ना जाके ओकरा गुन के पूजा होखे के चाहीं। एकर मिसाल समाज के सामने पेश करे खातिर हम तहरा के अपनावे के वचन देत बानीं।'' समाज समर्थन ना करी त सरकार के हर तरह से समर्थन आ सुरक्षा पर उनका एतबार बा। एह तरह से रतन के चरित्र में सकारात्मक विकास लउकत बा।

उपन्यासकार रतन-भगिया के प्रेम कथा बुने में सावधान बाड़न। उपन्यास के उत्तरार्ध में (10 वाँ अध्याय से) उनुका लोग के प्रेम-कथा आउर उप-कथा सब के समानान्तर चलत बा। भगिया बसावन पाँड़े किहाँ काम-धंधा करे खातिर लड़िकाई से आवत जात रहे। रतन के साथ लड़िकाई में बगइचा में आम अगोरे आ बीने जाए। रतन जब पढ़े बइठस, त उनकर पढ़े बइठल देख के भगियों उनका लगे चौकी पर बइठ के बड़ा ध्यान से पढ़ल देखे। लड़िकाई के अल्हड़ बेवहार में जवानी चढ़ते निखार आवे लागल। रतन आ भगिया के दिल में एक दोसरा खातिर अपनापन के भाव

www.bhojpurisahityangan.com

भरे लागल। प्रेम परवान चढ़ल आ रतन संकल्प कइलन कि ''माई-बाप, गाँव-जवार, हित-नात, जात-बिरादर - सभ से संबंध तूर के इंसान भइला के नाते इंसानियत के माथ पर लागल कलंक जरूर पोंछाव।'' एह संकल्प के पूरा करे खातिर रतन आ भगिया चुपके से गाँव से निकल के कोर्ट मैरिज क लेता। गाँव में तहलका मच जाता।

गाँव के बाबू उजागर सिंह के युवा पुत्र श्रीपाल सिंह रतन-भगिया के अंतर्जातीय वियाह के सैद्धांतिक समर्थन करत बाड़े। अंतर्जातीय वियाह के खबर रतन-भगिया के फोटो सहित छपल बा। श्रीपाल सिंह अपना बाबू जी के ऊ खबर देखावत-पढ़ावत बाड़न। बाबू साहेब रतन के आवारा टाइप लड़िका बतावल चाहत बाड़न, बाकिर उनुकर युवा पुत्र कहले कि बाबू जी, एह काम में आवारागर्दी आ गुण्डागर्दी के सवाल नइखे, सिद्धान्त के सवाल बा। ई कदम ऊ जात-पात के परंपरा तूरे खातिर उठवले बाड़े। आगे श्रीपाल सिंह के वक्तव्य उल्लेखनीय बा जवन उपन्यास 'अछूत' के प्रतिज्ञा के अनुकूल बा- ''आज वास्तव में संविधान के मोताबिक केहू अछूत नइखे, आ चालो सुभाव केहू के हिस्सा में ना होला।''

किसुनवो अंतर्जातीय वियाह के पक्ष में नइखे। ऊ त ऑनर किलिंग के बारे में सोचत बा बाकी उजागर सिंह के आदर्शोन्मुखी बेवहार कुशलता से ऊहो रतन-भगिया के कोर्ट-मैरिज के स्वीकार क लेता।

एह तरह से 'अछूत' के कथानक अस्पृश्यता निवारण खातिर अंतर्जातीय वियाह के प्रस्ताव करत बा। वर्तमान संदर्भ में उपन्यास के कथानक सार्थक आ प्रासंगिक बा।

उपन्यास के भाषा में सादगी आ प्रवाह बा। 'अछूत' के शिल्प आ स्थापत्य में नवीनता बा।

❏❏

www.bhojpurisahityangan.com

‘शिखरन के आगे’: अंतर्वस्तु आ संवेदना

‘शिखरन से आगे’ वरिष्ठ साहित्यकार अशोक लव के हिंदी उपन्यास ‘शिखरों से आगे’ के भोजपुरी अनुवाद ह। एह उपन्यास के अनुवादक बानी युवा लेखक केशव मोहन पाण्डेय।

भारतीय स्त्री के गोड़ पितृसत्तात्मक सामाजिक-पारिवारिक रूढ़ियन के जंजीर में जकड़ल बा। अइसे त भारतीय समाज के अधिसंख्यक आबादी अशिक्षा आ गरीबी के दलदल में अँटकल बा। ओहू में स्त्री समाज अशिक्षा आ अंधविश्वास में पुरुष से बेसी जकड़ल बा। खुशी के बात बा कि उत्तर आधुनिक दौर में भारतीय स्त्री के एगो छोट हिस्सा पितृसत्तात्मक रूढ़ियन के जंजीरन के तूरे में सफल रहल बा आ उच्च शिक्षा प्राप्त कइले बा। उपन्यास ‘शिखरन से आगे’ में उपन्यासकार शुभांगी छिब्बर, कृति, नीरजा, प्रियंका, मिस लता जइसन आधुनिक स्त्री-चरित्रन के सृजन कइले बानीं। उपन्यास में कुछ उत्तर आधुनिक मुँहफट, लंपट स्त्री चरित्रन के स्वायत्त संसार भी बा। एह श्रेणी में रीमा गोयल, अलका, अरुणा, कनकलता, सुधा अग्निहोत्री जइसन स्त्री-पात्र के राखल जा सकेला।

उपन्यास के कथ आ कथानक बहुस्तरीय बा। सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक तंत्र के बदलाव से मनुष्य के मानसिक सोच-समझ व्यवहार भी बदल जाला। 1990 के दशक में भारत में वैश्वीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, मशीनीकरण के आन्ही बहे लागल। औद्योगिक पूँजी

www.bhojpurisahityangan.com

के फूल तेजी से खिले लागल। पूँजी के फूल सामंती संबंधन के ताजा कब्र पर बेसी लहलहा ला। पूँजी के फूल भारतीय स्त्री के सामंती जकड़न से मुक्त करे लागल। निजीकरण के आन्ही के चपेट में खाली कल-कारखाना आ उद्योग-धंधा ना आइल बलुक शिक्षा-चिकित्सा भी कमाऊ साधन हो गइल। शिक्षा प्रणाली खूब लाभदायक कारोबार हो गइल। उद्योगपति सरकार से ताकतवर हो गइल। सरकार के शिक्षा-दृष्टि उद्योगपति बदल देलक। साक्षारता अभियान फ्लॉप कर गइल। सरकार व्यवसायी वर्ग के दबाव में निजी विद्यालय- महाविद्यालय-विश्वविद्यालय खोले खातिर कानून बनवलक। प्रतीकात्मक कीमत पर महानगरन में बड़े-बड़े भूखंड आवंटित करे लागल। उपन्यास 'शिखरन के आगे' के कथावस्तु के सार इहे बा।

उपन्यास 'शिखरन से आगे' के महानयक स्वामी अखिलानंद जी विद्यालय खोले खातिर बहुत सचेष्ट बानीं। ऊहाँ के भारतीय संस्कृति के प्रति प्रतिबद्धता बा; एह से विद्यालय संचालन खातिर एगो तेजस्वी, उद्यमी, भारतीय संस्कृति के प्रति प्रतिबद्ध व्यक्तित्व के तलाश बा। अमीर व्यवसायी परिवार के युवा विधवा शुभांगी छिब्बर के माध्यम से स्वामी अखिलानंद के एगो अविवाहित, उदासीन, कर्त्तव्यनिष्ठ, तेजस्वी विज्ञान शिक्षक विनोद मिल जात बाड़े। विनोद के चरित्र गढ़नऊक बा। उनका जीवन में संजोगन के बाहुल्य बा। ऊ शुभांगी छिब्बर के कॉलेज के दिनन के प्रेमी हवे। शुभांगी के प्रति विनोद के पेयार एकतरफा बा। शुभांगी के पेयार गहिरा रहीत त ऊ पारिवारिक दबाव में दोसरा युवक से विआह ना करती। शुभांगी के पति प्रदीप जल्दीये दुर्घटनाग्रस्त हो काल कवलित हो जात बा, बाकी शुभांगी के गोद में वैवाहिक जीवन के निशानी मासूम बेटा विनय के छोड़ि जात बा। विधवापन शुभांगी के अध्यात्म का ओर ले जात बा। ऊ स्वामी अखिलानंद के आश्रम के संपर्क में आवत बाड़ी। महानगरीय उत्तर आधुनिक जीवन में युवा विधवा शुभांगी के संन्यास का ओर प्रवृत्त होखे के निर्णय में स्वाभाविकता नइखे। उनका में पौराणिक रूढ़ियन के तूरे के सीमित प्रवृत्ति बा। ऊ लेडिज गारमेंट्स के व्यवसाय करत बाड़ी। स्त्री स्वावलंबन के ई चेतना आधुनिक आ सराहनीय बा। ओने विनोद शुभांगी के प्रेम में असफल भइला पर कुआँर रहे के निर्णय करत बाड़न। ऊ दिल्ली प्रोग्रेसिव स्कूल में शिक्षक नियुक्त होत बाड़न। ऊ स्कूल के बोर्डिंग हाउस में रहत बाड़न। विधवा शुभांगी अपना बेटा विनय के नावँ ओही स्कूल

www.bhojpurisahityangan.com

में लिखावत बाड़ी आ मासूम बेटा के बोर्डिंग में रखवावत बाड़ी। एही क्रम में विधवा शुभांगी के मुलाकात अविवाहित शिक्षक विनोद से हो जाता। उपन्यास के कथानक में एगो नाटकीय मोड़ आ जाता। पाठको के जिज्ञासा गतिशील हो जाता कि अब का होई? शुभांगी स्वामी अखिलानंद जी से विनोद के अतीत के जानकारी देत बाड़ी। अखिलानंद जी के आरंभिक जीवन पर रहस्य के पर्दा बा। आखिर स्वामी जी संन्यासी काहे भइनीं? उपन्यास स्वामी जी के अतीत पर से तब पर्दा उठावता जब ऊहाँ के मरनासन्न बानीं। उपन्यास के अनुसार स्वामी जी अतुल्य अध्यात्मिक शक्ति संपन्न बानीं। कार्य-कारण पर उपन्यास मौन बा। ऊहाँ में चमत्कारिक शक्ति बा। काहे बा? कइसे बा? उपन्यास मौन बा। उत्तर आधुनिक युग में सिस्टम चमत्कार से ना चले। रचना में युग संवेदना आवश्यक शर्त्त बा। उपन्यास स्वामी अखिलानंद के साधना पर दू-चार पृष्ठ भी प्रकाश नइखे डाल पावत। जैविक रूप से एगो संपूर्ण पुरुष भा स्त्री सांसारिक-पारिवारिक संबंधन में बिना झटका लगले सधुआला ना। उपन्यास स्वामी जी के जीवन-सत्य पर पर्दा हटावत बा। उपन्यास के कथानक के ई मजबूत कथा-प्रसंग बा। स्वामी जी अमेरिका-पलट इंजीनियर हईं। तनिको संदेह नइखे कि ऊहाँ के अमेरिका में डॉलर खूब कमाइल बानीं। ऊहाँ में राष्ट्रीय चेतना कतना बा पता ना। उपन्यास किरदारन के अभ्यांतर पर प्रकाश नइखे डालत। आखिर स्वामी के मनःस्थिति का बा? उपन्यासकार के ई कलात्मक कौशल बा कि ऊहाँ के पाठक के गतिशील मानसिक क्षमता पर विश्वास करत, उपन्यास में स्वामी जी के अभ्यांतर पर बेमतलब पन्ना नइखीं खरच करत। अब स्वामी अखिलानंद के अतीत पर हल्का प्रकाश। स्वामी जी के मूल नाम अखिलेश अग्निहोत्री बाटे। एगो रिश्तेदारी में विआह समारोह में युवा इंजीनियर अखिलेश अग्निहोत्री के मुलाकात अविवाहित लेडी डॉक्टर सुधा अमोलकर से होता। दूनों लोग विआह बंधन में बन्ध जाता। बाकी उनका लोग के दाम्पत्य-जीवन में चारे बरीस में खटास आ जाता। कारण बा डॉ. सुधा अमोलकर के विवाहेत्तर यौन संबंध। उपन्यास में एह प्रसंग के खाली सूचना बा। हालांकि कुछ कथा-प्रसंग रहीत त उत्तर आध ुनिक सभ्यता में एकल परिवार के बिखराव पर रोशनी पड़ीत। उपन्यास के कथानक बहुरेखीय आ जटिल शिल्प से सुशोभित होइत। उपन्यास समग्र जीवन के महाकाव्यात्मक गाथा ह। डॉ. सुधा अमोलकर मुक्त नारी के प्रतीक

www.bhojpurisahityangan.com

बाड़ी। अखिलेश अग्निहोत्री के पारिवारिक संबंधन से वितृष्णा हो जाता। ऊ अध्यात्म का ओर पलायन कर जात बाड़न। ऊ स्वामी अखिलानंद हो गइलन। बाकी जिंदगी के तृष्णा मिटत नइखे। उनकर सोच बा कि भारतीय संस्कृति यूरोपीयन संस्कृति से दूषित हो रहल बा। भारतीय संस्कृति के बचावल जरूरी बा। उचित शिक्षा से भारतीय संस्कृति के पराभव रोकल जा सकेला। वैश्वीकरण के जुग में ई एगो गंभीर चुनौती बा। 'शिखरन से आगे' उपन्यास में अइसन-अइसन आउर दिलचस्प रचना-वस्तु के संकलन, संयोजन आ संघटन उपन्यासकार अशोक लव जी कइले बानीं। स्वामी अखिलानंद-डॉ. सुधा अमोलकर के दाम्पत्य जीवन-प्रसंग में वर्तमान उच्च वर्गीय भारतीय परिवार के अंतरंग यथार्थ के छबि बा, बाकी लेखकीय व्यंग-बाण के अभाव में दंतहीन बा।

स्वामी अखिलानंद के निधन के समय बड़ा कारुणिक दृश्य उपस्थित हो जाता ऊ विनोद के देश-विदेश में फैलल अपना आश्रमन, संस्कृति केन्द्रन, शिक्षा केन्द्रन के उत्तराधिकारी वसीयत लिख के करत बाड़न। भारतीय समाज के सुधारत-सुधारत विदेशन में सुधारगृह स्थापित करे लगन। स्वामी जी के जीवन-दृष्टि में धुँधलापन बा। ऊ मान-सम्मान के भूखा-दुखा लउकत बाड़न। विनोद स्वामी जी के शिक्षा-साम्राज्य के उत्तराधिकारी बने से मना क देत बाड़न। अंततः विधवा शुभांगी छिब्बर उनकर आश्रम केन्द्रन के उत्तराधिकारी बनत बाड़ी। आधुनिक संन्यास आश्रम के इहे अंतर्विरोध बा। संन्यासी बनलो पर ऊ सत्ता के खीर खाये खातिर लालायित रहेला।

सुधा अग्निहोत्री के जीवन-चरित्र अधूरा बा। एकाएक बुढ़ारी में ऊ पूर्व पति स्वामी अखिलानंद के आश्रम में प्रवचन सुने आवत बाड़ी। स्वामी जी उनका के पहचान लेले बाड़न। ई भेद ऊ अपना करीबी शिष्य लोगन के भी नइखन बतावत। अंत समय में शुभांगी के माध्यम से सुधा अग्निहोत्री के पास में बोलावत बाड़न। आ क्षमा माँगत बाड़न। दिलचस्प बा कि सुधा क्षमा नइखी माँगत। ऊ विनोद-शुभांगी के सुधा के खेयाल रखे के कहत बाड़न।

उपन्यास में कृति, शुभांगी, नीरजा, प्रियंका जइसन पितृसत्ता के जुआ-जंजीर से मुक्त शिक्षित, आत्मनिर्भर नारीयन के चित्रण बा जवन उपन्यास के कथानक के आधुनिक आ प्रासंगिक बनावता। कृति वन ऑफ दी बेस्ट टीचर बॉयोलाली बाड़ी। ऊ नितिन से प्रेम करत बाड़ी। ऊ उत्तर आध

www.bhojpurisahityangan.com

ुनिक चेतना के प्रतीक बाड़ी। ऊ अपना जीवन-साथी के तलाश खुद करत बाड़ी। कॉलेज लाइफ में नितिन उनकर दोस्त रहलन। नितिन अवसर मिलते चुपचाप अमेरिका चल गइलन। धन के लोभ में ऊ लंपट सुनंदा से विआह क लेलन। कृति स्कूल शिक्षक अविवाहित विनोद से विआह कइल चाहत बाड़ी। बाकी विनोद दाम्पत्य जीवन से उदासीन बाड़न। ओने नितिन-सुनंदा के तलाक हो जाता। नितिन फिर से कृति के अपनावल चाहत बाड़न। एह त्रिकोणात्मक स्थिति के रोचक वर्णन बा।

कला शिक्षक आशुतोष के दाम्पत्य-जीवन में अलग किस्म के तनाव बा। ऊ पत्नी अलका से तंग आके आत्महत्या के प्रयास करत बा। कृति आशुतोष के आत्महत्या के प्रयास के खारिज करत एगो उत्तर आधुनिक दाम्पत्य संस्था के विकल्प पेश करत बाड़ी: ''जिनगी कवनो एके आदमी से सीमित ना होखे'' (पृष्ठ 146)।

अइसे त ढेर नारी चरित्र एह उपन्यास में बा। ओह में टीचर नीरजा आ पत्रकार- पेंटर प्रियंका के चरित्र विशेष उल्लेखनीय बा। प्रियंका एक तरह से शुभांगी आ कृति के उत्तर आधुनिक चरित्र के विस्तार अथवा प्रतिरूप बा। प्रियंका भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी के पुत्री हई। दिल्ली में समाचार पत्र के दफ्तर में काम करेली आ आशुतोष से पेंटिंग्स सीखेली। आशुतोष के पत्नी मुक्त यौन संबंध के हिमायती बाड़ी। प्रियंका जीवन-साथी के रूप में दू बच्चन के पिता आशुतोष के चुनत बाड़ी। विवाह-संस्था के बारे में उच्च मध्यम वर्गीय जीवन में एगो नया मूल्य स्थापित हो रहल बा।

उत्तर आधुनिक जीवन शैली के खोखलापन के एगो तस्वीर नीरजा के दाम्पत्य-जीवन के बा जहाँ उनकर उच्च अधिकारी शराबी पति अपना कैरियर खातिर अपना पत्नी के अपना बॉस के सऊँपे में तनिको हिचकिचात नइखन।

एगो प्रश्न बा कि का महानगर में विद्यालय-महाविद्यालय चरित्रहीनता आ दुराचार के अड्डा हो गइल बा? एह स्थिति में उपन्यास में अनेकश: वर्णन बा। सरकारी शिक्षा के निजीकरण खातिर सरकारी स्कूलन के लंपटई के केन्द्र बतावल पचत नइखे। पूरा सिस्टम में घुन लागल बा। स्वामी अखिलानंद आश्रम मॉडल के निजी शिक्षा केन्द्र खोलल चाहत बाड़े भारतीय संस्कृति के रक्षा खातिर। दिल्ली प्रोगेसिव स्कूल के एगो शिक्षिका श्रीमती कनकलता

www.bhojpurisahityangan.com

के वक्तव्य पतनशीलता के नमूना बा: ''बिआह भइले सोरे बरिस हो गइल. ....। अबहीनो जेकरा ओर देख लेनी, पागल क देनी।'' पचास पार श्रीमती करुणा के सजे धजे के आदत बा। स्कूल के स्टॉफ रूम में लेडी टीचर्स लो के बातचीत- साड़ी के चर्चा, घरेलू दाइयन के नखरा के चर्चा, पति लो के भाव-सुभाव के चर्चा....तक सीमित बा। सवाल बा कि सरकारी स्कूलन के इ एगो छवि बा, बाकी निजी स्कूल में इ छवि आ संवाद के स्तर बदल ना जाला। इहे भारतीय स्कूलन के परिदृश्य बा। स्टॉफ रूप में हँसी-मजाक आ घरेलू मसलन पर निजी बातचीत के नियंत्रित कइल कहाँ तक उचित बा? एह आधार पर सरकारी स्कूलन के निजीकरण भा निजी स्कूलन के पक्ष में तर्क ना गढ़ल जा सके। निजी स्कूल किताब से लेके टाई, शर्ट, जूता, मोजा के दोकान हो गइल बा। होमोसेक्सुअलिटी से लंपटई तक के प्रसंग बा उपन्यास में। कथानक में सत्ता प्रतिष्ठानन के दोष उजागर नइखे होत।

हजारो निजी शिक्षा केन्द्र धन्नासेठन द्वारा राजनीतिक संरक्षण में संचालित बा। जवनन के फीस खाइल-अधाइल उच्च मध्यवर्गीय सोसाइटी देवे में सक्षम बा, बाकी तीन-चौथाई गरीब आबादी पाँच किलो गेहूँ आ चावल के रेवड़ी पर जिंदा बा। स्वामी अखिलानंद जी अविवाहित विनोद जइसन शिक्षक के पारिवारिक जिम्मेवारी उठावे खातिर तइयार बानीं। ''यदि तूँ चाह त तहार सगरो आर्थिक जिम्मेवारी हमनी के सँभाल लेब। बैंक में तोहरा नावँ से बीच-पच्चीस लाख जेतना कह ओतना पइसा जमा करा देत बानीं'' (पृष्ठ 101)। स्वामी जी के संवाद के आईना में उनकर अजगुत प्रतिबिम्ब उभरत बा। स्वामी जी ऊपरे से संन्यासी बानीं, ऊहाँ के आत्मा बड़का व्यापारी बा। ई उम्मीद कइल जा सकेला कि भविष्य में स्वामी जी आ विनोद मनी लौंडरिंग केस में ना फंसिहें। विनोद सबकुछ समझलो पर तोता लेखा शिकारी के जाल में फँस जात बाड़े। विनोद के व्यक्तित्व के अंतर्विरोध देखे लायक बा। आधुनिक पीढ़ी के चित्त के दोगलापन आ फिसलन के बढ़िया निदर्शन बा। विनोद के स्वामी जी से संवाद बा: ''जेकरा लगे साधन बा, ओह के बदलाव ले आवे के चिंते नइखे। धनिक लोग धन बटोरे में मगन बाड़े। शिक्षा के नावँ पर विद्यालय-महाविद्यालय के दोकान बना दिहल गइल बा। अखबारन के मालिकाना अधिकार पूँजीपति लोग के हाथ में बा'' (पृष्ठ 101)। विनोद के स्वामी जी से सीधा प्रश्न बा:

www.bhojpurisahityangan.com

''स्वामी जी! आप का सोचत बानी; हम-रउआ एह व्यवस्था के बदल सकत बानीं जा?'' (पृष्ठ120)। उहे विनोद स्वामी अखिलानंद के निजी विद्यालय खोले के परियोजना के मुख्य संचालक बनि जात बाड़े। उपन्यास में विनोद के अंत:करण के कवनो छवि नइखे। कथावस्तु खाली सतह पर ना चले, असली कथा-वस्तु अंतरंग का चित्रण ह। उपन्यास में एह अन्तर्विरोध के एगो चमत्कारिक समाधान बा। स्वामी जी विनोद के प्रभावित करे खातिर पराशक्ति के इस्तेमाल करत बाड़न। ऊ भविष्यवक्ता बनि के बोलत बाड़न: ''समय आ गइल बा... सगरो लिखा गइल रहेला.... तूँ ई नोकरी ना करब। ....तोहके अबहिन ढेर काम करे के बा..... हम सब देखत बानीं। भविष्य पर लिखाइल लिपि हमारा सोझा बा विनोद'' (पृष्ठ 74)। उपन्यास में जवन महिमामंडन तंत्र-मंत्र के बा ऊ आधुनिक संदर्भ में पचत नइखे। मध्यकाल के तंत्र-मंत्र-पाखंड के महिमामंडन से भारतीय संस्कृति के बचाव संभव नइखे। स्वामी जी के तर्क जब असफल हो जाता विनोद पर त ऊहाँ के उनकर मुड़ी पर हाथ ध दे तानी। विनोद के मुड़ी झनझना उठता। लिलार अद्‌भुत अँजोर से जगमगा उठता (पृष्ठ 77)।'' विनोद भौतिकी से एम एस सी आ स्वामी जी अमेरिका पलट इंजीनियर! अद्‌भुत अँजोर त होइबे करी। इहो सत्य बा कि कवनो सिस्टम साधु-संत के चमत्कार से ना चलल बा ना चली।

उपन्यास के कथानक के विवेचना जरूरी बा। भोजपुरी आलोचना झालकूटे में मगन रहेला। विनोद के चरित्र में जटिलता, विरोधाभास आ मानव सुलभ महत्वाकांक्षा बा। धर्म के बारे में उनकर वक्तव्य बा: ''धर्म स्वार्थियन के हाथ के कठपुतरी बनि के विनाश करे वाला उन्माद के जनम देत बा। पूजा-अथान तेजाबी शब्द उगिले के कारखाना बनि गइल बाटे (पृष्ठ 114)।'' प्रधानमंत्री पर टिप्पणी बा: ''प्रधानमंत्री जातिवाद के विष बो के समाज के छोटे-छोटे वर्गन में बाँटे बदे, ना हिचकिचाव तब देश के का होई (114)।'' विनोद के ई विचार ठहरत नइखे।

निजी स्कूल खोले खातिर बड़ भूखंड चाहीं। एह में सत्ता के आशीर्वाद चाहीं। स्वामी जी कवनो सत्ताधारी के मुड़ी छू के चमत्कार नइखन करत। बलुक विनोद शुभी संगे सत्ता के गलियारा में चक्कर काटत बाड़े। ऊ उपशिक्षामंत्री शोभित से मिलत बाड़े। मंत्री जी के एम.ए. बी.एड. बेटी बेरोजगार बिया। नया स्कूल में बेटी के समायोजन चाहीं। उपन्यास के

www.bhojpurisahityangan.com

कथानक यथार्थ के पटरी पर सरपट दउड़े लागता। दिल्ली महानगर में 5 एकड़ 10 एकड़ के भूखंड मिलल मुश्किल नइखे। उपन्यास के कथानक समाहार का ओर छलांग लगा रहल बा। स्कूल भवन के निर्माण पल झपकते हो जाता। जहाँ स्वामी जी बानीं ऊहाँ धन के कवनों कमी होई! शुभी शिक्षक चयन में 'विचारधारा' जानल जरूरी समझत बाड़ी (पृष्ठ 216)। उपन्यास एगो सुखांत कथानक का ओर अग्रसर बा। कृति आ विनोद के विआह हो जाता। स्कूल के सत्र छोड़ि के कृति-विनोद मधुमास मनावे मनाली जाता। हनीमून के अवधारणा कहाँ से आइल? प्रियंका-आशुतोष के भी विआह हो जाता। विद्यालय के संस्कृति खंड के निदेशक शुभांगी छिब्बर। पता ने शुभांगी के निदेशक लायक शैक्षिक योग्यता रहे कि ना।

संस्कृति खंड लागत बा फिल्मोद्योग ह। भारतीय संस्कृति के बचावे खातिर ऊ उत्तर आधुनिक उच्च तकनीक के इस्तेमाल से साहित्य, कला आ संस्कृति से जुड़ल वृत्त चित्र, धारावाहिक आ लघु फिल्म बनाई। आलोकानंद-संस्थान में 'अतीत के सुगंध' धारावाहिक बनल। निजी विद्यालय खोले के सपना फिल्मोद्योग में पर्यवसित हो गइल।

'शिखरन से आगे' उपन्यास में अँग्रेजी शब्दन के खूब प्रयोग-उपयोग बा। भाषा कवनो संस्कृति के आपन पहचान आ वैशिष्ट ह। भारतीय संस्कृति के आंग्ल भाषा से बहुत खतरा बा। उल्लेख्य उपन्यास के मुख्य प्रतिज्ञा भारतीय संस्कृति के पतनशीलता से बचावे के बा। हाउस मास्टर, स्कैंडल, युनिवर्सिटी में टॉप, रेस्तराँ, बस-स्टॉप, पीरियड, डेस्क, मिस्टर सीरियस, कॉलेज के लॉन, बोर्डिंग हाउस, नोटिस बोर्ड, डारमेट्रिज जइसन शब्द महानगरीय भाषा में जज्ब हो गइल बा। एकनी के स्थानीय विकल्प खोजल जरूरी बा। तबो अनुवाद कार्य बहुत मेहनत के काम बा। युवा लेखक केशव मोहन पाण्डेय जी के परिश्रम सराहनीय बा।

उपन्यास के संवेदना निजी शिक्षण संस्थान के प्रति बा। निजीकरण के घोड़ा पर भूमंडलीकरण के सम्राट विश्व विजय करे निकलल बा। एह भूमंडलीकरण के आन्ही में कतने भूप धराशायी होइहें।

❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

गंगा रतन बिदेसीः स्वतंत्रता आंदोलन के सामाजिक इतिहास

कृतिकार मृत्युंजय उर्फ मृत्युंजय कुमार सिंह के पहिला भोजपुरी उपन्यास 'गंगा रतन विदेसी' भारतीय स्वाधीनता आंदोलन आ ओकरा बाद के राजनीतिक आंदोलन पर आधारित सामाजिक इतिहास के जबरदस्त औपन्यासिक प्रस्तुति बा। एकरा कथा-धारा में नटाल वासी गाँधीवादी सत्याग्रही भारतीय स्वतंत्रता सेनानी रतन दुलारी आ भारतवासी स्वतंत्रता सेनानी परिवार के लइकी गंगझरिया के वर्णविहीन जाति विहीन प्रेम-वियाह के कथा समाहित बा। एह उपन्यास के कथा-गंगा में दार्जिलिंग के चाह-बगान के मालिक कलकत्ता-वासी रितिक मजूमदार के एकलउती बेटी डोना आ ओकर निजी रक्षक सह घरेलू टहलुआ लोकगायक युवा गंगा रतन विदेसी के पवित्र रोमांचक प्रेम-कथा अइसे बा जइसे प्रयागराज में गंगा-जमुना-सरस्वती के संगम-धारा। एह कथा-गंगा में 1860 के दशक में भारत से गिरमिटिया मजूर बन के दखिन अफीरका जायेवाला किसान मूनेसर, नटाल में गाँधी जी के सत्याग्रह आंदोलन, स्वतंत्रता सेनानी गोपाल कृष्ण गोखले के अफीरका जतरा, गाँधी जी के अफीरका से वापसी, नटाल में गिरमिटिया मूनेसर के बंग्ला भासी पारबती जुवती से जातिहीन वियाह, मूनेसर के पोता रतन दुलारी के गाँधी जी के संगे भारत आगमन, गाँधी जी के चंपारन किसान

www.bhojpurisahityangan.com

आंदोलन में भागीदारी, स्वाधीनता प्राप्ति के दिन दिल्ली में जस्न आदी-आदी कथा-सरिता के रोचक समागम बा। ई कथा-गंगा आजादी के बाद 1970 दशक में नक्सलबाड़ी किसान बिद्रोह तक प्रवाहित बा। उपन्यास के कथानक के काल खण्ड के फयलाव सै बरीस बा।

'गंगा रतन बिदेसी' के कथा-भूई के कैनवस पर नटाल, जोहांसबर्ग, प्रिटोरिया, डरबन में स्थापित महात्मा गाँधी के फीनिक्स आसरम (सन 1904), टॉलस्टॉय फार्म उर्फ आसरम (सन् 1910), साबरमती आसरम, हेमवती विधवा आसरम बनारस, मोतिहारी, मुजफ्फरपुर, कलकत्ता, सियालदह, परसीडेंसी जेल कलकत्ता, दार्जिलिंग के चाह-बगान, दिल्ली आदी के इबारत नीके तरी उकेरल बा। उपन्यास के कथानक खातिर रचना-वस्तुअन के चुनाव में ओकनी के एगो कथा-सूत्र में पिरोवे में कृतिकार के हुनर प्रशंसनीय बा। कथानक में कथा-रस के सोवाद बा।

'गंगा रतन बिदेसी' उपन्यास के कथानक में भारतीय सीमांत किसान के पांच पीढ़ी के अमानवीय शोषण-दोहन, उत्पीड़न के दिल हिला देवे वाला चित्रण बा। रोजी-रोटी के तलाश में मूनेसर के परिवार में पीढ़ी-दर-पीढ़ी विस्थापन, भटकन आ त्रासद उतार-चढ़ाव बा। ओकर कवनो राष्ट्रीय चरित्र नइखे बन पावत। ओकर जनम भूईं छूटऽता; ओकर करमभूईं असथिर नइखे रह पावत। एक ओर रतन दुलारी आ बिदेसी खेजुआ के क्रूर साहूकार बनवारी साव के हिरदयहीनता के शिकार हो ताड़न आ दोसरा ओर दार्जिलिंग के चाह-बगान मालिक रितिक मजूमदार के छल-कपट में फँस के बेकसूर कारावास के सजाय भोगत बाड़न। तीसरा ओर ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में एगो सत्याग्रही के रूप में भाग लेवे पर भी जीवन यापन के कवनों बेवस्था नइखे हो पावत। आजादी के पहिला रात के जस्न में उदासी के सियाह परछाईं बा।

स्वाधीनता आंदोलन के आधार भूईं में सामाजिक इतिहास के संवेदना के साथे उपन्यास लिखे में व्यवहारिक दिक्कत संभावित बा, काहे कि ओह में बड़े-बड़े नेतन-राजनेतन के आवाजाही सोभाविक बा, त आम आदमी के वैक्तिक जीवनी के पिरोवल मोसकिल होला। 'गंगा रतन बिदेसी' उपन्यास में स्वतंत्रता सेनानी रतन दुलारी आम आदमी के प्रतीक बा; ओकर बेटा गंगा रतन बिदेसी सीमांत किसान आ मजूर के प्रतीक बा। बनारस हेमवती विधवा

www.bhojpurisahityangan.com

आसरम के गंगझरिया, कंचनिया, सरधा, तेलगू सुनीता; गंगा घाट के मलाह दमोदर केंवट, रेसम कारखाना के मालिक रहमत अंसारी, करमचारी बिरजू प्रसाद, खेजुआ गाँव के राम सरन, राम सिंघासन दुसाध, राम आसरे, बाबू राम परवेस आदी में आम आदमी के जिनगी प्रतिबिम्बित बा। ओइसहीं कलकत्ता लोहा फोंडरी के जमीर मियाँ, भोला भगत, पोसवा बाजार के पलदार- मोटिया मजूर, सियालदह टेसन के कूली परमोद आदी लोग आम आदमी के संसार रचऽता।

'गंगा रतन बिदेसी' के कथा-भूमि में भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के बड़े-बड़े नेतन के आवाजाही बा। जइसे गांधी जी (सन 1869-1948 ई.), गोपाल कृष्ण गोखले (सन् 1866-18/02/1915 ई.) कस्तूरबा गाँधी (11.04. 1869-22.02.1944 ई.) मौलाना मजहरूल (22.12.1866-2.01.190 ई.), रजेन्दर प्रसाद (3.12.1884-28.02.1963), डागदर मगफूर अहमद एजाजी (3.03.1900-26.09.1966 ई.) भाई परमानंद (4.11.1879-8.12.1947), मीरा बहिन (22.11.1892-20.07.1982 ई.) आदी नेतन के आवाजाही बा उपन्यास में। एह सब नेता लोगन से उपन्यास के मुख्य किरदार रतन दुलारी के बढ़िया जान-पहचान रहे। उपन्यास में एह नेता लोगन के सार्थक स्थिति बा जवन कथानक के ऐतिहासिकता प्रदान करे खातिर महत्वपूर्ण बा। एकरा अलावे आउर कुछ विदेसी बौधिक व्यक्तित्व आ ऐतिहासिक संस्थान बाड़न स जवन एह उपन्यास के सामाजिक इतिहास कहे के प्रस्तावना के साक्षी बाड़न स। जइसे हेनरी पोलॉक (सन् 1882-1959 ई.), हरमेन कलेनबाख (सन् 1871-1945 ई.), आदी दखिन अफरीका में गाँधी जी के मित्र रहन। हेनरी सॉलोमन लियोन पोलाक दखिन अफरीका में जनमल ब्रिटिश वकील, पत्रकार आ सामाजिक कार्यकर्ता रहन। नस्लवादी भेदभाव के खिलाफ सत्याग्रह आंदोलन में ऊ गाँधी जी के सहयोगी रहन। ऊ इंडियन ओपिनियन अखबार के संपादको रहन आ मानवतावादी विचार के रहन। हरमन कालेनबाख के संक्षिप्त परिचय एहिजा प्रासंगिक बुझाता। ई ऐतिहासिक तथ्य बा कि हरमन लिथुआनियाई मूल के यहूदी रहन जे शिक्षा-दीक्षा से वास्तुकार रहन। 1904 में उनकर मुलाकात गाँधी जी से दक्षिण अफरीका में भइल। ऊ गांधी जी के मानव जाति के बीच समानता के विचार आ सत्याग्रह से प्रभावित रहन। गाँधी जी उनका के 'आत्मा के साथी' मानत रहन। ऊहे 1910 में गाँधी जी के

www.bhojpurisahityangan.com

जोहान्सबर्ग भीरी 1100 एकड़ आपन खेत टॉल्सटॉय फार्म चलावे खातिर दे देले रहन। वोही में सत्याग्रही लोग के परिवार रहत रहे। एह टॉल्सटॉय फारम से रतन दुलारी के बचपन के जुड़ाव बा। एह रचना-वस्तु खातिर कृतिकार के काफी सोधपरक परिश्रम करे के पड़ल होई। अइसे लागऽता जइसे रतन दुलारी सर्वथा एगो काल्पनिक किरदार बा। 'बाबा मूनेसर जब मूअऽलन तब रतन दुलारी एक बरीस के बालक रहन। ......। रतन जब छव बरीस के होखीहें जब उनकर बाप राम सवारथ उनका के गाँधी बाबा के फीनिक्स आसरम में छोड़ अइलें, उनका के फारम के अतयाचार अउर बाल-मजदूर बने से बचावे खाती। ....। रतन दुलारी के गाँधी बाबा फीनिक्स आसरम में दू बरीस रहला के बाद आपन नया जगह टोलोसताय फारम में ले गईलन (पृष्ठ 24)।'' रतन दुलारी सुरीला कंठ के लोक गायक रहन। गाँधी जी जनवरी 1915 में दक्खिन अफीरका से बमबई पानी के जहाज से लवटलन। उनका संगे रतन भी बमबई आ गइलन बाप-दादा के देस के अंगरेजन के पंजा से मुक्त कर के सत्याग्रह में हाथ बंटावे। गाँधी जी चमपारन सत्याग्रह आंदोलन में सक्रिय हो जा ताड़न। उनका साथे रतनो दुलारी बाड़न। 'एह भाग-दउड़ में सुजोग से बिहार के नामी-गिरामी सत्याग्रही मजहरूल हक (1866-1930) रजेंदर परसाद (1884-1963), डागदर मगफूर अहमद एजाजी (1900-1966) से मिले आउर ओह लोग के जिनगी के बारे में जाने के अवसर मिलऽता। ऊ मुजफ्फरपुर में डागदर एजाजी के घर में रहस, खास-पियस आउर सत्याग्रह के काम करस। ऊ डागदर एजाजी के देखरेख में गली-गली, गाँव-गाँव 'मुठिया अभियान' में हर घर से एक मूठी अनाज दान करे के निहोरा करस। माने ऊ तृणमूल स्तर के स्वतंत्रता सेनानी रहन। राजनीतिक लड़ाई लड़े वाला ऊ अइसन कार्यकर्ता बाड़न जेकर ना आपन घर बा ना कवनो जमीन जायदाद बा। हिन्दू नाँव रहलो पर रतन ना कवनो वर्ण में बाड़न ना कवनो जाति समुदाय में। उनका जाति आ वर्ण त ओही दिन नटाल में खतम हो गइल जाह दिन उनकर बाबा मूनेसर बंगाली अउरत पारबती से वियाह कइलन, जाति-बरन बे बिचरले।

मुजफ्फरपुर में युवा सत्याग्रही रतन दुलारी के मुलाकात होता लछुमनवा के बहिन गंगझरिया से जे चाचा आ बाप के अचानक गायब होखे से डागदर एजाजी के सरन में रहत रहे। बनारस के बरजेस पुजारीयो ओहिजे

www.bhojpurisahityangan.com

सत्याग्रही रहन। दूनों लोग गंगझरिया का ओर आकर्षित रहन। फेर त उपन्यास में गंगझरिया- बरजेस के वियाह, ऊ लोग के बनारस प्रस्थान; बरजेस के असमय निधन; गंगझरिया के वैधव्य; ओकर हेमवती विधवा आसरम में सरन; रतन दुलारी के आजादी के बाद दिल्ली से बनारस आईल, अचानक गली में विधवा गंगझरिया से रतन के मुलाकात; विधवा गंगझरिया- रतन के अश्रुपूर्ण दिलचस्प प्रेम-कथा उपन्यास में वर्णित बा।

उपन्यास के आरंभ में बड़े-बड़े राजनीतिक हस्तियन के चित्रण हावी बा। तबो सामाजिक चित्रण कम नइखे। भोजपुरी में सामाजिक इतिहास के आधार पर उपन्यास लिखे के प्रवृत्ति सुरूवे से कम बा। एह दिसाईं 'गंगा रतन बिदेसी' के सामाजिक आख्यान उल्लेखनीय बा। कथाकार प्रेमचंद 'जीवन और साहित्य का स्थान' शीर्षक लेख में लिखले बाड़न- ''साहित्य ही सच्चा इतिहास है, क्योंकि उसमें अपने देश और काल का जैसा चित्र होता है, वैसा कोरे इतिहास में नहीं होता। घटनाओं की तालिका इतिहास नहीं है और न राजाओं की लड़ाइयाँ ही इतिहास है। इतिहास जीवन में विभिन्न अंगों की प्रगति का नाम है और जीवन पर साहित्य से अधिक प्रकाश और कौन वस्तु डाल सकती है; क्योंकि साहित्य अपने देशकाल का प्रतिबिम्ब होता है।''

भारतीय समाज में जवान विधवा इसतीरीयन के सामने विकट समस्या बा। परिवार में ओकर उपस्थिति अपसकुन समझल जाला। ऊ एगो बोझ समझल जाली स। ओकर सामाजिक समाधान का बा? कवनो निरधन से वियाह कऽ देवे से ओकर जिनगी के जरूरत पूरा ना हो जाई। विधवा आसरम में ठेल देल कवनों आधुनिक समाधान न ह। 'गंगा रतन विदेशी' उपन्यास में विधवा गंगझरिया आ रतन दुलारी के अधेड़ उमीर में वियाह आ विधवा आसरम के मालकिनी के उदार आर्थिक मदद एगो मानवतावादी समाधान लउकता। एह कथा-प्रसंग के जबरदस्त मानवीय मूल्य बा कि ई ईश्वरचंद विद्यासागर (1820-1891) के विधवा पुनर्वियाह के सामाजिक स्वीकृति प्रदान करता। उनके प्रयास से 1886 में विधवा पुनर्विवाह कानून पारित भइल रहे। हिन्दू समाज में विधवा मेहरारून के इसथिति बहुत सोचनीय बा।

बंगाल नवजागरण के मूल विषय इसतिरी, बियाह, देहेज, जातिप्रथा आ धरम संबंधी रूढ़िवादिता रहे। एकर बिस्तार राजा राममोहन राय

www.bhojpurisahityangan.com

(1775–1833) से ले के रवीन्द्र नाथ ठाकुर (1861–1941) तक मानल जाला। एह दौरान यंग बंगाल आंदोलन 1842 में विधवा वियाह के पछ में आवाज उठा चुकल रहे। बाकी ई जन आंदोलन ना बन सकल। खास कर के बिहार-उत्तर प्रदेश के हिंदी पट्टी प्रभावित ना भइल। ई धेयान देवे लायक बा कि हेमवती देवी विधवा आसरम के मालकिनी (संचालिका) आ उनकर पति सेन साहेब बंगाली मूल के बा लोग। गंगझरिया-रतन के वियाह के हिंदी-नवजागरन के प्रतीक के रूप में समझल जा सकेला। हेमवती देवी गंगझरिया-रतन के खेजुआ (सारनाथ) गाँव में पाँच बिगहा खेती के जमीन किन के बसावत बाड़ी। एकर दिलचस्प कथा उपन्यास में बा। हेमवती के दर्दनाक कथा उपन्यास के पृष्ठ 47-49 पर दर्ज बा। ऊ अपने एगो मोसमात रही। नौ बरीस के उमीर में एगो लंपट दोआह से उनकर विवाह भइल। कइसे-कइसे ऊ बनारस अइली। एगो किरिसतान संस्था के सहयोग से ऊ कलकत्ता चल गइली। ऊ बरहम समाज (1828 ई.) के सदस्या हो गइली आ डफरिन फंड के सहायता से डाक्टरी पढ़ली। ऊ बरहम समाजी सेन बाबू से पुनर्वियाह कइली। उनइसवीं सदी में स्थापित बरहम समाज के सामाजिक इतिहास 'गंगा रतन बिदेसी' उपन्यास में समाहित बा।

आजादी 15 अगस्त, 1947 के मिलल। आम आदमी ओह दिन के कइसन महसूस कइलक। भारतवंशी राम दुलारी तेंतालीस बरीस आजादी के लड़ाई में सत्याग्रही बन के शामिल रहलन। साबरमती आसरम बन भइल, गाँधी जी दंगा फसाद रोके के प्रयास में बहुत दूर चल गइलन। राम दुलारी कइसे-कइसे दिल्ली पहुँच गइल बाड़न 14 अगस्त, 1947 के रात। आजादी के जस्न के ऊ चस्मदीद गवाह बाड़न। उनकर अंतरंग के उपन्यास में अप्रतिम चित्रण बा। ऊ गाँधी जी के अहिंसक आंदोलन से ले के भगत सिंह-चन्द्रशेखर आजाद के सशस्त्र संघर्ष के, डॉ. भीमराव अंबेदकर के दलित समाज के तरफदारी आदी के इयाद करत इंडियागेट के लमहर मयदान में एगो कोना में थाक के पसर गइलन। सब सत्याग्रही आपन-आपन घर गइलन। रतन दुलारी कहाँ जइहें? उनकर त केहू नइखे एह देस में। उनकर सब त छूट गइल दखिन अफीरका में आ ऊ चल अइलन भारत के आजादी खातिर लड़े गाँधी जी के साथे। रात भर मयदाने में पड़ल रहलन। कइसे-कइसे पहुँचलन बँगला साहेब गुरुद्वारा। गुरुद्वारा में कारसेवकन के सेवा से स्वस्थ भइलन।

www.bhojpurisahityangan.com

ओहिजे स्वतंत्रता सेनानी आर्य समाजी भाई परमानन्द से अचानक भेंट भइल। एगो सामाजिक इतिहस भाई परमानन्द (1876-1947) से भी जुड़ल बा। उपन्यास में जरूरत भर उनकर उल्लेख बा। भारतीय प्रभु वर्ग उनकर जोगदान के लगभग भुला गइल बा। सन् 1905 में ऊ भारतीय संस्कृति के प्रचार करे अफरीका गइल रहन। उनकर मुलाकात डरबन में गाँधी जी से भइल रहे। सन् 1907 में ऊ भारत लउट अइलन। ऊ गदर पार्टी के संस्थापक सदस्य रहले। अंग्रेजी सत्ता के विरूध साहित्य रचे के आरोप में उनका फाँसी के सजाय भइल, जवन बाद में आजीवन कारावास में बदल दियाइल। ओही भाई परमानन्द के सहयोग से भारतवंशी रतन दुलारी दिल्ली से बनारस आ गइलन। (एह मारग संसार को नानक थिर नहीं कोये)। एगो ऐतिहासिक तथ्य पर उपन्यास चुप बा कि आजादी के जस्न में कवन-कवन संगठन शामिल ना भइल आ राष्ट्रीय तिरंगा झंडा ना फहरवलक।

भारतबंशी रतन दुलारी के बाबा मूनेसर बनारसे के लगे के कवनो गाँव गिरमिटिया मजूर बन के अफरीका गइल रहन। ऊ मन बना लेले रहन आपन बाबा-दादा के जमीन खोजे के। ऊ भाई परमानन्द से कहलन ''हम चाहऽतानी कि इहे बहाने अपना पीतर लोग के माटी प जा के घर बसाईं।''

उपन्यास 'गंगा रतन बिदेशी' में आजाद भारत में 1970 के दसक में उभरल नक्सलवादी आंदोलन के कथात्मक प्रस्तुति बा। गाँव से उखड़ल एगो पूर्व सीमांत किसान के नजरिया से कलकत्ता के पोसता बाजार, नीमतला घाट, सेआलदह एसटेसन, लिलुआ, जलपाईगुड़ी चाय-बगान के सामाजिक जीवन के बिडंबना, अंतरविरोध के जथारथ के अजगूत बरनन बा। अइसन अंतरविरोध में जनविद्रोह पनपला से कवनों अचरज ना होई। प्रभवुर्ग के अपना सुख-सुविधा के आगे जनसामान्य के बदहाली तनिको ना लउकत रहे। उपन्यास में सचा सामाजिक इतिहास वर्णित बा। खेजुआ गाँव में पाँचों बिगहा के खेती साहूकार बनवारी साव किहाँ बेटा दीपू के हिरदय रोग के इलाज खातिर रेहन रख के युवा बिदेसी रोजी रोटी खातिर लईकाई के संघतिया निसऽरवा संगे कलकत्ता चल गइल। बिदेसी के नजर से तत्कालीन नीमतला घाट के कटु जथारथ- ''घाट के नगीच वाला इलाका में बहुत तरह के कारोबार चलेला। खाना-पीना, गांजा-चीलम से ले के चोरी-चकारी के कारोबार चलेला। खाना-पीना, गांजा-चीलम से ले के चोरी-चकारी, बेसया

www.bhojpurisahityangan.com

गमन अउर जईसन लोगिन के झगड़ा। ......। दोकान दोकान सब के पिछऽहीं रेल के लाईन धईले दारू के ठेक, अउर बेसवा लोग के खोली। ओही बीच में सब तरह के गरीब लोग के खोली। पूरबी पाकिस्तान, असमिया, राजबंसी, पूरबिया, राजस्थनी- के नईखे।'' ई तसवीर बा 1960 दसक के कलकत्ता महानगर के। सियालदह एसटेसन के इर्द-गिर्द ओइसने जिनगी बा। नारकीय। 'बिलचिंग (ब्लीचिंग) पाउडर अउरी मूत के अईसन बास में समाईल रहे सियालदह एसटेसन के बहरी से अईला पर पेट हूल मारे, लेकिन एहिजे रह गईला पर ऊहे सुबास के रूप ध लेवे ला।''

बिदेसिया के आँख आउर एगो सामाजिक जथारथ देखता जब ऊ चाय-बगान के मालिक रितिक मजूमदार के जलपाईगुडी के नजीक चाय-बगान के जमींदारी में नोकरी करे जाता। चाय-बगान के जमींदारी के भोर बिदेसिया के नजर में- 'एहिजा के भोर एकदम चटक, जईसे कि नींद के उठके कोरा में कुलाँच मारत एगो बच्चा। पातर धुआँ के ओढ़नी ओढ़ले नहाइल-धोआइल गाछ-रुख, पहाड़ पर से दउड़त आवत टऽटका बयार, भूअर करिया पहाड़ के पीछे से माथा उठऽवले ताकत बरफ के चोटी। ....जाड़ा जइसन सीत से भींजल धाम के अँकवारी में सटऽले चाय-बगान के भोर में कुछ त रहे जे बिदेसिया पहीले कबो ना देखले रहे.....।

''मजूमदार बाबू उठके बंगला के सामने के बगइचा में एगो आराम कुरसी पर परल बाड़न.... चुपचाप आकास ताकत बाड़न.... चारो ओर फर्र-फर्र रंगीन तितली देखत बाड़न.....।'' जलखई खातिर फल अउर दूध बा। खियाबे-पीआवे खातिर करमा दाजू आ बोजो जइसन नोकर दाई बा।

मजूमदार बाबू के तेरह चउदह साल के एकलउती बेटी बाड़ी डोना। ऊ आठवां क्लास में पढ़ली। विदेसी डोना के सेवा सत्कार खातिर बहाल बाड़न। मजूमदार बाबू के पत्नी हई माया देवी। ऊ पछिमी स्टाइल में रहली। ऊ जादातर कलकत्ता वाला मकान में स्वछंद रहेली। कभी-कभी बेटी डोना आ पति रितिक मजूमदार से मिले चाय-बगान वाला घर में आवेली। माया-डोना आ मजूमदार के रिश्ता में खटास बा। बिदेशी एह पारिवारिक खटास से परेशान बा।

डोना माई-बाप का ओर से सनेह के कमी विदेसी के नेह से पुरा करतिया। डोना-बिदेशी के नेह के बंधन से माया देवी आ रितिक मजूमदार

www.bhojpurisahityangan.com

सशंकित बाड़न। चाय-बगान के जमींदार से मजूमदार के बढ़िया आय बा। बेहिसाब आय के दूनों पति-पत्नी फिजूलखरची से लुटावत बाड़न। घोड़ा रेस से लेके सहभोज तक के रोमांचक बरनन बा। समाज में दू तरह के जीवन-शैली के दिलचस्प चित्रण बा उपन्यास में। एक ओर विराट वंचित समाज बा खाये-रहे-जीये खातिर मोहताज। दोसरा ओर खा-खा के उगीले वाला ऐयास निकम्मा लोग। अइसन में नक्सलबाड़ी उग्रवाद पनपल तनिको असंभव नइखे। नक्सली उग्रवाद से बचे खातिर रितिक मजूमदार बिदेसी के सियालदह एसटेसन से जलपाई गुड़ी के चाय-बगान में ले आवताड़न। 1960-70 दसक के पश्चिम बंगाल के सामाजिक इतिहास नक्सलवादी आंदोलन के चित्रण बिना अधूरा रही। 'गंगा रतन विदेसी' भोजपुरी उपन्यास में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी में पनपल उग्रवाद के समझे के बढ़िया कोसिस भइल बा।

बेटी डोना के बारे में माया देबी सशंकित बाड़ी। ऊ बेटी डोना के चेहरा प तकिया रख के ओकर दम घोंट के मार देल चाहऽताड़ी। रितिक मजूमदार डोना के बचावे के प्रयास में हमलावार माया देवी प हमला करत बाड़न। जानलेवा आघात से माया देवी के प्राणांत हो जाता। रितिक मजूमदार अपना के हत्या के आरोप से बचावे खातिर निर्दोस बिदेसी के छल कपट से फँसा दे ताड़न। बिदेसी के आजीवन कारावास के सजाय होता। ऊ परसीडेंसी जेल कलकत्ता में सजा काट रहल बा। जेल में बिदेसी के मुलाकात नक्सली युवा अभिगान (अभिज्ञान), तेलगू दीपक आदी नक्सलवादीयन से होता। बिदेसी नक्सलीयन के बात-बेवहार से प्रभावित होता। ई कथा-वस्तु मनगढ़ंत नइखे, भले एकर विश्लेषण वस्तुगत ना होखे।

उपन्यास में नक्सली विमर्श समाहित बा। नक्सली आंदोलन पर कथावाचक के कहनाम बा - ''नक्सलबाड़ी से उठल रहे ई खूनी आंदोलन। अनेकों चाय-बगान अउर ओकरा आसपास के जमीन पर आदिवासी लोग चढ़ाई कऽ के कब्जा कऽ लेलस। ......। एह इलाका में खाली राजबंसी लोग के एकचटिया राज रहे जमीन प। अंग्रेज अब अइलन तक मालिकाना के बिदेसी नियम लगइलन। .....। धीरे-धीरे बंगाली बाबू अउर मारवाड़ी लोग चाय-बगान खरीद के घुस गईले एह इलाका में। एकरा में केहू ओह जमीन प ना रहे। सब लोग कलकत्ता रहस अउर बगान उनकर मनेजर लोग चलावस-

www.bhojpurisahityangan.com

माहवारी वेतन पर। कमाईल पइसा सब कलकत्ता आवे, ओह इलाका के लोग के ओकरा से कोनो लाभ ना भईल (पृष्ठ 170)।'' उक्त आख्यान से स्पष्ट बा कि पश्चिम बंगाल के चाय-बगान में जमींदारी प्रथा आजादी के दू दसक बाद भी जारी रहल। आदिवासी मजूरन के मेहनत के लूट ओइसहीं जारी रहल। मजूरन के निजी जीवन के आख्यान नइखे, जबकी रितिक मजूमदार उनकर पत्नी माया देवी आ संबंधित अमीरन के ऐयासी आ लपंटई के विस्तृत चित्रण बा। चाय-बगान के वस्तुगत परिस्थिति के सटीक आख्यान बा। चाय बगान में उभरल नक्सलवादी आंदोलनकारी नेतृत्व कथावाचक के नजर में बाहरी बा- ''ई आन्दोलन सुरू करेवाला केहू एह जमीन के अदमी ना रहे। चारु मजूमदार एगो बड़हन किसान के बेटा रहन, अउर उत्तर बंगाल के एगो सहर सिलीगड़ी के रहत रहन। कानू बाबू पूरबी पाकिस्तान से आईल एगो रिफूजी रहन। अउर जंगल संथाल छोटानागपुर से आईल एगो आदिवासी रहे। किसान के नाम पर गढ़ल आन्दोलन में सब कोई रहे, किसान छोड़ के (पृष्ठ 170)।''

उक्त आख्यान बहस तलब बा। कवनो जनआंदोलन बिना जन समर्थन के एक दिन ना टिक सके। जनता जबले आत्मगत रूप से तइयार ना होखी, तब तक वस्तुगत परिस्थिति कतनो अनुकूल होखे; नेता कतनो क्रांतिकारी होखस; जनआंदोलन ना चली। नक्सलवाड़ी किसान आंदोलन के खारिज करे के प्रशासकीय नजर में रचनात्मक वस्तुगतता के अभाव बा। जलपाईगुड़ी-दार्जिलिंग के चाय-बगान के मालिक कलकत्ता निवासी कवनो सेठ-मारवाड़ी- जमींदार हो सकेला; बाकी चाय-बगान में काम करे वाला भूमिहीन किसानन के नेता सिलीगुड़ी निवासी कवनो राजनीतिक कार्यकर्ता ना हो सके; ई अद्भुत तर्क बा। गुजरात निवासी महात्मा गाँधी बिहार में चंपारन के किसान खातिर ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ सत्याग्रह आंदोलन कर सकेलन; बल्कि ऊ नटाल में गोरी हुकूमत के कर-विधान के खिलाफ सत्याग्रह कर सकत रहन, बाकी कानू बाबू दार्जिलिंग के चाय-बगान के भूमिहीन किसानन के शोषण के खिलाफ प्रतिरोध संगठित ना कर सकऽस। ईहाँ तक कि चाय-बगान मालिक रितिक मजूमदार एगो गरीब मजूर बिदेसी के हत्या के जुर्म में फँसा के ओकर जिनगी बरबाद कर सकेला, काहे कि वोह में एक बून खून नइखे बहत, रोपया जतना खरच होखो।

www.bhojpurisahityangan.com

डोना मजूमदार के अकथ पवित्र प्रेम कहानी गढ़े में कथाकार के खूब सफलता मिलल बा। गंगा रतन बिदेसी मूलत: एगो सीमांत किसान बा। खेजुआ (बनारस) में अधेड़ गंगझरिया-रतन दुलारी के घरे ओकर जनम होता। नदी में दहल जात लछीमिया के पालन-पेसन रतन के पड़ोसी राम सरन के बेटी के रूप में होता। लछीमिया-बिदेसी संगे-संगे सेयान हो ताड़न। दूनों के प्रेम-वियाह होता। बेटा दीपू जनमजात हिरदय रोगी बा। दीपू के इलाज में पाँचों बिगहा रेहन करे पड़ऽता। रतन के बुढ़ारी में खेत मजूरी करे पड़ऽता आ बिदेसी रोजी रोटी खातिर भटकत पहुँच जाताड़न रितिक मजूमदार के चाय बगान पर। उनकर काम बा रितिक मजूमदार के तेरह-चउदह बरीस के आठवां क्लास के पढ़ेवाली बेटी डोना के सेवा टहल। जनमतुआ बेटा दीपू आ जवान पत्नी लछीमिया के भुला नइखे पावत। डोना ओकरा के काका कहतीया। बिदेसी ओकरा के बऽबी कहता। बिदेसी के उमिर 22-23 बरीस से बेसी ना होई। ऊ रोज राति के डोना के दादी-नानी लेखा कहानी सुनावता। डोना के माई माया देवी जादे चाय-बगान से बाहरे रहऽताड़ी। डोना आ बिदेसी के अंतरंगता से माया देवी सशंकित बाड़ी। बापो के मन में कुछ बा। माया देवी के हत्या के बाद बिदेसी के बलि के बकरा बनावल जाता। बिदेसी के कारावास हो जाता। कारावास में गइला के तुरंत बाद डोना में कवनो छटपटाहट नइखे लउकत। बाद में डोना के बाप पर बिदेशी के मुक्त करावे खातिर दबाव बनावे लागऽतिया। एगो टहलुआ खातिर डोना के छटपटाहट से बाप आ वकील परेसान बाड़न। बिदेसी के बाप रतन के निधन हो जाता। डोना के प्रयास से बिदेसी परोल पर छूट के खेजुआ जा ताड़न। फिर जेल वापस। 14 बरीस के आजीवन कारावास बा। डोना के दबाव से बिदेशी के रेहन खेत मुक्त हो जाता, बेटा दीपू के हिरदय के सफल ऑपरेशन होता। डोना सेयान हो जातीया; नटाल में चाय-बगान खरीदत बिया। दार्जिलिंग में आपन कारोबार बढ़िया से सम्हारत बिया। ना वियाह करऽतिया ना बिदेशी के भुला पावऽतीया। अद्‌भुत प्रेम-कथा बा। दसवाँ क्लास में छात्रा रहे ओकर उदासी कटले ना कटत रहे। ऊ बिदेसिया से जेल में मिलल चाहत रहे। बिदेसिया डोना के देखऽते हँस के कहऽलक- ''अरे, हमार दुलारूआ बऽबी एतना उदास काहे? ...... बऽबी, तूँ हँसेलू त फूल झरेला।'' डोना हाथ बढ़ा के ओकर दाढ़ी से भरल मुँह छुअऽलक। बिदेसिया डोना के हाँथ के छूअला

www.bhojpurisahityangan.com

से विभोर हो के आँख मूँद लेलक, अउर ओकर हाँथ ध के सोहरावे लागल। दूनों परानी के मुँह से कव बोल ना निकलल देर ले। बस हाँथ में हाँथ धईले रोअत रहलन (सुखाईल पातर पानी के सोत, पेज 232-235)

बिदेसी जेल से मुक्त होके खेजुआ अइलन। डोना उड़ के गइली दखिन अफीरका। ओहिजा से सोझा दिल्ली, दिल्ली से बनारस। ठीक फगुआ के दिन दूबे जी आ समराट बोस के ले ले बनारस से खेजुआ। खेजुआ में फगुआ के दिन अकसमात डोना के देख के विदेसी, ओकर परिवार आ दोस्त अचंभित बाड़े। एकर लाजवाब बर्नन, 'सबके हँवें राम गोसांई' (305-323) अध्याय में बा। बिदेशी के मेहरारू लछीमिया बहुत चतुर आ बेवहारिक बिया। ऊ डोना के हाँथ जोड़ के नमसकार कइलक आ कहलक- "रउआ के हम का कहीं? सखी कहीं कि बहीन, कि बेटी? जाय दीहीं, एह सब में कुछो नइखे राखल!" लछीमिया के आंतरिक भय के सटीक चित्रण बा। डोना के जवाब पवित्र प्रेमी के लेखा बा- "चिंता जिन करीं, हम राउर बसल घर में सेंध ना मारब!" डोना लछीमिया-बिदेशी के दाम्पत्य जीवन में आग नइखे लगावल चाहत। ऊ बिदेसी के उपकार भुलाइल नइखे चाहत। ऊ दीपू के सुशिक्षित करे खातिर अपना साथे नटाल ले जातीया। बिदाई के समय लछीमिया के भावुकता के जवाब ना रहे। ऊ आगे बढ़ के डोना के अपना अँकवारी में भरलख अउर बिना कुछ कहले अपना माथा के सेनुर अंगूरी में लगा के डोना के माथा टीक देलख। कथाकार मृत्युंजय जी जबरदस्त किस्सागो बाड़न।

एह भोजपुरी उपन्यास के गद्य अपना ढंग के बा। भोजपुरी साहित्य में हिन्दी व्यंजन वर्ण के 'श', 'ष', 'ण' बहुत लेखक लोग प्रयोग कर रहल बा; मृत्युंजय जी सिर्फ 'स' के प्रयोग कइले बानीं। संयुक्ताक्षर के प्रयोग बहुत कम मजबूरी में बा। क्ष, त्र, ज्ञ, कहीं नइखे। एही से अभिज्ञान के 'अभिगान' लिखले बानीं। कुछ मशहूर नाम के भोजपुरीकरन कइल खटकऽता, जइसे: गोपाल कृष्ण गोखले के 'गोपाल किसन गोखले'; रवींद्रनाथ ठाकुर के 'रबिनदर नाथ ठाकुर'। एह उल्लेखनीय उपन्यास में प्रुफ देखे में तनी असावध ानी बा बेसब्री लउकता। कतहीं धुआँ बा आ कतहीं धूआँ। कहीं 'कोनो' कहीं 'कवनो'। कहीं 'बेबसथा' (16), कहीं 'बेवस्था' (पेज 19)। अईसन, गईलें, अईलें, आईल, कईलन, गईल, अझुराईल पढ़े से लागऽता कि भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

भासी लोग 'ई' (दीर्घ) के बहुत पेयार करेलन आ ऊ 'इ' से दूरी बनवले रहेलन।

उपन्यास में कथारस जबर्दस्त बा।

❐❐

पुस्तक के नाम - गंगा रतन बिदेसी (भोजपुरी उपन्यास)

लेखक - मृत्युंजय

प्रकाशक - भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003

www.bhojpurisahityangan.com

बनचरीः हिडिम्बा कऽ आर्यीकरण

भोजपुरी में उपन्यास लेखन के गति धीमा बा। पत्र-पत्रिकन में ओकर चर्चा-आलोचना भी कम बा। 'पाती' के यशस्वी संपादक अशोक द्वि वेदी के भोजपुरी उपन्यास 'बनचरी' सन् 2015 में प्रकाशित बा। भोजपुरी में तीन सै पेज के उपन्यासन के एक हाथ के अंगुरियन पर गिनल जा सकेला। इ सर्वज्ञात बा कि महाभारत युद्ध में वीरगति प्राप्त सेनानायक घटोत्कच के महतारी रहे हिडिम्बा। भारत के वर्तमान हिमाचल प्रदेश राज्य में मनाली में देवी हिडिम्बा के मंदिर बा। मनाली जात्रा करेवाला सैलानी लोग देवी-हिडिम्बा के दर्शन आ पूजा-अर्चना करेला। लोकचेतना में अविस्मृत हिडिम्बा भारतीय साहित्य में लगभग उपेक्षित बाड़ी। भारत के नारी-सशक्तिकरण के दौर में लोकचेतना में बसल मातृशक्ति के प्रतीक हिडिमा उर्फ हिडिम्बा के चरित्र आ व्यक्तित्व के नवसिरिजन भोजपुरी-हिंदी के सुख्यात साहित्यकार अशोक द्विवेदी भोजपुरी उपन्यास 'बनचरी' में कइले बाड़न। 'बनचरी' उपन्यास अनार्य कुल में जनमल तेयाग, तपस्या, प्रेम, दया, करुणा आ वात्सल्य के प्रतिमूर्ति देवी हिडिम्बा के बहुआयामी व्यक्तित्व पर केन्द्रित बा। उपन्यास में हिडिम्बा के भोजपुरीकरन हिडिमा के रूप में बा।

कृतिकार अशोक द्विवेदी 'बनचरी' के पूर्वकथ्य में लिखले बानीं: ''बनचरी'' में मनुष्य बनने का प्रयत्न, प्रेम, त्याग और तप है। सत्य, समानता और न्याय के लिये संघर्ष है। अकथ प्रेम की अनुभूति और प्रतीति

www.bhojpurisahityangan.com

है, मातृत्व की करुणा और दया है, बन्धन और मुक्ति की छटपटाहट है; अपने कालखण्ड के अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर की तलाश है।'' यानी लेखक 'बनचरी' लेखन के रूप-रेखा पहिले गंभीरता पूर्वक तइयार क लेलीं जेसे कि महाभारतकालीन कथा प्रसंग पर आधारित कथानक के आधुनिक संदर्भ दिहल जा सके।

महर्षि वेदव्यास कृत महाभारत में हिडिम्बासुर-भीम मलय युद्ध, हिडिम्बा-भीम के प्रेम, हिडम्बा-भीम पुत्र घटोत्कच के विकट युद्ध आ वीरगति प्राप्त करे के वर्णन, भीष्मपर्व, द्रोणपर्व में प्रसंगानुसार बा। इ कहल जा सकता कि 'बनचरी' उपन्यास के आधार सामग्री महाभारत-कथा से लेल गइल बा। बाकी महाभारत कथा में 'बनचरी' के महानायिका हिडिमा (हिडिम्बा) के निजी-जीवन वृत्त उपलब्ध नइखे। बे निजी जीवन-वृत्त के उपन्यास के सिरिजन संभव नइखे।

उपन्यास के आरंभ वरणावत के लाक्षागृह में जर के मरे से बाँचल पांडव भाईन के कथा प्रसंग से होता। नाव में गंगा पार क के दखिन दिशा के सघन बन प्रांतर में एगो सुरक्षित पड़ाव के तलाशत पांडव भाईयन के अभ्यांतर के चित्रण बा। सघन बन में हिडिम्बासुर एगो गाछ पर अलोत बइठल बा। ऊ बहिन हिडिमा के भीमसेन के शिकार करे के उद्देश्य से भेजता। महाभारत में स्पष्टतः हिडम्ब के मानुसखोर राक्षस कहल गइल बा। हिडिमा भीम के शिकारे करे के मंसा से उनका नगीच जात बिया, बाकी भीम के रूप यौवन देखि के ओकर काम-वासना जागृत हो जाता। भीम के प्रति ओकर विचार बदल जाता। ऊ मानसी रूप में भीम से प्रणय निवेदन करे लागत बिया। ओकरा भाई हिडिम्ब के बहिन के मंसा में आइल बदलाव पसन्न ना परल। ऊ बहिन के मारे दउरल। हिडिमा के स्त्री जानि के भीम ओकर बचाव कइलन। बाद में भीम का साथ मल्ल युद्ध में हिडिम्बासुर मारल गइल। भाई के वध के बादो हिडिमा भीम के माई कुन्ती से भीम से वियाह खातिर अनुनय-विनय कइलसि।

बनवासी हिडम्ब-हिडिम्बा के राक्षस कहे आ समझे से 'बनचरी' के कृतिकार के असहमति बा। ऊ प्रतिपादित करत बाड़न कि ''देवता आ राछस आदमिये के बनल-बिगड़ल रूप हऽ। रूप, आकार, भेख आ पहिरावा से अदिमी के आदमी देवता आ राछस नियर देखावल जाला बाकि साँच त इहे

www.bhojpurisahityangan.com

बा कि अदिमी अपना अचार-व्यवहार-सोच आ अच्छा बुरा कर्म से देवता आ राछस बनेला (पृष्ठ 20)।'' बन में बसे वाला लोगन से ''तथाकथित समझदार समाज ओके हमेशा अपना दृष्टि से असभ्य मानि के ओसे आपन दूरी बनवले रहि गइल।'' अनार्य कुल में जनमल हिडिमा भीमसेन के प्रति कवनो असभ्य आचरण नइखे करत, बलुक आधुनिक सुशिक्षित युवती लेखा उनका से वियाह के प्रस्ताव राखत बिया। 'हिडिमा (एही) जंगली आ असभ्य जाति के रहे- एगो अइसन नारी प्रतिनिधि, जेकरा भीतर सभ्य आ सुशिक्षित समाज का नारिये लेखा रूप, नैन-नक्श, शरीर के सुघराई, यौवन, प्रेम, दया आ करुणा से भरल हिरदया रहे।'

पांडव माताश्री कुन्ती के मनोजगत के उपन्यास में सटीक वर्णन बा। आधुनिक संदर्भ में ऊ रूढ़िवादी नारी के प्रतीक बाड़ी। उनकर जातिवादी संकीर्णता समन्वयवादी चेतना के एकदम विपरीत बा। उनकर रक्त शुद्धतावादी मानसिकता राष्ट्रीय एकता आ अखंडता के मार्ग में अवरोधक बा। भौतिक आ तकनीकी समृद्धि से केहू सभ्य कहाये के हकदार ना हो जाए। प्रेम, दया, करुणा आ उन्नत मानवीय संवेदना के संरक्षक आ पोसक सभ्य-संस्कृत कहाये के हकदार होला। माता कुन्ती भीम संगे वियाह के बारे में हिडिमा के विनती एह शर्त के साथ स्वीकार करत बाड़ी कि ''तहरा पूत जनमला तक, भा एक बरिस तक ले भीम इहाँ रहिहें। तूँ कबो आगा चलि के राजकुल का वियहुती मेहरारू लेखा, राजरानी के अधिकार ना मँगबू (पृष्ठ 31)'' हिडिमा-भीम के बियाह संबंधी प्रस्ताव के ऊ आर्य-अनार्य के आधार पर नकार देत बाड़ी, ''भला एगो आर्य कुल में तू कुलवधु कइसे बन सकेलू, हमार समाज राक्षसी अनार्य कुल में वियाह के मान्यता दिहल त दूर एकर खिल्ली उड़ाई (पृष्ठ 26)।''

आधुनिक काल में अंतर्जातीय-अंतधार्मिक वियाह विमर्श के राष्ट्रीय मुद्दा बा। एह से 'बनचरी' के वैवाहिक विमर्श समकालीन वैवाहिक विमर्श से स्वतः जुड़ जाता। प्रेम में पागल हिडिमा माता कुन्ती के शर्त आँखि मुँद के स्वीकार क ले तिया। अल्हड़ जवानी में दूरदर्शिता के अभाव बा। ओकरा ई अनुमान नइखे कि एगो पूत पयदा कइला के बाद पति के अनुपस्थिति में ओकर का राह-रहता होई। ऊ मातृहीन-पितृहीन बिया; सहोदर भाई के वध हो चुकल बा। राज के कबीलन के उपस्थिति में वृकोदर (भीम) से हिडिमा

www.bhojpurisahityangan.com

के वियाह राजपुरोहित द्वारा संपन्न हो जाता। हिडिम्ब के वध के बाद वनक्षेत्र के वोह इलाका के भीम के महाराज घोषित क दियाइल। महाभारत कथा में वनक्षेत्र के महाराज भीम के बनावे के प्रसंग नइखे। इ 'बनचरी' उपन्यास के कथा-सत्य ह। महाराज घोषित होते वृकोदर (भीम) वनक्षेत्र में नरमांस खाये पर प्रतिबंध लगा देत बाड़न।

माता कुन्ती से वियाह का अनुमति मिलला के बाद हिडिमा कबीला के बड़-बुजुर्ग के चरण-स्पर्श करत बाड़ी। आदिवासी कबीलाई समाज में बड़-बुजुर्ग के पाँव छू के गोड़ लागे के परंपरा नइखे। इ आर्य परंपरा हिडिम्बासुर के समाज में कहाँ से आइल? हिडिमा मंत्री उत्तुंग आ राजपुरोहित के गोड़ छू के अभिवादन करत बाड़ी। ऊहाँ कबीला समाज के जुटान में एगो श्वेत केशी वृद्ध आचार्य उपस्थित बानीं। आचार्य जी आचार्य चाण्डक हईं। आदिवासी समाज में इहाँ के बहुते मान-सम्मान बा। वियाह के बाद हिडिमा के साथे महाबली वृकोदरो आचार्य चाण्डक के प्रनाम करत बाड़न। आचार्य जी के आशीर्वादी वचन से भीम चिहा जात बाड़े- ''आर्यपुत्र से हम बहुत प्रसन्न बानीं। उमेद बा आपका निर्देशन में अनार्य कहाये वाला एह समाज के बहुत हित होई (पृष्ठ 33)।''

आर्यपुत्र संबोधन पर भीम के चिंहुकल सुभाविक बा। ऊ लोग लुकाये-छिपे खातिर बिहड़ वन में दुर्योधन के भय से आइल रहलन। उनका लागल कि आचार्य चाण्डक दुर्योधन के कवनो भेदिया त ना हवन! आचार्य खुदे भेद खोललन कि ऊ हस्तिनापुर के राजकलह से परिचित बाड़न। उनका मानविकी ज्ञान के अनुसार बनवासी समाज आ तथाकथित आर्य समाजो में असामाजिक आ अमानवीय बेवहार करे वाला लोग बा।

वियाह मंडप में बनवासी राजपुरोहित के साथे आचार्य चाण्डको शुद्ध भाषा में स्वस्तिवाचन करत बाड़न। ''चालुक्य राजवंश के सबसे महान सम्राट पुलकेसिन द्वितीय के 5वीं शताब्दी के एहोल अभिलेख में बतावल गइल बा कि महाभारत युद्ध 3,735 बरिस पहिले भइल रहे एह दृष्टिकोण से महाभारत 3100 वर्ष ईसा पूर्व लड़ल गइल होई। माने अब से 5100 वर्ष पहिले।'' आज से 5100 बरिस पहिले आदिवासी समाज में आचार्य चाण्डक के उपस्थिति विस्मयकारी आ रोचक बा। विद्वान लोग कहले बा कि साहित्य समाज के दरपन ह। कृति में समकालीन समाज के चेहरा लउके के चाहीं।

www.bhojpurisahityangan.com

महाभारत कालीन समाज पर आधारित कृति में बीसवीं सदी के कथा पात्र लउकी त ओकरा विश्वसनीयता पर संकट आई, ओकरा पाठकीयता पर असर परी। फार्मूलाबद्ध रचना के ना सार्वजनिक स्वीकृति मिले, ना ऊ दीर्घजीवी होला।

आचार्य चाण्डक में अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के संस्थापक बाला साहेब देशपांडे के छवि झलके त आश्चर्य ना। वनवासी कल्याण आश्रम के स्थापना 26 दिसम्बर, 1952 ई. के वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य के जशपुर में भइल रहे। एह आश्रम के घोषित मकसद जनजातीय समुदाय में राष्ट्रीय चिंतन के भावना जगावल आ उनकर सर्वांगीण विकास रहे। बाला साहेब के मूल नाम रमाकांत पांडे रहे।

'बनचरी' के कथा-संयोजन काफी रोचक बा। हिडिम्ब, हिडिमा (हिडिम्बा), घटोत्कच, भीम, जुधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल, सहदेव, कुन्ती, द्रौपदी, धृतराष्ट्र, दुर्योधन, भीष्म, द्रुपद, जटासुर, बकासुर, सूरसेन, मत्स्य देश, जरासंध, राजा विराट, विराट के साला कीचक, महारथी सुशर्मा, महारथी कर्ण, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, अभिमन्यु, इरावान, वासुदेव कृष्ण आदि सभे 'बनचरी' उपन्यास के किरदार बा। कथाभूमि हस्तिनापुरी से कुरुक्षेत्र तक फयलल बा। औपन्यासिक कथा संघटन खातिर कृतिकार द्व ारा रचल-गढ़ल किरदारन में मंत्री उत्तुंग काका, पुरोहित काका, आचार्य चाण्डक, सखी निरिमा, भाई निम्बा, काकी कुन्दकी, शालि ऋषि, निरिमा के पति अंगुठ, सेनानायक दांडी, उपसेनानायक पुण्डरक, कुंदु, गुप्तचर मुंडार, भेदिया अनुचर चण्ड, चुरु, गुप्तचर मिलिन्ड, निघंट, मुण्ड आदि क ेनावँ उल्लेखनीय बा। गढ़ल किरदारन के नामकरण में उपन्यासकार काफी सचेत बाड़न। आदिवासी नावँ आदिवासी संस्कृति आ परंपरा के अनुकूल बा। असुर कुल में जनमल हिडिमा के निजी-पारिवारिक सामाजिक जीवन के चित्रण उपन्यास विधा के अनुकूल बा। हिडिमा-भीम के वियाह के औपचारिकता पूरा भइला के बाद पति-पत्नी के बीच रोमांस सुभाविक बा। उपन्यास में हिडिमा-भीम के रोमांस के सरस चित्रण बा। इ कुल्हि उपन्यास कला के सजावटी आभरण ह। 'बनचरी' के मूल विमर्श के मुद्दा भारतीय समाज में आर्य-अनार्य संस्कृति के समन्वय बा। दोसरा शब्द में सदीयन से बसल भारत-भूमि में आदिवासी-गैर आदिवासी समाज के बीच शांतिपूर्ण

www.bhojpurisahityangan.com

सह–अस्तित्व के भावना कतना पलल–बढ़ल। एह परिप्रेक्ष्य में 'बनचरी' के पाठ बेवहारिक आ समीचीन होई। समन्वय के प्रक्रिया में लेखकीय तटस्थता जथारथ के प्रस्तुत करे में कतना रहल। काहें कि साहित्य समाज आ राजनीति के नियामक शक्तियन के राह अँजोर करेला।

वियाह के बाद वृकोदर उर्फ भीम वनक्षेत्र में महराज बाड़न आ हिडिमा रानी बाड़ी। हिडिमा के राज में शालि ऋषि के आश्रम बा। अनार्य वनवासी राज के आपन स्वायत्त संप्रभु बेवस्था बा जवना में एक से एक चतुर जोधा, भट, मल्ल, भेदिया, धावक बाड़े। हिडिमा के एहसास बा कि हस्तिनापुर से निष्कासित ओकर सास कुन्ती बहुत कुछ छिपावत बाड़ी। एक ओर अनार्य समाज के खुलापन बा आ दूसरा ओर आर्य समाज के अभेद्य जटिलता आ अविश्वास बा। प्रेमपूर्ण बेवहार से हिडिमा पति भीमसेन के दिल जीत लेल चाहतिया। बाकी परिस्थिति के बिडंबना बा कि पांडव परिवार अज्ञातवास में बा; ऊ जादे दिन शालि ऋषि के आश्रम में टिकल नइखे चाहत; ओकरा आपन ठेकाना जल्दी–जल्दी बदलहीं के परी। उनका लोग के भेद खुले के डर बा। भेद खुलल कि अज्ञातवास के अवधि बारह बरिस बढ़ जाई। अर्जुन के उलझन बा कि 'ई क्षेत्र अतना दूर नइखे कि पापी दुर्योधन आ कपटी शकुनी मामा के चल्हाँक भेदिया गुप्तचर ना पहुँचि जइहें सऽ।'

हिडिमा आश्रमवासी कन्या लेखा सूती साड़ी पेन्हत बिया; ऊ सास कुन्ती से आर्यजन के प्रिय भोजन सामग्री 'खीर' बनावे के सीखत बिया। वनवासी आश्रम के प्रभाव में अनार्य हिडिमा अपना के आर्य जीवन–शैली में ढाले के लगातार कोशिश कर रहल बिया। सुभाविक बा इ कथा–प्रसंग महाभारत में नइखे। ई कृतिकार के गढ़न बा। कथा–प्रसंग में वनवासी अनार्यन के आर्यीकरण के प्रयास के अंतर्ध्वनि बा। आदिवासी क्षेत्र में मसीही मिशनरी सब भी सदीयन से सक्रिय बा आ वनवासीयन के धर्मांतरन करे में सफल बा।

आर्य समूह आदिवासी समाज के जीवन शैली के प्रति श्रेष्ठताबोध से ग्रस्त एगो काल्पनिक पूर्वाग्रह पाल लेले बा कि आदिवासी जनजातीय समुदाय नरभक्षी ह। एह पूर्वाग्रह के खिलाफ 'बनचरी' के आख्यान में पांडव पुत्र भीमसेन के अनुभूतियन के बिना पर ठोस औपन्यासिक क्रिटिक के कथा–विन्यास बा। वनक्षेत्र में नवोढ़ा पत्नी हिडिमा के साथ आहार–बिहार

www.bhojpurisahityangan.com

के दौरान भीमसेन अनुभव करत बाड़न कि -

"हिडिमा का नित नया बदलत मानवी रूप आ व्यवहार पर उनका अचरज त होते रहे, भीतर ओकरा से लगाव आ अनुरागो प्रबल होत जात रहे। राक्षस कहाये वाला एह समाज में ओकर नरभक्षी क्रूर सुभाव आ बेवहार के बारे में बनल काल्पनिक पूर्वाग्रह खतम हो गइल (पृष्ठ 59)।"

वनक्षेत्र में महाराज के रूप में भीम हिडिमा के दूनों भाईयन संगे भ्रमण के दौरान ऊ अनुभव करत बाड़न कि "जवना समाज के ऊ उटपटांग जंगली आ असभ्य बूझत रहलन, ओकर कतना सोचल-समझल अनुशासित बेवस्था बा (पृष्ठ 67)।"

भीम आदिवासी समाज के धनुर्विधा के ज्ञान से प्रभावित बाड़न। भविष्य में उनका कौरवन से युद्ध लड़हीं के परी। भाईयन के उनकर समझाइस बा, "हम अपना अनुजन के इहाँ भीतर बेवस्था देखवला के साथ, जुद्ध-कला का प्रशिक्षण खातिर सहजोग लिहल चाहत बानीं।" तथाकथित अनार्य समाज सैन्य कला में पीछे नइखे। राजनीतिक दृष्टि से माता कुन्ती खातिर वन प्रवास महत्वपूर्ण रहे; "हिडिमा के कारन, एगो संगठित शक्तिशाली समुदाय के समर्थन मिल गइल। इ कथा-वस्तु के संयोजन 'बनचरी' के विमर्श के अनुकूल बा। मूल महाभारत कथा में कुन्ती के अभ्यांतर के अइसन मनोवैज्ञानिक चित्रण नइखे। उपन्यासकार अशोक द्विवेदी के इ रचना कौशल 'बनचरी' के पठनीयता में इजाफा करता।

आगे हिडिमा-भीम के दाम्पत्य जीवन के मुधर आ जीवंत वर्णन बा। हिडिमा गर्भवती हो गइल बाड़ी। माता कुन्ती गर्भवती हिडिमा के कुल के पहिली संतान के जननी होखे के उपलक्ष्य में मोती का माला उपहार में देत बाड़ी। बाकी हिडिमा जिनगी के जथारथ के अनुभव करत उदास बिया। रहि-रहि के ओकरा कुन्ती माता के बात इयाद आवता: "तूँ अधिका से अधिका एक बरिस भा सन्तान पैदा भइले तकले भीम के सँगे रहि सकेलू (पृष्ठ 120)।" महाभारत में परित्यक्ता हिडिमा के पक्ष में ना कवनो विमर्श बा ना ग्रंथकार के कवनो संवेदना बा, काहें कि महाभारत के रचना शुद्ध आर्य दृष्टि से आर्य संस्कृति के पक्ष में भइल रहे। 'बनचरी' के रचना आर्य-अनार्य संस्कृति के समन्वय के दृष्टि से भइल बा। एकर संवेदनात्मक कथा-विन्यास में अनार्य हिडिमा के प्रति गझिन संवेदना बा। कथा-वस्तुअन

www.bhojpurisahityangan.com

के रचाव उच्च-कोटि के बा। दिल-मथे वाली करुणा के उद्रेक बा। हिडिमा के अभिज्ञान बा कि आर्यपुत्र भीम होखे वाली संतान के जनम होते पूर्वशर्त के मुताबिक ओकर परित्याग क दिहे। आर्यपुत्र वायवीय बातो कइले बाड़नः ''हम जानत बानीं कि हमार प्रानप्रिया भार्या हिडिमा, इहाँ ओकर संरक्षक रही। हमार आधा अंग, आधा बल बन के, ऊ हमार पूत के बुधिमान, गुनी, दयालु आ पराक्रमी जोधा बनाई (पृष्ठ 121)।'' ......हम का करीं हिडिमी, ना त हम आदर्श पति बननी, ना आदर्श पिता। हम अपना परिस्थिति से विवश बानीं हिडिमी।''

भीम के वक्तव्य में आर्य संस्कृति के छलसिक्त शब्दावली के अंतर्ध्वनि बा। बाकी बनवासी हिडिमा के उदात्त तेजस जवाब बाः ''रउरा जाईं स्वामी, अपना भाईयन का संग, अपना सँग भइल हर अन्याय, हर अधर्म के नाश करीं, हम रउरा सफलता खातिर तप करत रहब (पृष्ठ 121) ।'' हिडिमा तेयाग, तप, करुणा, ज्ञान के प्रतिमूर्ति लउकत बिया। पतिव्रता अनार्य नारी।

एक दिन अचानक माता कुन्ती सहित पांचों पांडव शालि आश्रम वासीयन से विदा लेके हिडिमा के बिना बतवले वन क्षेत्र से चल गइल। पता चलता पर हिडिमा के बड़ा दुःख होता। जे जादे सभ्य रहे ऊ कृतघ्न निकलल। हिडिमा के मनःस्थिति के सटीक चित्रण बाः ''हिडिमा उनकर अर्धांगिनी, ओह वन साम्राज्य के राजकुमारी जवन उनके आ उनका परिवार के अतना दिन आश्रय दिहलस, पोसन आ रक्षन कइलसि, चले के बेर कवनों कृतज्ञता जतावल त दूर वोके बतावलो जरूरी ना समझल (पृष्ठ 126)।'' ओकरा पति भीम के देल वचन इयाद आईल कि ऊ उनका पूत के पिता लेखा बनाई। ओकरा जिये के अर्थ मिल जाता। ऊ राज काज, खेती-किसानी, लइकन के पढ़ाई-लिखाई, रक्षकन के प्रशिक्षण में रुचि लेवे लागतिया। ऊ सामान्य गृहिनी के जीवन जिये लागतिया। ऊ पर्णकुटीर के भीतर-बाहर झाड़ू लगावे में संकोच नइखे करत।

महाभारत के आदिपर्व में वैशम्पायन-जनमेजय संवाद में हिडिमा-भीमसेन वियाह आ घटोत्कच के जनम के प्रति संक्षिप्त कथा बा। ओकरा अनुसार वन में पांडव परिवार के प्रवास के दौरान घटोत्कच क जनम भइल। ऊ पांचो पांडव आ माता कुन्ती के कहलक- ''आप लोग हमारे

www.bhojpurisahityangan.com

पूजनीय हैं। आप नि:संकोच बताइये कि मैं आपकी क्या सेवा करूँ।'' कुन्ती कहली कि ''बेटा! तू कुरुवंश में उत्पन्न हुआ है.... इन पाँचों के पुत्रों में तू सबसे बड़ा है। इसलिये समय आने पर इनकी सहायता करना।'' घटोत्चक कहले रहे, ''जब आप लोगों को कोई आवश्यकता हो तो मेरा स्मरण करें।''

सवाल बा कि पिता भीमसेन के बिना कवनों संरक्षण-प्रशिक्षन के घटोत्कच कइसे एगो उत्कृष्ट सेनानायक के रूप में विकसित हो गइल? ओकरा वीरता के वर्णन महाभारत के भीष्मपर्व में उपलब्ध बा। 'बनचरी' के अध्याय 21, 22, 23 में घटोत्कच के वीरता के प्रभावशाली वर्णन बा। बाकी महाभारत कथा में महतारी हिडिमा के तेयाग, तप, संवेदना के तनिको उल्लेख नइखे।

आयार्य चाण्डक हस्तिनापुर के गतिविधियन के खबर हिडिमा आ बनवासी समाज के देत बाड़न। पति भीमसेन कबो खबर नइखन लेत। सचेत हिडिमा आचार्य से प्रश्न करत बिया, ''आचार्य! कबो आर्यपुत्र हमनों के इयाद करेलन? (पृष्ठ 158)।'' आचार्य के उत्तर सत्ता पक्ष में बा। आर्य पति द्वारा अनार्य पतिव्रता हिडिमा के उपेक्षा ओकरा प्रश्न में चीत्कार करता। पांडव परिवार के घटोत्कच खातिर कवनों चिंता नइखे। आचार्य जी के कठोर समझाइस बा, ''तूँ अपना संतान घटोत्कच के संगे माता, गुरु आ संरक्षक तीनों रूप में बाड़ू।'' आचार्य के योगदान घटोत्कच के योग-अभ्यास आ प्राणायाम आ ध्यान करावे तक सीमित बा। एह कथा-तत्व में काल दोष बा। पंतजली के योग के जनक मानल जाला। पतंजलि शुंग वंश के शासनकाल में रहले। कीथ के मुताबिक, पतंजलि के समय 140 से 150 बरिस ईसा पूर्व रहे। माने आज से 2150-2200 बरिस पहिले आ महाभारत युद्ध 5100 वर्ष पहिले भइल रहे। आचार्य चाण्डक के महिमामंडन में विश्वसनीयता के संकट बा।

जुआ के खेले में पराजय के बाद महाराज जुधिष्ठिर के बनवास के सजा मिलल। बनवास के जात्रा में सदुपयोग खातिर पांडव परिवार द्रौपदी सहित उत्तर दिशा के पहाड़न का ओर गइल। 'बनचरी' के अध्याय 18 में पहाड़न के सुषमा के मनोहर वर्णन बा। पहाड़ के दुर्गम जात्रा में पांडव परिवार एकदम लस्त-पस्त हो गइल। बलवान भीम पीठ पर लाद-लाद के थाकि गइलन। भीम पुत्र घटोत्कच के स्मरण कइलन। ''कम-से-कम द्रौपदी

www.bhojpurisahityangan.com

के प्राण-रक्षा हो जाई (पृष्ठ 186)।'' एह प्रसंग में 'बनचरी' में अपराध बोध ग्रस्त भीम के अंतरंग के सटीक चित्रण बा- ''जवना पूत के जनमते ऊ लोग निरमोही होके छोड़ि आइल, जवना बनचरी प्रिया के ऊ अलवांते असहाय छोड़ अइले आ आजु ले एतना बरिस ओकर सुधियो ना लिहले, आज संकट परला पर ऊ ओके इयाद करताड़न। कवना मुँहे बोलावसु (पृष्ठ 186)।'' आर्य परिवार के संकीर्णता, स्वार्थपरकता आ संवेदनहीनता उजागर होता।

घटोत्चक अपना साथीयन के संगे दुर्गम पर्वत पर उपस्थित भइल आ पिता श्री भीम के परिवार के मदद कइलसि, अपना वनक्षेत्र में लवटि गइल। ई प्रसंग महाभारत कथाके संवेदनात्मक विस्तार देता आ मानवीय संवेदना के सघन करता। नि:स्वार्थ सेवा भावना के स्थापित करता।

परित्यक्ता हिडिमा बिछोह आ अलगाव में जी रहल बिया, तबो पति भीमसेन के कुशलक्षेम खातिर चिंतित बिया। ओकर प्रेम आ समर्पण एकतरफा बा। ऊ अनार्य नारी एकतरफा प्रेम आ बिरह के प्रति मूर्ति बिया। ऊ अपना के समाज सेवा से जोड़ लेले बिया। ओकर उदात्त चरित्र के उद्भावना बा। ऊ बीतराग का ओर अग्रसर बिया। ऊ करुणा आ दया के पात्र बिया।

अपना भेदियन के मार्फत घटोत्चक के पांडव लोगन के खबर मिलत रहता। कौरव पांडव युद्ध अवश्यंभावी बा। घटोत्कच पिता तरफ से युद्ध लड़े खातिर तत्परे ना बलुक अपना सैन्य बल के तइयारी में लागल बा। ऊ माता हिडिमा से अनुमति चाहता। हिडिमा पति पक्ष के उपेक्षा से त्रस्त या उदासीन बिया। दूनों पक्ष के जुदाई के लम्बा अंतराल बा। ओकर दाम्पत्य जीवन बिखर गइल बा। ओकर एकतरफा निष्ठा झांझर हो गइल। ऊ दिकिया के युवा पुत्र कठोत्कच से पूछ बइठलसि, ''का तहरा पिता महाराज से कवनों सूचना तोहके मिलल बा? या तोहरा पिता जी के कवनों सनेसा आइल बा? (पृष्ठ 233)।'' हिडिमा घटोत्कच के पुत्र-धर्म पालन के अनुमति दे देत बिया।

मंत्री उत्तुंग के युवराज घटोत्कच का अप्रतिम शौर्य आ अवसान (वीरगति) होइला के दुखद सूचना मिल चुकल रहे (पृष्ठ 259)। वीरगति प्राप्त युवा पुत्र के अन्त्येष्टि कुरुक्षेत्र के रणभूमि में पिता भीम क दिहले। स्वयं महाराज वृकोदर उनका चिता में अग्नि दिहले। प्रत्यक्षदर्शी सैनिकन का मदद से कुन्दु चिता भस्म के पाँच स्थल से थोड़ा-थोड़ा उठवलस आ अँगोछा

www.bhojpurisahityangan.com

में बान्ह लेलक (पृष्ठ 264) कुरुक्षेत्र में युद्ध जारी रहल। एह युद्ध में हिडिमा के सर्वनाश हो गइल। पार्वती नदी के जल अनार्य कोख से जनमल वीरगति प्राप्त घटोत्कच के अस्थि अवशेष विसर्जित क दियाइल। प्राणोत्सर्ग के बाद अनार्य घटोत्चक के अस्थि अवशेष विसर्जित क दियाइल। प्राणोत्सर्ग के बाद अनार्य घटोत्चक के आर्यत्व के सनद मिल गइल। मृत्योपरांत एगो अनार्य के आर्यीकरण हो गइल! आचार्य चाण्डक के साधना सफल हो गइल! आर्य संस्कृति अनार्य संस्कृति के निगल गइल।

'बनचरी' उपन्यास उनतीस अध्याय में प्रस्तुत बा। भारतीय संस्कृति विविध संस्कृतियन के समुच्चय ह। सब संस्कृतियन के आपसी मेलजोल आ समन्वय से विशाल भारत के लोक बनी। महाभारत युद्ध में अनार्य बनवासियन के बेशर्त सहयोग आर्य सत्ताधारी वर्ग के मिलल, बाकी अनार्यन के ओह सत्ता समीकरण में आदर सम्मान ना मिलल। 'बनचरी' उपन्यास अनार्य समुदाय के इ आंतरिक क्लेश व्यंजित करे में पूर्णत: सफल बा। आजो भारत में आर्य-अनार्य में मनभेद खतम नइखे भइल। भारतीय राष्ट्र के एकता अखंडता खातिर अबहीयों इ गंभीर सांस्कृतिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक चुनौती बा। 28 वाँ अध्याय में युवा पुत्र घटोत्कच के वीरगति प्राप्त कइला पर उपेक्षित हिडिमा आचार्य चाण्डक के सांस्कृतिक समन्वय के नीति पर प्रश्नचिह्न लगावत बिया: ''एह समन्वय के अर्थ ई भइल कि 'लोक' का निर्माण में सबकर भूमिका के महत्व बा। फिर काहे ई ज्ञान संपन्न आर्य हमनी के अपना बराबर आ समान श्रेणी में ना मनलन? ई उन्हन के अपना श्रेष्ठता के पूर्वाग्रह आ अभिमाने न रहे।'' ओके माता कुन्ती के मन परल। ऊ ओकरा से पहिलहीं वचन ले लिहली कि ऊ कबो उनका कुल के उत्तराधि कार ना माँगी। कुछ समय खातिर...... संतान भइला ले उनका पूत का संगे रही, कुलवधू आ रानी के अधिकार ना जताई।'' बनवासी हिडिमा अन्य जाति समुदाय के नारीयन के सवाल उठावत बिया: ''ऊहे ना उनकर पुत्र अर्जुनों के विभिन्न जातियन से कतने प्रेयसी आ पत्नी बनली सऽ। उहनियों के कुलवधू का अधिकार से वंचित राखल गइल (पृष्ठ 304)।'' आगे ऊ आरोपित करत बिया: ''अउर तर अउर महायुद्ध समाप्त भइला का बादो हमनी अस लोगन के न्याय आ समानता ना मिलल। महाराज युधिष्ठिर का ओर से आजु ले कवनो सहानुभूति जतावल त दूर लोर पोंछे भा कुशल-क्षेम

www.bhojpurisahityangan.com

पूछे जाने ना आइल।''

हिडिमा वासुदेव कृष्ण के भी भेदभावपूर्ण बरताव खातिर कठघरा में खड़ा करतिया। ओकर अवसाद गहरा जाता। उपन्यास 'बनचरी' के माध्यम से महाभारत के उपेक्षित बनचरी हिडिमा के एगो अविस्मरणीय नारी चरित्र के रूप में सिरिजन करे में लेखक के सफलता मिलल बा।

उपन्यास में तत्सम शब्दन के कहीं ज्यों के त्यों प्रयोग त कतहीं ओकर भोजपुरीकरन कथा-भासा के प्रभावित करता। शब्दन के प्रयोग में एकरूपता के अभाव खटकत बा; जइसे: व्यवस्था-बेवस्था, त्याग-तेयाग, परिवार- पलिवार, युद्ध - जुध, सखी- सखि, प्रणाम- प्रनाम, पर्णकुटी- परनकुटी आदि। उपन्यास के अगिला संस्करण में एकर सुधार अपेक्षित बा।

❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

ऊसर के फूल: पितृसत्ता में स्त्री–अस्मिता

'ऊसर के फूल'' (1976 ई.) नरेन्द्र शास्त्री के ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था पर आधारित आदर्शोन्मुख यथार्थवादी भोजपुरी उपन्यास हऽ। एकर रचनाकाल 1970 के दसक बा जब भारतीय कृषि व्यवस्था सामंती अंतर्विरोध से संकट में रहे। कृषि–व्यवस्था मशीनीकरण का ओर तेजी से बढ़त रहे; सामंती मूल्य टूटत रहे; नया पूंजीवादी मूल्यन के प्रचार–प्रसार रहे। सामंतकाल संक्रमण के दौर में रहे। संयुक्त परिवार के देवाल आंतरिक अंतर्विरोध से स्वत: ढहत रहे। संयुक्त परिवार के पार्टनर एक–दोसरा के लूटे–खसोटे में लागल रहन। सामंती अवशेषन में खानदानी लंपटता आ ऐय्यासी अबहीं बांचल रहे। जवन सामंती अवशेष सुधर गइल, ओकरा नवजीवन मिल गइल; आ जवन समय के मोताबिक ना बदलल ऊ सपरिवार शमशेर लेखा बर्बाद हो गइल।

'ऊसर के फूल' के कथाभूमि बलिया जिलान्तर्गत (उत्तर प्रदेश) तीन गो गाँव मुड़ियारी, खरौनी आ बांसडीह बा, जेकर पतनशील सामंती जीवन–शैली कथानक के मूलाधार बा। शमशेर वोह सामंती मूल्य के प्रतीक बा जवन खेती के कम जमीन होखे से परेशान बा, बड़ आदमी बने के सपना देखऽता; शराब बनावे आ बेंचे के अवैध धंधा में शिवराम के सहयोगी बनता; काननू–व्यवस्था से झटका लगला पर थोड़ा दिन खातिर खेती का ओर लवटता, बाकिर जल्दीये धैर्य खो के शराब के अवैध धंधा का ओर

www.bhojpurisahityangan.com

वापस आवता। फेर त बर्बादी के सिवा कवनो अंत नइखे। एही बड़ बने के मध्यवर्गीय सपना आ वैध-अवैध धंधा के बीच धुआँत-छटपटात शमशेर के कारुनिक जिनिगी बा।

शमशेर बांसडीह के सामंती अवशेष के प्रतीक हऽ। ओकर प्रतिरूप खरौनी के बाबू जंगी सिंह के छब्बीस बरसीय सुभेख सुंदर बाकी आवारा पुत्र रघूनाथ बा। ऊ आँखि में सुरमा लगा के, ललाट पर रोरी के टीका लगवले, खूब साफ धोती आ सिलिक के कुरता पेन्हले, सिर में रेशमी साफा बन्हले, मुँह में पान दबवले गाँव-जवार में घूमल चलता। घर में बिअहुती पार्वती बाड़ी आ ऊ पुंश्चली पानवाली जोन्हिया के मदद से एगो बिकाऊ सुंदर छोकड़ी बेलिया के घरे ले जाता। उपन्यास में सामंती अवशेषन के लंपटई के उचित पर्दाफाश बा। साहित्य के ई धर्म आ कर्त्तव्य हऽ कि ऊ सामाजिक बुराईन के प्रति समाज के धेयान आकृष्ट करे।

सामंती अवशेष शमशेर के लखैरपन के बरक्स बालक कथाकार राजेन्द्र के एगो क्षीण विचार सरणी बा जेकर संवेदनशील मन आ आत्मचेतना छोटे-छोटे, व्यक्तिगत, पारिवारिक-सामाजिक घटनन-कार्य-व्यापारन में कथा-वस्तु के सूत्र तलाश लेता। ओकर बाल-मन बाल-सुलभ खेल-कूद में संलिप्त नइखे हो पावत। ओकर सपना वैध-अवैध साधनन से धनोपार्जन कइल आ एनकेन-प्राकेरेन बड़ आदमी बने-कहावे के नइखे; ऊ साहित्यकार बने के खोआब पालता; रचनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज आ व्यक्ति में सुधार ले आइल चाहता।

एह उपन्यास में नारी-विमर्श के विचारोतेजक प्रसंग बा। जइसे सामाजिक संरचना बहुस्तरीय बा, ओकरे अनुसार विविध तलीय पारिवारिक पृष्ठभूमि से आइल उपन्यास के नारी-पात्रन के विचार प्रणाली अलग-अलग बा। उपन्यासकार नरेन्द्र शास्त्री सेवती, जिअनी, पार्वती, जोन्हिया, बेलिया, जानकी, सुशीला, कमला, गुलाबी जइसन नारी चरित्रन के रचे में सफल भइल बाड़न। एह नौ स्त्रीयन के कतार में कवनो एगो स्त्री के सोच-सोभाव-जीवन-दृष्टि दोसरा स्त्री के सोच-विचार कार्य से नइखे मिलत-जुलत। एह कतार में दू गो आउर नारी-पात्र बाड़ी लोग- उभरत कथाकार राजेन्द्र के माई ममतामयी आ राजेन्द्र के सखी शिवचंद्र सिंह के बेटी मालती। उपन्यास के एह दूनों नारी-पात्र लोगन के उपस्थिति कथानक में रस घोलता आ कथांत के मार्मिक

www.bhojpurisahityangan.com

बनावता।

सेवती आत्म-पीड़न, सहनशीलता, तेयाग, परिश्रम, भ्रातृप्रेम, अप्रतिरोध के प्रतिमूर्ति बिया। ऊ शमशेर जइसन लंपट, फिजूलखर्ची, जुआड़ी सामंती अवशेष शमशेर के सहोदर बड़ बहिन आ एगो अस्थिर चित्त अर्धसामंत रामचन्दर सिंह के निःसंतान मेहरारू हऽ। ओकरा नइहरे सुख ना ससुरारे सुख। शिवचंद्र लालचंद्र के संयुक्त परिवार में सेवती के दू गो संवेदनहीन, गृहनाशक, घर के अनाज बेचेवाली, हरदम मानसिक यंत्रणा देवेवाली गोतिनी बाड़ी स- जानकी आ सुशीला। उपन्यास में सेवती के अंतरंग चित्रण रहीत त आऊ बेजोड़ होईत। जानकी आ सुशीला के उत्पीड़न से तंग आके सेवती भाई शमशेर किहाँ जात बाड़ी, बाकी ओइजा शमशेर के लंपटई से आऊ परेशान। पति रामचंदर बाहर कमा ला, बाकी ओकरो से सेवती के कवनो संवाद नइखे लउकत। भाई शमशेर अइसन शराबी-जुआड़ी, अकर्मण्य बा कि कवनो बबुआन ओकरा से आपन बेटी नइखे वियाहल चाहत। सेवती जोगाड़ लगा के भाई के वियाह करावत बिया। ऊ शमशेर के दुलहीन गुलाबी के सहयोग करत बिया, बाकी अब गुलाबी भउजाई बाड़ी; नइहर में सेवती भार हो गइली। सेवती के व्यक्तित्व के जबर्दस्त कमजोरी बा कि ओकरा में अधिकार-चेतना हइले नइखे। हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 के अनुसार, संयुक्त परिवार में बेटीयनों के संपत्ति में समान अधिकार बा, बेटा लोग जइसन। 'ऊसर के फूल' 1976 ई. में छपल, बाकिर सेवती में कवनो अधिकार चेतना नइखें समय के सामाजिक यथार्थ इहे बा कि अधिनियम बनि गइल बाकिर ग्रामीण-स्त्री तक ई बात पहुँचल ना। सेवती के नइहर भउजाई गुलाबी छोड़ा दिहली। पति रामचंदर संतान खातिर कमला से वियाह रचा लेलन। कमला के सौतन सेवती बर्दाश्त ना भइली। दूनों गोतिनी- जानकी आ सुशीला त पहिलहीं से हमलावर बा लोग। दूनों गोतिनी के मंशा बा कि सेवती चलि जइती त उ लोग आऊ नीमन से रामचंदर-सेवती के हिस्सा लूटीत लोग। लेखक जानकी आ सुशीला के अंतरंग पर फोकस नइखन करत, बाकिर आपसी संवादन से पाठक के गतिशील मन उनका लोगिन के अंतरंग चरित्र पढ़ि लेता। उनका लोगिन के निःसंतान गोतिनी सेवती के प्रति अमानवीय व्यवहार आ असंवेदनशीलता के मूल में ईर्ष्या-द्वेष के अलावे संयुक्त परिवार के संपत्ति के अबाध लूट-खसोट के मंशा बा। उपन्यास में

www.bhojpurisahityangan.com

एह दोगला चरित्र के नीमन परदाफास बा। एह दोगला चरित्र से शिवचंदर के संयुक्त परिवार टूटि जात बा; सेवती के सहनशीलता कवनो कामे नइखे आवत; ऊ आत्मनिर्वासन खातिर मजबूर होत बाड़ी आ राजपुर के बबुआन किहां बर्तन-वासन कऽ के जिनगी खेपत बाड़ी। एक दिन रामचंदर ऊपर मन से सेवती के ले आवे जात बाड़न बाकिर ऊ अपना अस्मिता के रक्षा करत, घर-वापसी से इंकार कऽ देत बाड़ी। लेखक रामचंदर के पितृसत्तात्मक मानसिकता पर सटीक टिप्पणी करत बाड़न,- "रामचन्दर सिंह मन में सोचलन- चल, एगो बलाई टलल।" सेवती के आत्म-निर्वासन सामंती व्यवस्था के गाल पर जोरदार तमाचा बा।

'ऊसर के फूल' के एगो नारी-पात्र पार्वती रूढ़िवादी सामंती जड़ता के प्रतीक बाड़ी। पार्वती के पति रघूनाथ ऐय्यास जमींदार पुत्र हवन। ऊ सामंती अवशेष शमशेर के एगो प्रतिरूप हऽ। आजादी के पच्चीस बरिस बादो एह जमींदार के क्षरण आ सड़न जारी बा। रघूनाथ पुलिस के दलाल, लंपट आ परजीवी सामंत ह। ओकर जगह-जमीन के बारे में उपन्यास मौन बा। घर में बियहुती परदानशीन पार्वती के छोड़ि के ऊ पानवाली जोन्हिया के आवास में राति बितावत बा। ओइजा सहदेव के किनल रखेलीन बेलिया पर मोहित हो जाता। पानवाली जोन्हिया के मदद से ऊ बेलिया के अपना हवेली में ले जाता। ओकर बियहुती पार्वती बेलिया संगे ओकरा के देखि लेत बाड़ी, बाकिर ऊ कवनो प्रतिवाद नइखी कर पावत। उपन्यास में पार्वती जइसन ठस्स रूढ़िवादी मानसिकता के हास्य-परक व्यंजना बा। पुरुष वर्चस्व वाली पितृसत्तात्मक दाम्पत्य व्यवस्था के पार्वती मरदो से बेसी पोषक आ समर्थक बाड़ी। उनका में नारी अस्मिता बोध हइले नइखे। रखेलीन बेलिया के प्रसंग में पार्वती पति रघूनाथ से कवनो संवाद नइखी कर पावत। उनकर आत्महंता आचरण पाठक के मन में कवनो सहानुभूति नइखे जगा पावत। उपन्यास में उनकर अंतरंग विचार-प्रणाली पर कवनो फोकस नइखे। बाकिर इहो पारिवारिक-सामाजिक सत्य बा कि 1970 के दशक में भी सामंती मूल्यन में जियत, वैज्ञानिक टेंपरामेंट से दूर, अशिक्षा-अंधविश्वास में घुटत पार्वती जइसन स्त्रीयन के भरपूर उपस्थिति रहे। कल्याणवादी समझाइस के तहत पुरुष के प्रति स्त्री के कर्त्तव्य खूब बतावल जाला, कि प्रतिव्रता स्त्री के धरम हऽ कि ऊ वेश्यागमी, चले में असमर्थ कुष्ट रोगी पति के कान्ह पर

www.bhojpurisahityangan.com

चढ़ा के बेसवा के कोठा पर पहुँचा देवो! पतिव्रता के इहे आदर्श के पार्वती निभावत बाड़ी; लंपट दुराचारी रघूनाथ के आचरण के प्रतिवाद के लगे ऊ आत्महंता आत्मनिर्वासन के फयसला करत ऊ पति परमेशर (!) के नामे एगो चिट्ठी छोड़ जात बाड़ी- ''स्त्री के काम हऽ पति के सुख पहुँचावल। रउरा के सुख पहुँचावहीं खातिर घर छोड़तानी।'' आत्मनिर्वासन के बादो उनका लंपट पति के बदनामी के डर बा; एह से ऊ चिट्ठी में पति-देव के मसवरा देत बाड़ी- ''अच्छा रहि कि हमरा भगला के कवनो प्रचार ना होखे; ना त हमरा संगे रउरो बदनामी होई। ......। जाने-अनजाने कवनो गलती भइल होई, त ओके भुल जाइबि'' (पृष्ठ 84, दोसरा संस्करण, 2025)। नारी-विमर्श के युग में पार्वती के संस्कार दास-प्रथा युग के बा। 'ऊसर के फूल' में सेवती, पार्वती, जिअनी, बेलिया, जोन्हिया, गुलाबी जइसन नारी-चरित्रन के पोर्ट्रेट बा। एकही समकाल में विविध पृष्ठभूमि में पलल-बढ़ल स्त्रीयन के सांस्कृतिक-वैचारिक चेतना के विविध स्तर-निदर्शन लाजवाब बा। लेखक नरेन्द्र शास्त्री के सिरिजना के सलाम बा।

ऊपर सेवती के मौन नारी-अस्मिता बोध के चर्चा बा। सेवतीओ पार्वती जइसन आत्मनिर्वासन खातिर विवश बाड़ी, बाकिर ऊ पार्वती ना हई। उनका अपना जांगर पर भरोसा बा; ऊ पार्वती लेखा मंदिर के शरण में नइखी जात। सामंती परिवारन में नारीयनके स्थिति पर सेवती आ पार्वती के पोर्ट्रेट पर्याप्त फोकस करत बा। जोन्हिया के आत्मकथात्मक स्वीकृति मर्दवादी सामंती समाज में नारी-उत्पीड़न के मार्मिक इबारत बा। जोन्हिया जइसन युवती यौन-उत्पीड़न के शिकार होत-होत 'ग्रामवधू' बने खातिर विवश हो गइल।

बाकिर उपन्यास में जिअनी जइसन जीवंत नारी-चरित्र के उल्लेखनीय सिरिजन बा। जिनिआ कर्मठता, नारी-अस्मिता का दाम्पत्य-जीवन के प्रखर प्रतीक बिया। ओकर पति सहदेव अकर्मण्यता आ लंपटई के प्रतीक हऽ। ऊ भाई शिवराम के घर में रहत बिया आ ओकरा पुश्तैनी धंधा में सहयोग करत नइहर में आपन जगह बनवले बिया। ओकर पति सहदेव बेलिया के रखेलीन रखले बा। सहदेउवा जिअनी के ले जाये खातिर आवता, बाकिर जिअनी पार्वती ह ना गुलाबी। ऊ सहदेउवा में सुधार के आग्रही बिया। ऊ पति के देवता नइखे मानत। ऊ अकर्मण्य सहदेउवा के नीके तरी फटकारत

www.bhojpurisahityangan.com

बिया- ''हम इनका संगे ना रहबि। खियावे के ना पियावे के, दउरि-दउरी मांग टीके धावे के!'' ऊ आगे खुली चुनौती दे तिया- ''हुँ! ना, ना! ई जाके दोसर कर लेसु!'' हमरा से इनका ना पटी।'' बांसडीह के लंपट अर्धसामंत शमशेर जिअनी के भाई शिवराम के अवैध धंधा के सहयोगी बाड़न। उनका जिअनी के प्रतिवाद में एगो दोसर गंध मिले लागता। घर में ओकरा के अकेले पाई के शमशेर जिअनी के कलाई पकड़ तेलाड़न। तब ऊ आपन असली रूप देखावत बिया। ऊ अपना यौनिकता के मर्यादा समझत बिया। ऊ दाम्पत्य के परिधि से बाहर यौन तृप्ति के पक्षधर नइखे। ऊ गैर-वैवाहिक यौन-संबंध के आमंत्रण के आक्रोश के साथे झटकार देतिया। ऊ झट से कलाई छोड़ा के शमशेर के गाल पर दू तमाचा जड़ देतिया- ''हमरा भतरा से नीमन बाड़? ... ..तू के हव हमार हाथ पकड़ेवाला..... कुक्कुर कहीं का'' (पृष्ठ 37)। 'ऊसर के फूल' के नारी-अस्मिता के इहे मूल स्वर बा। एक दिन शमशेर जिअनी के दोसर वियाह के मशवरा देलन। जिअनी फुँफकारि के कहलसि, ''हम कवनो बेसवा ना हईं ए बाबू साहेब! जवन होखे के रहल हऽ, हो गइल। ऊ राखि त रहबि, ना राखि त दोसर किहाँ ना जाइवि। ऊहो ना पूछी त कुटौनी-पिसौनी कइके जिनिगी बिता देवि (पृष्ठ 49)। ओकरा आपन जांगर पर भरोसा बा। ऊ नारी-अस्मिता बचावे खातिर सजग बिया। जब तक नारी आत्मनिर्भर ना बनी, श्रमशीलता के महत्व ना दी, नारी-अस्मिता के संघर्ष विमर्श बन के रह जाई। अइसन कथा-वस्तु आ कथ्य भोजपुरी उपन्यास में विरल बा। 'अमंगलहारी' (डॉ. विवेकी राय के सुशिक्षित युवा विधवा पार्वती इयाद आवत बाड़ी। ऊ ना पुनर्वियाह करत बाड़ी, ना पितृछाया में नइहर लउटत बाड़ी। ऊ संपन्न घर के बाड़ी, ऊ समाज-सेवा अपना लेत बाड़ी। कवि केदारनाथ अग्रवाल के एकलौता उपन्यास 'पतिया' के स्त्री-पात्र मोहिनी स्त्री-अस्मिता के प्रतीक बिया। मोहिनी के अपना श्रम-शक्ति पर भरोसा बा। प्रसिद्ध कथाकार रामधारी सिंह दिवाकर के चर्चित कहानी 'मखानपोखर' के दुलरिया (विधवा) यौन-नैतिकता आ नारी-अस्मिता के अनुपम उदाहरण बिया।

रघूनाथ लंपटई आ दुराचरण में शमशेर के प्रतीक बा। उपन्यास 'ऊसर के फूल' के मुख्य प्रतिज्ञा बा साहित्य के माध्यम से सामाजिक कुरीतियन में आदर्शवादी सुधार। उपन्यास में समकालीन यथार्थ के जीवंत चित्रण बा; बाकिर समाज के खाली आईना देखा देवे से सामाजिक बुराई तिरोहित ना

www.bhojpurisahityangan.com

हो जाई। नरेन्द्र शास्त्री लगे एगो नुस्खा बा, अपराधी के पश्चाताप आ सुधरे के संकल्प। पत्नी पार्वती के आत्मनिर्वासन से रघूनाथ बहुत विचलित होता। रखेलीन बेलिया के सामने भेद खुलि गइल कि रघूनाथ कुँवारा राजकुमार ना हउवन। रघूनाथ नैतिक दबाव में रखेलीन के बहिन घोषित कऽ देत बाड़न। उनकर अंतरात्मा के पुनरुत्थान नेख्लूदोव (टॉल्सटॉय के पात्र) लेखा होता। ऊ शिवराम के अवैध-शराब के धंधा चलवावे खातिर दरोगा के दलाली करत रहन। बाकीर दाम्पत्य के बिखराव से विचलित ऊ शिवराम किहां जा के बेलाग कहत बाड़न- ''आजु से हम तोहरा कवनो काम में सहयोग ना करबि। शराब ना पियबि। अवैध व्यापार ना करवि। पुलिसो से मतलब ना राखबि।'' उनके संगे शिवरामो अवैध व्यापार के तिलांजलि दे के जीवन यापन खातिर कृषि-कार्य में लागि गइलन। एक दिन बाढ़ पीड़ितन के सेवा करत, पार्वती के रघूनाथ पा जाताड़न। पार्वती आत्मनिर्वासन से मुक्त हो गइली। बाकिर रघूनाथ के प्रतिरूप शमशेर ना सुधर पवलन।

शमशेर एगो मझिला स्तर के किसान रामदेव सिंह के एकलौता लखैरा पुत्र हउवन जेकर बाप 15 बीघा जमीन छोड़ि के मुअल बा। उनकर सोभाव विचित्र बा। ऊ बहिन सेवती के लिया लावे खातिर ओकर ससुराल मुड़ियारी जात बाड़न। ऊ रिश्तेदारी के गांव में मर्यादा नइखन निभा पावत। 'ऊ दिन भर लखैरन का संगे गाँजा पीअसु। राति भर तास खेलसु। ......। भोर होते ऊ गाँव के दू, चार गो कुकुर लेके सुअरन के पीछे लखेदवावसु।' सेवती के समझावलो पर खानदान के लाज नइखन राखि पावत। ऊ खेती पर धेयान नइखन देत। दिन भर पान खाइल, भांग घोंटल, गांजा पीयल, ऐने-ओने घूमल दिनचर्या बनि गइल। खेती बारी चौपट हो गइल। एगो बैल मू गइल, एगो बैल ऊ सस्ते बेंचि के खा-पी गइलन। उनकर उदार पड़ोसी बांकेलाल बैल-बीज खातिर नगदी से मदद करत बाड़न। उनकर गृहती रास्ता पर ले आवे खातिर बांकेलाल के पत्नी ममतातयी उनकर वियाह गुलाबी से करा देत बाड़ी। उपन्यास में शमशेर के खेती में असफलता के सूचनापरक तनी मनी विवरण बा। ऊ आधा बिगहा खेत रेहन राखि के दंगल करावत बाड़न। दंगल खतम भइल त ऊ नौ बजे राति में भगेलू उस्ताद के संगे खरौनी गांव नाच देखे चलि जाताड़न। ओहिजे उनका शराब धंधेबाज शिवराम से मुलाकात हो गइल। शिवराम अनैतिकता के प्रतीक हउवन। उनकर जीवन-दृष्टि रहे- ''पइसा ना

www.bhojpurisahityangan.com

रही त आपन मेहरारूओ साथ ना दी। संसार में रुपया-पइसा सब कुछ ह। आ, एह घरी धरमात्मा के बा?'' शमशेर के बहिन सेवती के जीवन-दृष्टि अलग बा- ''ईमानदारी के सूखल रोटी बेईमानी के दूध घीव से नीमन।'' शमशेर इहे दू गो जीवन-दृष्टि के बीच झूलऽता। ओकरा चित्त पर अनैतिकता के विजय होता। शराब के अवैध कारोबार में ओकरा जेल जाए परता। जेल से छूटला के बाद शिवराम के हृदय परिवर्तन हो गइल। शराब के धंधा से ऊ अलग हो गइलन, बाकिर शमशेर के पतन जारी रहल। ऊ एगो कहाउत कहलन- ''हाथी के घाटा हाथीये देला।'' उनकर खेती उजड़ गइल रहे। अब ऊ दारू ना चुआवसु, बाकिर एने ओने से गाँजा, अफीम आ दारू ले आके बेचसु। गरीबी के मार से शमशेर के घर के दशा बिगड़ी गइल। गुलाबी चारि बरिस के बेटा गिरघर के लेके गाँव के गलीयन में दाल-भात मांगत बाड़ी। गुलाबी भरल दुपहरिया में एगो लुगरी लपेटले इमलीतर शमशेर लगे पहुंचत बाड़ी। शमशेर के सामंती शान आहत होता। ऊ पत्नी गुलाबी के सिर पर डंडा से आघात कर ता। फेर गुलाबी के शव कान्ह पर लदले थाना पहुँचत बा। कहल बा कि जे ना झूके ऊ टूटि जाला। सामंती अवशेष के क्रूरता आ पतन के मार्मिक चित्रण बा।

'ऊसर के फूल' में बालक कथाकार राजेन्द्र आ मालती के प्रेम-कथा जाति-व्यवस्था पर प्रहार बा।

उपन्यास में वेश्यावृत्ति समस्या के आदर्शवादी समाधान बे हंगामा-ड्रामा के बा। पानवाली जोन्हिया के आत्मकथा उपन्यास में टुकड़ा-टुकड़ा में विन्यस्त बा। दालमंडी में ललिताबाई के कोठा के शागिर्द तबला वादक पचास बरसीय हनुमान तिवारी आ पानवाली जोन्हिया के एगो दात्पत्य-सूत्र में बन्हाए के निर्णय रोचक बा।

ऊसर में बहुत फूल खिलल बाकिर सेवती के ऊसर में फूल ना खिलल। 'ऊसर के फूल' आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धारा के एगो सशक्त भोजपुरी उपन्यास बा।

❐❐

पुस्तक के नांव: ऊसर के फूल
लेखक: नरेन्द्र शास्त्री
प्रकाशक: भोजपुरी प्रकाशन नई दिल्ली
द्वितीय संस्करण: 2025

www.bhojpurisahityangan.com

विजय पर्वः नारी उत्पीड़न के वृत्तांत

दहेज-उत्पीड़न, विवाह पूर्व सेक्स आ बलात्कार के उपन्यास आ कहानी के रचना-वस्तु बनावे में लोकभाषा भोजपुरी के कथाकार-उपन्यासकार बहुत संकोचशील बाड़न। अपवाद बा बाकिर कम बा। प्राइवेट बातचीत में एह विषयन पर खूब रस ले-ले के बात करेलन लोग, बाकिर एह विषय के गंभीर सांस्कृतिक-नैतिक संकट का रूप में देखत-पहचानत एकनी के रचनात्मक साहित्यिक विमर्श के विषय ना बनावसु, काहे कि जवन तथाकथित भारतीय संस्कृति के प्रशंसा में उन्हन लोगन के होंठ ना सटे, वोह गिरावट के साहित्यिक प्रमाण देल उनके लेखे ठीक ना होई। सभी नीके-नीके परोसल समय के यथार्थ पर पर्दा डालल होई। सुबह अखबार खोली आ दहेज-उत्पीड़न, दहेज हत्या, युवक-युवतियन में वियाह पूर्व सेक्स, गर्भपात, तलाक संबंधी मुकदमा आ बलात्कार के समाचारन से लबरेज पाएब समाचार-पत्र। समाचार-पत्र ना हऽ बलुक सामाजिक पतन के आईना हऽ। दहेज-उत्पीड़न बहुत बड़ सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौती बन चुकल बा। दहेज के खिलाफ कानून बनल। शासन-प्रशासन दहेज के खिलाफ देवाल कुल्हि रंगवा दिहल; प्रचार आ विज्ञापन में अवैध कमाई के सोत मिलल,; बाकिर समाज में नवजागरन ना आइल; काहे कि राजनीतिक संरचना ना बदलल। एही तरे स्कूल-कालेजन में वियाह-पूर्व सेक्स के खबर आवे लागल। बलात्कार छोड़ी, सामूहिक बलात्कार आ नृशंस हत्या के खबर से भारतीय

www.bhojpurisahityangan.com

समाज थर थर काँप रहल बा।

एह तीनों मसलन के एगो उपन्यास में सफलतापूर्वक विन्यस्त कइल एगो रचनात्मक चुनौती बा। एह चुनौती के, स्वीकार कइले बाड़ी- बिहिया (भोजपुर, आरा) की युवा कथाकार नीतू सुदीप्ति 'नित्या' - अपना सद्यः प्रकाशित उपन्यास 'विजय-पर्व' में। ओह समय चालीस वसंत ना देखले रही; उनकर शिक्षा मात्र मैट्रिक तक के बा। बाकिर नारी-समस्यन के प्रति ऊ संवेदनशील बाड़ी आ अभिव्यक्ति में यथार्थवादी। हिन्दी में उनकर दू गो कहानी-संग्रह प्रकाशित बा। औपन्यासिक अभिव्यक्ति खातिर ऊ मातृभाषा भोजपुरी चुनली। 'विजय-पर्व' उपन्यास के प्रस्तुति बेहद रोचक आ प्रवाहपूर्ण बा। ई अइसन बा कि जिला में कुछ नामवर आ पुरस्कृत उपन्यासकारन के ईर्ष्या होई कि एगो कम उमिर के लीन-थीन युवती जेकरा करेजा में छेद बा, ऊ कथा प्रवाह, रोचकता, कल्पनाशीलता आ यथार्थ के प्रस्तुतीकरण में उन्हन लोगन के पीछे छोड़ि देले बिया।

उपन्यास की संक्षिप्त कथावस्तु अतने बा कि सँवरी, पमली आ बारली नाम की तीनि गो लइकी बचपन के सखी हई सँ। मित्रता त बराबरी वालन के बीच निबहे ला, बाकिर इहाँ बचपन की तीनों सहेलियन के बीच गहरी आर्थिक खाई बा। सँवरी के बाप फुटपाथ पर कपड़ा बेंचि कऽ आजीविका चलावे लँ। पमली के बाबू बैंक में कैशियर हउवन। बारली के पिता होमियोपैथ के सुख्यात चिकित्सक हउवन आ उनके पास शहर में तीन मंजिला मकान बा। उपन्यास के आवरण चित्र पर तीन लइकिन के तस्वीर बा जवना में सबसे छोटकी लइकी गुलाब का एगो पौधा रोपत बिया। गुलाब के पौधे में तीन गो फूल खिलल बा। दू गो बच्ची आकाश का ओर टकटकी लगवले ताकत बाड़ी सँ। अइसन जइसे ऊ अज्ञात भविष्य के निहारत होखऽ स। तिसरकीयो लइकी के आँखि ऊपरहीं लागल बा। आवरण चित्र प्रतीकात्मक आ व्यंजक बा।

उपन्यास में सँवरी, पमली आ बारली अपना भिन्न मानसिक, सामाजिक-आर्थिक संस्तर आ वैचारिक मतभेद के बावजूद सुख-दुःख में मित्रता निभावत बाड़ी सँ। बदलल सामाजिक आ निजी स्थितियन में तीनों सहेली अपना मित्रता पर आँच नइखी सँ आवे देत। 'विजय-पर्व' उपन्यास के कथानक मित्रता के मूल्य के संरक्षित करता।

www.bhojpurisahityangan.com

सँवरी रूढ़िवादिता आ जड़ सांस्कृतिक मूल्यन के प्रतीक बिया। आर्थिक कारणन से ओकर बाप मैट्रिक पास कइला के बादे ओकर वियाह तिलक-दहेज देई के केसर से कऽ देताड़न। वियाह भइला के बादो केसर के माई के राजदूत मोटरसाइकिल के मांग रहिये गइल। भारतीय समाज दहेज के एगो सामाजिक स्टेटस के रूप में देखेला। केसर के बाप छग्गन वियाह के पहिलहीं से सँवरी के बाबू बहोरन पर दबाव बनवले रहलन- ''बहोरन जी, विआह में कवनो किसिम के कमी ना होखे के चाहीं.... गोतिया-देयाद या देखेवाला के करेजा दहलि जाव। टी.वी., फ्रीज आ एगो राजदूत त जरूरी बा।'' बहोरन राजदूत देवे से साफ मना कर देलन। बारात आइल। शादी भइल। सँवरी ससुराल गइली। गर्भवती होके नइहर लौटली। केसर के माई सँवरी पर राजदूत माँगे खातिर दबाव बनावे शुरू कइली। स्त्री के सतावे खातिर स्त्रीए औजार बनत बिया। राजदूत देल बहोरन खातिर संभव नइखे। उपन्यासकार बहोरन आ छग्गन की आर्थिक स्थितियन के संक्षिप्त उल्लेख करती त कथानक में व्यंजनात्मक बल आइत। नीतू संवाद की तकनीक में अतना सिद्धहस्त बाड़ी कि पात्रन के बीच संवाद से उन्हन के चरित्र बनत चलता। लेखिका कथावस्तु के विकास में निजी हस्तक्षेप कम कइले बाड़ी। आंतरिक गतिशीलता से कथानक आ चरित्र विकसित होत चलता। सँवरी के सास परम दहेज लोभी बिया। ऊ स्त्री हई, बाकिर कठोरता के प्रतीक बाड़ी। ससुरार जात केसर के मतारी समझावत बिया, ''तोर ससुर वियाह में त राजदूत देवे से हटि गइल रहे, बाकिर अबकी दोंगा में हमरा राजदूत मिले के चाहीं।''

केसर के ससुर की आर्थिक स्थिति के शायद पता बा। ऊ संदेह जनावत बा कि ऊ लोग राजदूत दिही कि ना। केसर के पिता के मानसिकता ओइसने बा - ''दीहें काहे ना। जब उनुकर बेटी के नरेटी चिपाई त जरूरे दीहें।'' ई दहेज लोभी समाज के छवि बा जवना के प्रतिनिधित्व केसर के पिता छग्गन आ ओकर माई करत बाड़ी। शादी के एक साल बाद छग्गन फेर केसर के राजदूत के इयाद करावता। अब केसर के दिमाग पर शान चढ़ि गइल। शादी के सालगिरहे के दिन ऊ दुलहीन सँवरी से मारपीट आरंभ करत बा। ऊ सँवरी के अकारण बेल्ट से पीटऽता आ ओकर हाथ जरत लकड़ी से जरा देता। सँवरी केसर के भगवान बुझत बिया। भोरे ओकरा से उठल नइखे

www.bhojpurisahityangan.com

जात। ओकरा मन में केसर के प्रति कवनो आक्रोश नइखे। ऊ हाथ का फोड़ा केसर के देखा के विनम्रतापूर्वक कहतिया कि दवाई ले आ दिहीं। केसर दवाई का ले अइहें, ऊ उल्टे फोड़वा के फोर देलन। बाकिर तबो सँवरी के मन में ना सास-ससुर के प्रति आक्रोश बा, ना पति के प्रति। लेखिका सँवरी के अंतरात्मा में झाँक के नइखी देखत कि आखिर सँवरी दहेज खातिर अतना यंत्रणा झेलत तनीको दुःखीत भा आक्रोशित काहे नइखे होत। मार खइला के बादों सँवरी के मनःस्थिति के चित्रण के अभाव पाठक के बेचैन करऽ ता। सँवरी ओही घवाहील स्थिति में देवर मनेस संगे नइहर पेठा दिहल जात बाड़ी। सँवरी के आक्रोश ओकर मित्र पमली आ बारली के मुँह से मुखरित होत बा। पमली सँवरी के केसर से तलाक लेवे के सुझाव देत बिया। पमली के भीतर आधुनिक नारी-चेतना लउकत बा। ऊ सँवरी जइसन रूढ़िवादी ना हऽ। दोसरी मित्र बारलीओ केसर के बदमाश कहत बिया। बाकिर सँवरी पारंपरिक भारतीय दाम्पत्य व्यवस्था से बाहर नइखे जाइल चाहत। पच्चीस हजार रोपेया माई-बाबू से लेके सँवरी देवर के संगे ससुराल लवटि जात बिया। राजदूत ना मिलल। सँवरी के दुर्दशा जारी रहल। उपन्यास में केसर के मनोदशा पर फोकस नइखे। नई नवेली पत्नी के साथ मारपीट के बाद ऊ कंपनी में शांति से काम करत बडुए। ओकरा चेहरा पर मानसिक अशांति के कवनो लक्षण नइखे। कंपनी के ऊ कइसन वर्कर हऽ? ओकर माइंड सेट कइसन बा? ओकर ऊपरी कार्य-व्यापारन से ओकर चरित्र उजागर नइखे हो पावत।

सँवरी के कहानी संगे ओकर सहेली पमली के कहानी के नाटकीय प्रवेश होता। पमली के माइंड सेट सँवरी से भिन्न बा। ओकरा दिमाग में आध ुनिकता के हवा लागल बा। कॉलेज परिसर में एगो लइका माधव से मुस्कान के आदान-प्रदान होता। बारली पमली के सावधन करत बिया। पमली वोह अगंभीर लइकीन के प्रतीक बिया, जवन हवा के साथ बहेली सं झंझट में खुद परेली सं आ परिवार-समाज के उलझन में डालेली स।

तीसरी लइकी बारली पढ़े में तेज बिया। मैट्रिक के परीक्षा में ऊ राज्य के टॉपर रहे। ऊ पमली लेखा भावुकता में नइखे जीयत। ऊ कैरियर के प्राथमिकबता देत बिया। ऊ प्रख्यात होमियो चिकित्सक बचन जी के बेटी हऽ। ओकर पारिवारिक पृष्ठभूमि आधुनिक बा। ओकर डबल एम.ए. बुआ (लता) नौकरी मिले के बाद वियाह के संकल्प लेले बाड़ी।

www.bhojpurisahityangan.com

उपन्यासकार नीतू के पामली में एगो अइसन कॉलेज गर्ल के चरित्र मिलल बा जवन भावुकता आ असावधानी में जीयत बिया। पमली आ माधव के मुलाकात के त्वरा बढ़ल जात बा। ऊ लोगे अतना अधैर्य बा कि बियाह के पहिलही शारीरिक संबंध बनावे में संकोच नइखे करत। परिणाम में पमली गर्भवती हो जात बिया। माधव के पमली के आचरण पर विश्वास नइखे भा ऊ पमली से पिंड छोड़ावे खातिर ओकर गर्भ के आपन हरकत के नतीजा माने खातिर तइयार नइखे। पमली एह संबंध के सामाजिक मान्यता खातिर वैवाहिक गठबंधन में बान्हल चाहत बिया। नारी यौनिकता के भी मर्यादा होला। यौन उच्छृंखलता रूढ़ि भंजन ना हऽ। माधव युवा लंपटता के प्रतीक बा। बिना दायित्वबोध के यौन-संबंध यौन-शोषण से तनीको कम ना कहाई। ऊ पमली से यौन-संबंध एह आश्वासन के साथ स्थापित करत बा कि अंतत: ऊ वियाह क ली। हजारो अइसन घटना घटत बा; लेखिका कवनो नया रचना-यथार्थ नइखी खोजले। नया यथार्थ ई बा कि पमली में नारी-अस्मिता के उत्थान। पमली गर्भपात करावे से मना कऽ देतिया; बाकिर स्नातक के छात्रा पमली लगे वैज्ञानिक टेंपरामेंट के अभाव बा। ऊ तर्क करत बिया- ''हम ई बच्चा (गर्भ) ना गिराइबि। भगवान् हमरा के माई बने के आशीर्वाद देले बाड़े।'' पमली स्त्री-पुरुष संबंध के समझत बिया; एह में भगवान के का घसीटे के बा। ई पाखंड काहे खातिर?

एगो अन्य प्रसंग में उपन्यास के अंतिम अध्याय में बारली गर्भधारण के बारे में वैज्ञानिक चेतना के परिचय देत बिया। सँवरी आ बारली के समझ आ चेतना में जमीन-आसमान के फरक बा। सँवरी के समझ बा कि ओझा-गुनी 'आपन' जादू-मंतर से बांझ मेहरारू के माई बना देलन सं। बारली एह बात के प्रतिवाद करत बिया- ''ओझा-गुनी जादू-टोना आ चमत्कार ना करेलन सं। मेहरारून के प्रसाद में नशा के दवाई खिआ देलन सं आ बेहोश हो गइला पर ओकरा साथे हमबिस्तर होलन सं। जब ऊ औरत माँ बनि जाली तब ऊ शिशु ओझा का साधू के बेटा ना कहाला, बलुक औरत के पति के बेटा कहाला।''

बारली पमली के माँग के समर्थन करत बिया कि अगर कवनो कुँवार स्त्री माँ बनल चाहत बिया त देश में ओइसन कानून बने के चाहीं। ई एगो उत्तर आधुनिक नारी-विमर्श के प्रसंग बा। ओकर होखे वाला बच्चा

www.bhojpurisahityangan.com

के वैध बच्चा के प्रमाण-पत्र मिले के चाहीं। ओह शिशु के नाम के साथे ओकर जननी के नांव जुड़े के चाहीं। ई प्रसंग बहस तलब बा। शिक्षा-दीक्षा के प्रचार-प्रसार से स्त्री अधिकार चेतना में विकास हो रहल बा, बाकिर एह प्रसंग में पुरुष के भूमिका पर फोकस नइखे; कुंवार होखे भा विअहुती बे पुरुष के लइका पैदा ना हो सके; त पुरुषों के दायित्व पर विचार जरूरी बा।

उपन्यास में बारली के कथा आउर मार्मिक बा। ऊ राज्य में अव्वल आवे वाली लइकी हऽ। बी.ए.-सी के छात्रा हऽ। ऊ केरियरिस्ट बिया; पेयार-फेयार के चक्कर में नइखे रहत। लंपट लइकन के डांट दे तिया। बाकिर एक दिन एगो अघटित घटि जात बा। ऊ सांझि खा एगो दुकान पर कुछ घरेलू सामान कीने जात बिया। अकेला आ सुनसान पा के विअहल दुकानदार बिटेसवा बारली के साथ बलात्कार करता। एह से कहल बा कि एकांत में युवा औरत के बापो लगे ना रहे के चाहीं। बलात्कार के प्रतिरोध कइला पर बिटेसवा बारली के शारीरिक क्षति पहुँचावत बा। उपन्यास के कथानक में हाई वोल्टेज ड्रामा के प्रवेश होता। उपन्यास बलात्कार के बारे में भारतीय समाज के पुरुषवर्चस्ववादी मानसिकता के तार-तार कऽ देता। इहाँ एगो मानसिकता आ अवधारणा बा कि बलात्कारी पुरुष दोषी ना होला; बलात्कृत औरत दोषी होली। बलात्कारी के मर्दानगी के बखान होला; बलात्कृत व्यंग के पात्र होली। बलात्कृत बारली के साथे खाड़ होखे वालन में ओकर सहेली- सँवरी आ पमली, ओकर लता बुआ, पिता, भाई आ एगो विश्वजीत बा। बाकी सभे ओकरा के अपशकुनी, कलंकिनी, अस्पृश्या आदी कहे वाला बा। बारली के माई आ नानी के दकियानूसी स्त्री-विरोधी माइंड सेट देखि के पाठक के आत्मा चीखे लागतिया। लेखिका समाज के पुरुषवर्चस्ववादी मानसिकता के उजागर करे में सफल बाड़ी। एकरा में लेखिका बौद्धिक-विमर्श आ आधुनिक चेतना से लैस बारली जइसन स्त्री-चरित्र रचे में सफल बाड़ी।

उपन्यास 'विजय-पर्व' के कथानक के संघटन उल्लेखनीय आ दिलचस्प बा। उपन्यास में तीन गो स्त्री किरदार बाड़ें- सँवरी, पमली आ बारली। तीनों के अलग-अलग समस्या आ कहानी बा। सँवरी दहेज-उत्पीड़न के शिकार बिया, पमली वियाह पूर्व सेक्स संबंध आ तज्जनित गर्भधारण के समस्या से जूझत बिया, बारली बलात्कार के शिकार बिया। सँवरी के दहेज-उत्पीड़न पर समाज के मौन अखरता। एगो डॉक्टर मदद खातिर सामने

www.bhojpurisahityangan.com

आवतिया। ओकर पिता कानून के सहारा बाद में लेत बाड़न। तीनो सहेलियन के अलग-अलग कहानियन के एगो उपन्यास के कथानक में विन्यस्त कइल एगो रचनात्मक चुनौती बा। एकरा में बारीक कला-कौशल अपेक्षित बा। युवा उपन्यासकार नीतू सुदीप्ति सफलतापूर्वक तीनों कथा-वस्तुअन के सुटर (स्टेटर) के तीन रंग के धागा अइसन सलाई आ कलाई के मदद से बुन देत बाड़ी। शिल्प में कतहीं जोड़-तोड़ नइखे लउकत। पूरा कथानक चउदह इपीसोड्स में समंजित बा।

लेखक भोजपुरी लोकजीवन के मुहाबरन से सुपरिचित बाड़ी। ओकर सटीक प्रयोग में माहिर बाड़ी; जइसे: जब तक जीय तब तकले सीय; हँसलू त फँसलू आ मुसकइलू त गइलू; आनी से वानी आ लछन से पहचानी; पेट बिगाड़े मूढ़ी आ घर बिगाड़े बूढ़ी; चरगोड़वा बन्हाला दू गोड़वा ना आदि अनेक कहाउत बा।

'विजय-पर्व' उपन्यास के अंत प्रेमचंदीय आदर्शवादी यथार्थ में होता। बलात्कार के बाद बारली के परिवार प्रचंड सदमा में बा। बारली जइसन तेज-तर्रार आ स्वप्नदर्शी लइकी बलात्कार के बाद अइसन विचलित होत बिया कि ओकरा लागत बा कि अब जिनिगी के कवनो अर्थ ना रहि गइल। ऊ आत्महत्या के प्रयास करत बिया। ओकर भाई सरवन (श्रवण) अवसाद ग्रस्त होता, बाद में ट्रक के धक्का के शिकार हो जाता। सरवन अपना डायरी में सही लिखले बा कि - बलात्कार की मानसिकता सामाजिक रोग हऽ। एकरा खिलाफ बारली के लड़े के चाहीं। बारली के अपना जीवन के अर्थ मिलि जाता। बारली वियाह-संस्था, यौन-संबंध, प्रेम, गर्भ-धारण, पुरुषवर्चस्ववादी समाज पर विमर्श कइले बिया ऊ उपन्यास के उपलब्धि बा। वोह में लेखिका के स्त्री-दृष्टि के छवि बारली के विमर्श से प्रभावित होके, विश्वजीत नामक युवक ओकरा से वियाह के प्रस्ताव राखऽता। बारली के जीवन-साथी मिलि जात बड़ुए। ई एगो प्रेमचंदीय आदर्शवादी समाधान बा।

उल्लेखनीय प्रसंग ई बा कि उपन्यास के अंत में दहेज-दानव केसर के आत्मा में परिवर्तन होता। ई परिवर्तन भय से होता। केसर के कवनो पश्चाताप नइखे अपना क्रूरता आ अमानवीयता आ असभ्य आचरण खातिर। सँवरी के पिता आजीज आ के दामाद केसर आ ओकर माई-बाबू के खिलाफ कानून के शरण में जात बाड़न; पुलिस में प्राथमिकी दर्ज कराव ताड़न। केसर

www.bhojpurisahityangan.com

वगैरह के गिरफ्तारी होता। पुलिस के तनी मनी पिटाई होता; तब वोह लोग के दिमाग ठंडा होता। केसर जमानत पर छूटि के आवताड़न आ सँवरी के गोड़ धऽलेताड़न। सँवरी दात्पत्य जीवन में लवटि आवत बिया।

अइसहीं पमली के प्रेमी माधव के पिटाई होता, तब ऊ सामाजिक दबाव में पमली से वियाह करऽता।

बाकिर बारली के ममिला बलात्कार के बा। बलात्कारी विवाहित बा। ऊ पुलिस आ समाज के डर से भागल-छुपल रहता। ऊ लंपट बा। ऊ बारली पर फेर हमला करऽत; ओकरा गरदन में छुरा सटा देता। अफरा-तफरी में अपना बचाव में बारली बलात्कारी विटेसवा के मार डालत बिया। आपन अस्मिता के रक्षा कइल स्त्री के जन्मसिद्ध अधिकार बा।

भोजपुरी साहित्य में अइसन सामाजिक बुराईयन पर उपन्यास लगभग नइखे।

❒❒

पुस्तक : विजय पर्व (भोजपुरी)
लेखक : नीतू सुदीप्ति 'नित्या'
प्रकाशक: जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्, झारखंड

www.bhojpurisahityangan.com

''दाल भात तरकारी'' में किसान संचेतना के विमर्श

एकइसवीं सदी में किसान जीवन पर आधारित हिन्दी भा भोजपुरी उपन्यास के संरचना आ संरूप कइसन होई? भारत के लगभग तीन-चउथायी आबादी कौनो-ना कौने तरह से कृषि जीवन से जुड़ल बा। कृषि भी नाना प्रकार के। दखिन भारत में समुद्र के निकट नारियल, नारंगी, केला से लेके, हिमाचल प्रदेश में सेब, बंगाल में पटसन, बिहार में धान, गेहूँ, केला, आम, लीची तक के खेती से किसान जुड़ल बा। बिहार में कृषि आधारित चीनी मिल वगैरह बाड़ी सन, जवना खातिर ऊख के खेती होला। चीनी मिल स्थापित करे खातिर किसान के कृषि योग्य खेत अधिगृहित कइल गइल, जवना में ऊ धान, गेहूँ, बूँट, मटर, तोरी, तीसी, खेसारी, अरहर उपजावत रहे। अब चीनी मिल के आवयकतानुसार किसान परंपरागत खेती छोड़ि के ऊख उपजावे लागल, ऊख बेंचे से ओकरा नगदी मिलल। जवन किसान खुद गेहूँ-धान उपजावत रहे ओकरा अब बाजार से खाये खातिर गेहूँ चावल खरीदे पड़ल। ओकरा जीवन शैली में गुनात्मक परिवर्त्तन आ गइल। कुछ किसान चीनी मिल में योग्यतानुसार नौकरी पा गइलन। उनका जिनिगी में एगो नया जद्दोजहद शुरू भइल। सन् 1922 में मीरपुर में अइसने एगो चीन मिल मेहता शुगर फैक्ट्री के स्थापना बम्बई के एगो उद्योगपति कइले। मथुरा प्रसाद के

www.bhojpurisahityangan.com

पूर्वज ओह चीनी मिल में चपरासी बहाल हो गइले। बाद में मथुरो प्रसाद चीनी मिल में कांटा बाबू बनि गइले। मिल में आठ सौ मजूर कर्मचारी रहे। प्रबंधन आ यूनियन के झगड़ा में मिल में तालाबंदी हो गइल। बीस बरिस के बाद दूसर उद्योगपति मिल के अधिग्रहण कइले। नया नाम भइल ईस्टर्न शुगर कंपनी। एह कंपनी में मथुरा प्रसाद के बेटा कुशल नोकरी पा गइले। मथुरा प्रसाद के परिवार के पिछली सदी के तीसरो दशक में दाल भात तरकारी के जोगाड़ खातिर भारी मशक्कत करे के पड़त रहे आ आज आठ दशक बादो, आजादी के पचास-साठ बरिस बितलो पर दाल भात तरकारी के व्यवस्था सबसे बड़ समस्या बा। किसान के जिनगी में एगो लम्मा ठहराव बा? काहें? डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव के भोजपुरी उपन्यास ''दाल भात तरकारी'' के इहे कथानक बा।

भोजपुरी में उपन्यास प्रकाशन के गति बहुत मंद बा। सन् 1956 में रामनाथ पाण्डेय के उपन्यास ''बिंदिया'' के प्रकाशन के बाद छव दशक में साठो गो भोजपुरी उपन्यास नइखे प्रकाशित। भोजपुरी क्षेत्र में जनमल साहित्यकार लोग अबहीं हिन्दी आ अंग्रेजी साहित्य के समृद्ध करे में लागल बाड़न।

बहरलाल, डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव के भोजपुरी उपन्यास ''दाल भात तरकारी'' में सीमांत किसान के आत्मसंघर्ष, जद्दोजहद, जिजीविषा, शादी-वियाह के समस्या, संयुक्त परिवार के विघटन, अंधविश्वास, अवसरवादिता, भूत-प्रेत, ओझा गुनी में विश्वास, विधवा- विवाह, पुलिस ज्यादती, घूस, भ्रष्टाचार, अपहरण के सघन विवरण बा। एकरा अतिरिक्त मीरपुर शुगर फैक्ट्री के प्रबंधक जंग बहादुर सिंह के क्रूरता, संवेदनहीनता, अदूरदर्शिता, विवेकहीनता, छल, कपट, तिकड़म, यूनियनबाजी, फैक्ट्री में तालाबंदी, फैक्ट्री के अधिग्रहण आ जीर्णोद्धार के कथो विन्यस्त बा। उपन्यास के कथावस्तु जटिल आ संश्लिष्ट बा।

मनुष्य के जीवित रहे खातिर हवा, पानी आ भोजन परमावश्यक बा। हवा, पानी प्रकृति में प्रचुर मात्रा में अबहीं उपलब्ध बा। पानी पर एकाधिकार स्थापित करे के कोशिश जारी बा। इ दूनों के बाद भोजन के जरूरत आ जोगाड़ के समस्या मनुष्य के समाने आदिम काल से रहल बा। सभ्यता के ओर अग्रसर मनुष्य खातिर भोजन के बाद वस्त्र आ आवास के

www.bhojpurisahityangan.com

आवश्यकता परम बा। ''दाल भात तरकारी'' उपन्यास के दार्शनिक आधार इहे बा। उपन्यास के मूल स्वर इहे बा कि एकइसवीं सदी में प्रवेश कइल भारत के सीमांत किसानन के सामने आजो ''दाल भात तरकारी'' के समस्या मूल समस्या बा। भूखा आदमी से कवनों नैतिक आचरण, कवनों आदर्श के अपेक्षा समाज, व्यवस्था भा कौनो नैतिक सत्ता ना कर सके। एह उपन्यास के नामकरण प्रतीकात्मक आ कथावस्तु के अनुकूल बा। उपन्यास के एगो महत्त्वपूर्ण पात्र केन मैनेजर एस.के. नागराज, मेहता शुगर फैक्ट्री बंद होखे के संभावना के बाद एग्गो सामाजार्थिक यथार्थ के उद्घाटन करत कहत बाड़नः- ''रुपया-पइसा के आजादी सबसे बड़का आजादी ह। आदमी के पेट जरेला आ अभाव सतावेला त उ आपन ईमानदारी के मुकुट उतार के फेंक देला। झूठो के ईमानदार बनला से बेहतर साँचो के बेईमान बनल बा। कम से कम पेट त पलात रही। ....दाल भात तरकारी से बढ़ के कवनों सँचाई नइखे एह दुनिया में (पृष्ठ141)।

''दाल भात तरकारी'' उपन्यास के संवेदना के मूल केन्द्र में सीमांत किसानन के आत्मसंघर्ष, जद्दोजहद आ अदम्य जिजीविषा बा। मथुरा प्रसाद के तीन-चार पीढ़ी लम्मा सफर में कवनो उल्लेखनीय विकास नइखे झलकत, बाकिर तबो अदम्य जिजीविषा बा, आत्मसंघर्ष के माद्दा बा। सब जद्दोजहद में दाल भात तरकारी के जोगाड़ कऽ लेवे के इच्छा शक्ति बा।

मथुरा प्रसाद के चरित्र में अजीब खिलंदड़ापन आ नम्यता बा। ऊ सातवाँ तक पढ़ल बाड़े। उनकर माई उनकर विवाह खातिर बड़ा चिंतित बाड़ी। वियाहो हो जाता। मामा जोगाड़ बइठा देत बाड़न। नौ बरिस के वैवाहिक जीवन में ऊ तीन लइका-लइकीन के बाप बनत बाड़न। गरीबी आ अभाव से उनकर पत्नी बूढ़ लेखा लागत बाड़ी। मथुरा प्रसाद आ शंकुतला के दांपत्य जीवन में अभावन के खटास नइखे। मथुरा प्रसाद के कवनों महत्त्वाकांक्षा नइखे। रघूनाथ बाबू के सिफारिश से ऊ शुगर फैक्ट्री में कांटा बाबू बहाल हो जात बाड़न। अपना सुभाव के खिलंदड़ापन आ नम्यता के चलते ऊ फैक्ट्री मैनेजर महेन्द्र चौधरी के काफी निकट पहुँच जात बाड़न। महेन्द्र चौधरी के विधवा बहिन सरिता के हिस्टरिया बेमारी के इलाज ओझा गुनी से करावत बाड़न। अपनहूँ झाड़-फूँक करत बाड़न। एकबार त सरिता मथुरा प्रसाद से वियाहो के प्रस्ताव रखली। बाकिर मथुरा प्रसाद शकुंतला के

www.bhojpurisahityangan.com

प्रति ईमानदार बाड़न। रेलवे में बड़ बेटा दिनेश के नौकरी खातिर मेहरारू के गहना बेंच के पचास हजार रोपया देत बाड़न। बाकिर पइसा ठग खा जाता। सहकर्मी लोग मैनेजर के साथे संबंध के ले के उनका प छींटाकशी करत बा, बाकिर ऊ विचलित नइखन होत।

उपन्यास में वियाह के कइगो प्रसंग बा। किसान के बेटा-बेटी के वियाह एगो भारी समस्या बा। ईर्ष्या-द्वेष वश आस-पास के लोग अगुआ के भड़कइबो करेला। बिन्देश्वरी प्रसाद आ मैनेजर महेन्द्र चौधरी के विधवा बहिन सरिता के वियाह के रोचक प्रसंग बा।

किसान आपस में जमीन के छोट टुकड़ा खातिर दू-दू तीन-तीन पीढ़ी तक कचहरी में मोकदमा लड़े में जमीन के कीमत से अधिका खरचा कऽ देला, आ मोकदमा शान के लड़ाई बनल रहेला, ओकर समग्र उन्नति के प्रभावित करेला। जनेसर प्रसाद दीवाना के मोकदमा के रोचक प्रसंग बा। मथुरो प्रसाद के एगो मोकदमा उनका बाबू जी के टाइम के रहे जवन ऊ पतोह मंजरी के व्यावहारिक सलाह से छोड़ दिहले।

उपन्यास में संयुक्त परिवार के विघटन आ निकटतम रिश्तेदारन द्वारा अपहरण आ जालसाजी के प्रसंग बा। अजमेरी साह के छव वर्षीय पोता के अहपरण उनकर दमादे करावत बाड़न।

किसान जब परंपरागत धंधा छोड़िके कवनो आधुनिक धंधा में किस्मत अजमाइस करत बा त ओकर आर्थिक प्रगति होता। मथुरा प्रसाद के छोटका बेटा कुशल प्रोपर्टी डिलर के काम से काफी धन कमाता, आपन मकान बनवावता आ समाज में एगो सम्मानजनक स्थान पावता। बाकिर शुगर फैक्ट्री के जीर्णोद्धार के पश्चात् फैक्ट्री के सेवा में आ जाता।

इ त कुल्हि मथुरा प्रसाद के पारिवारिक, सामाजिक जीवन से संबंधित कथा-प्रसंग हवे सन। मीरपुर शुगर फैक्ट्री के आठ सौ मजदूरन के नेता प्रेसिडेंट धरीछन राय, सचिव सिरीराम सिंह, जगदीश यादव, इस्लाम मियाँ वगैरह आ फैक्ट्री के नया मैनेजर जंग बहादुर सिंह के साथ मथुरा प्रसाद के जवन द्वंद्वात्मक संबंध रहे, ओकरा से उपजल तनाव रहे, ओकर चरचा अपेक्षित बा। मेहता शुगर फैक्ट्री के मैनेजर महेन्द्र चौधरी के निधन के बाद मैनेजर जंग बहादुर सिंह आवत बाड़न। इ फैक्ट्री से एक सइ अस्थायी मजूरन के नौकरी से हटा देत बाड़न। मजूरन के सामने भूखमरी के समस्या

www.bhojpurisahityangan.com

पैदा हो जाता। कुछ मजदूरन के एह दफ्तर से ओह दफ्तर में ट्रांसफरो करत बाड़न। यूनियन नेता क्लब मैदान में सभा कइल चाहत बाड़न त ऊ इजाजत नइखन देत। मजदूरन के वेतन भुगतान नियमित नइखे हो पावत। मजदूरन में एगो आक्रोश फैल जाता। यूनियन नेता के नारा से माँग समझल जा सकेला –

जंग बहादुर होश में आओ!
गरीबों के पेट पर लात मत मारो!
गली–गली में नारा है –
इंसाफ हमें प्यारा है।
दाल भात तरकारी की माँग है!

जंग बहादुर सिंह के अड़ियल रूख के चलते शुगर फैक्ट्री बंद हो जाता। चीनी गोदाम में आगि लाग जाता। आगि लगावत केहू केहू के देखले नइखे, बाकिर जंग बहादुर सिंह मथुरा प्रसाद से झूठा गवाही दिलवा के यूनियन के तीन नेतन के जेल भेजवा देत बाड़न। मथुरा प्रसाद अपना स्वार्थ में झूठा गवाही देत बाड़न; आक्रोश में मजदूर उनकर जबरदस्त पीटाई करत बाड़न। ऊ फेर कवनो काम लायक नइखन रहि पावत। उपन्यास के इ प्रसंग कथा तनाव के दृष्टि से चरमोत्कर्ष बा। बाकिर बीस बरिस शुगर फैक्ट्री बंद रहला के बाद जब फेर से ईस्टर्न शुगर कम्पनी के रूप में वजूद में आवत बा, त नया प्रबंधन ओकर शिलान्यास यूनियन के तत्कालीन प्रेसिडेंट धरीछन राय से करावता। काहें? लागत बा जइसे नयका प्रबंधन, जंग बहादुर सिंह के क्रूरता, अदूरदर्शिता, दमन आ अत्याचार खातिर फैक्ट्री के तत्कालीन कर्मचारियन से क्षमा माँगत होखे आ वोह गलती खातिर प्रायश्चित करत होखे।

जंग बहादुर सिंह (मैनेजर) के छल, कपट, तिकड़म के साक्ष्य उपन्यास के विवरण में उपलब्ध बा। एगो मजदूर इस्लाम मियाँ के घरे से नौ हजार रोपया चोरी चल गइल। उपन्यास के सोरहवाँ कलछुल में उल्लेख बा कि ''अपने सुनले होखब कि इस्लाम मियाँ के रोपया आखिर मिल गइल। ऊ नौ हजार उनकरे भगीना चोरा के मद्रास भाग गइल रहे।'' लेकिन एह चोरी के निजी प्रसंग में मैनेजर जंग बहादुर सिंह कतना इंटरेस्ट लेता, दरोगा के अपना चैंबर में बोलावता, यूनियन के सेकरेटरी सिरीराम सिंह के दरोगा अपमानित करत बा, गाली गलौज दे ता आ अंत में एगो दलाल सिपाही

www.bhojpurisahityangan.com

के मार्फत दू हजार रोपया लेके छोड़त बा। मैनेजर जंग बहादुर सिंह अतने प नइखन रूकत, ऊ इस्लाम मियाँ के बोलावत बाड़न। इस्लाम मियाँ कहत बाड़न कि ''उनकरा अइसन त फरिश्ता जन्नत में भी खोजले ना मिलिहें'' (पृष्ठ 108)।

धरीछन राय मैनेजर जंग बहादुर सिंह लगे गइले यूनियन के मीटिंग खातिर फैक्ट्री के क्लब मैदान एक घंटा खातिर माँगे। जंग बहादुर के अदूरदर्शिता, तानाशाही, असंयमित भाषा के नमूना एह पंक्तियन में देखल जा सकेला: ''देखो धरीछन! आँख खोलकर जरा ठीक से पहचान लो। इस वक्त जो आदमी तुम्हारे सामने बैठा है उसका भी नाम जंग बहादुर सिंह है। .....मैं मजदूर यूनियन की नस नस पहचानता हूँ। पचासों यूनियन नेताओं की कमर मैंने तोड़ दी है। ऐसी मारी कि उन नेताओं ने या तो लाठी थाम ली या फैक्ट्री छोड़ दी।'' (पृष्ठ 109) अइसन दंभ, अइसन अविवेक, अइसन क्रूरता संवेदनहीनता बा प्रबंधक के।

जंग बहादुर सिंह मीरपुर में हिंदू-मुसलमान दंगो भड़कावल चाहत बाड़न। कंपनी में हड़ताल खतम हो गइल। लागत बा कि चीनी गोदाम में आग जंग बहादुर सिंह लगवा दिहले। बाकिर मथुरा प्रसाद के ऊ झूठा गवाही देवे खातिर तइयार करत बाड़े -

''कुछ नहीं, केवल इतना ही बताना है कि चीनी गोदाम में आग लगाने वाले सीरीराम, जगदीश यादव और हरेन्दर हैं। इनको आग लगाते तुमने अपनी आँखो से देखा।'' (पृष्ठ 121)।

मथुरा प्रसाद के जवाब में सब सच्चाई छिपल बा -

''अरे बाप रे! एतना लमहर झूठ हमरा से ना घोंटाई सरकारो स्पष्ट बा कि मेहता शुगर फैक्ट्री जंग बहादुर सिंह के अकुशल प्रबंधन, दंभ, संवेदनहीनता, क्रूरता आ कपट के चलते बंद भइल बाकिर फैक्ट्री के अधिग्रहण के बाद नया प्रबंधन द्वारा शिलान्यास के अवसर पर भूतपूर्व प्रेसिडेंट धरीछन राय द्वारा व्यक्त उद्‌गार में सत्य के झलक नइखे। लागत बा कि ऊ नया प्रबंधन से कवनों स्वार्थ साधल चाहत बाड़न जवना चलते मजदूर विरोधी वक्तव्य देत बाड़न। ''बेकार के यूनियन बाजी कऽ के आपन छोट-छोट स्वार्थ खातिर फैक्ट्र बंद करा दीहल नीमन काम ना ह। हड़ताल से नोकसान जियादा आ फायदा कम होला'' (पृष्ठ 184)। ऊ

www.bhojpurisahityangan.com

खुद अपना यूनियन के खिलाफ बोलत बाड़न। ''एही फैक्ट्री के यूनियन के कुछ बददिमाग लोग चीनी गोदाम में आग लगा के लाखों के नुकसान करा दीहल'' (पृष्ठ 185)। जब धरीछन राय आग लगावे वाला बदमाशन के जानत रहलन त ओह घरी जब कानपुर से बी. प्रसाद इंक्वायरी करे आइल रहलन त ऊ काहें ना गवाही देलन? एही खातिर मैनेजर जंग बहादुर सिंह मथुरा प्रसाद के झूठा गवाही खातिर तइयार कइलन आ बदला में उनका बेटा कुशल के शुगर फैक्ट्री में नौकरी दीहलन। धरीछन राय के चरित्र में गिरावट आ अवसरवादिता बा।

उपन्यास के अंतिम अध्याय में कथावाचक के वक्तव्य से पाठक के पूर्णसहमति जरूरी नइखे। कथावाचक कथा के उपसंहार सुनावत बाड़नः ''अगर उद्योगपति लोग ना रहित त अबले इ दुनिया नरक बन गइल होईत। ओही लोग के त्याग तपस्या भा सूझ-बूझ से इ संसार सुंदर बनल जात बा'' (पृष्ठ 188)।

कल कारखाना में उत्पादन के एगो फैक्टर उद्योगपति बा। बाकिर कल कारखाना के स्थापना से ले के उत्पादन तक में वैज्ञानिक विकास, अधुनातन उपकरण, भूमि, पूँजी, सरकार आ मजदूर के भी बहुत बड़ योगदान बा। पूँजी जुटावे से सरकार आ जनता दूनों सहयोग करेली। उत्पादन खातिर मजदूर के अपरिहार्य भूमिका बा।

उपन्यास के शिल्प में नया प्रयोग बा। हिन्दी उपन्यास ''एक इंच मुस्कान'' के दू गो लेखक बाड़न राजेन्द्र यादव आ मन्नू भंडारी। ''दाल भात तरकारी'' में कथावाचक के भूमिका में उपन्यास के पात्र मथुरा प्रसाद, उनकर पत्नी शकुंतला, उनकर बेटा कुशल, पड़ोसी सहकर्मी नंदलाल आ स्वयं उपन्यासकार बानीं। उपन्यास में संस्मरण शैली के प्रयोग बा। संस्मरण में निबंध आ रिपोर्ताज के भी आस्वाद बा। मूल कथावस्तु के अलावे सैकड़न अवांतर घटना प्रसंग बा जवना से उपन्यास के कसावट ढीला भइल बा, कथा प्रवाह में रोकावट आवत बा। डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव के भोजपुरी भाषा पर बढ़िया अधिकार बा।

उपन्यासकार के ''दाल भात तरकारी'' पहिला भोजपुरी उपन्यास हऽ। भोजपुरी संसार के एकर स्वागत करे के चाहीं।

❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

जितेन्द्र कुमार

जन्म : 26 अक्टूबर, 1952 ई. को बिहार के भोजपुर जिला के छोटकी खड़ावँ गाँव में

शिक्षा : राम प्यारी उच्च विद्यालय सिकरहटा (भोजपुर, बिहार) पटना साईंस कॉलेज तथा बिहार विश्वविद्यालय

प्रकाशित कृतियाँ : (1) रात भर रोयी होगी धरती (कविता-पुस्तिका, 1997 ई.), (2) समय का चंद्रमा (कविता-संग्रह, 2009 ई.), (3) काले रंग के पक्ष में (कविता-संग्रह, 2015 ई.), (4) रजनीगंधा (हाइकु-स्रंगह, 2016 ई.), (5) क्षितिज से चंद्रमा उगेगा (कविता-संग्रह, 2023 ई.), (6) परिवेश (कहानी-संग्रह, 2011 ई.), (7) गुलाब के कांटे (भोजपुरी कहानी-संग्रह, 2011 ई.), (8) अग्निपक्षी (कहानी-संग्रह, 2021 ई.), (9) जिंदगी के रंग अनेक (डायरी, 2015 ई.), (10) मेरा शब्द संसार (समीक्षात्मक लेख-संग्रह, 2015 ई.), (11) कनक चंपा एवं अन्य कविताएँ (कविता-संग्रह, 2024), (12) उपन्यास समय और समाज (आलोचना- 2025), (13) शब्द वातायन (आलोचना 2025)

संपादन : (1) बिहार डाक संदेश (तीन वर्षों तक)

(2) आरोही रचनावली, भाग-1 और भाग-3

(3) क्षेत्रज्ञान

(4) 'जनपथ', 'इस बार' पत्रिका में संपादन-सहयोग

(5) संपादक : भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना (वर्तमान)

वार्ता : पटना रेडियो स्टेशन एवं दूरदर्शन से कविता एवं वार्ता प्रसारित

सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन एवं भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना का संपादन।

वर्तमान पता : पूर्व सहायक निदेशक, डाक सेवाएं, बिहार सर्किल, पटना

मदन जी का हाता, आरा - 802301, बिहार

मो. नं. 9113426600

ईमेल : jitendrakumarara46@gmail.com

New World Publication

ISBN 978-93-6407-528-2

₹225